विषयानुक्रमणिका

1.	परिचय	5-7
2.	उद्देश्य	7-8
3.	कार्यक्रम एवं गतिविधियां	8-9
4.	मण्डल, समिति एवं अधिकारी	9-10
5.	कुलपति	10-11
6.	कुलसचिव	11
7.	वित्ताधिकारी	11
8.	परीक्षा नियंत्रक	11
9.	छात्र कल्याण संकाय	11-12
10.	संकाय प्रमुख (शैक्षणिक)	12
11.	कुलानुशासक	12
12.	मुख्य सतर्कता अधिकारी	12
13.	सङ्काय एवं विभाग	12-42
	वेद-वेदाङ्ग-सङ्काय	
	साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय	
	दर्शन सङ्काय	
	आधुनिक विद्या संकाय	
	शिक्षाशास्त्र संकाय	
14.	प्रकाशन	43-48
15.	विभिन्न संगोष्ठियाँ एवं स्मारक व्याख्यानमाला	48-49
16.	अध्ययन पाठ्यक्रम	49-50
17.	छात्रवृत्ति	51
18.	परीक्षा-विभाग	51-52
19.	अन्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ	52-58
20.	शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पद	58
21.	आरक्षण एवं अन्य प्रावधान	58-60
22.	आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ	61
23.	कैरियर काउंसलिंग सेल	62
24.	महिला अध्ययन केन्द्र	62-63
25.	संगणक केन्द्र	63-65
26.	जन-सूचना अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्राधिकृत अधिकारी	65-68
27.	आधार-संरचना एवं भवन	68-73
28.	परिषदें, समितियाँ एवं विद्यापीठीय कर्मचारी	73-77
29.	अनुलग्नक-1	78-82
30.	वार्षिक लेखा 2019-20	83- —

विद्यापीठ की प्रायोजक सोसाइटी का संचालक मंडल (शासी निकाय)

क्र.स.	नाम व पता
1	माननीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
2	माननीय राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
3	माननीय राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
4	सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली
5	संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली
6	कुलपति श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कत विद्यापीठ, बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016
7	कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति (आंध्र प्रदेश)
8	कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान 56-57, सांस्थानिक क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली
9	संयुक्त सचिव (केन्द्रीय विश्वविद्यालय और भाषा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली

कार्य परिषद के सदस्यों की सूची

क्रम सं०	नाम एवं पता	पदनाम
1	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	अध्यक्ष
2	श्री संजय कुमार सिन्हा संयुक्त सचिव (भाषा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
3	संयुक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
4	प्रो. डी.पी.एस. वर्मा 285, बी. चित्रकूट क्यू. यू. ब्लाक पीतम पुरा दिल्ली-110034	सदस्य
5	प्रो. अरविन्द कुमार जोशी आचार्य-समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005	सदस्य
6	प्रो. पतंजलि मिश्र वेद विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005	सदस्य
7	प्रो. कपिल कुमार, प्रोफेसर-इतिहास स्कूल-सामाजिक विज्ञान, ब्लॉक-एफ, इग्नू, नई दिल्ली-110068	सदस्य
8	प्रो. के. भारत भूषण, प्रोफेसर एवं शिक्षाशास्त्र-संकाय प्रमुख, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली	सदस्य
9	प्रो. हरिहर त्रिवेदी प्रोफेसर-पौरोहित्य, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली	सदस्य

10	प्रो. केदार प्रसाद परोहा प्रोफेसर एवं आधुनिक विद्या-संकायप्रमुख श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली	सदस्य
11	डॉ. सुशील कुमार सह-आचार्य (ज्योतिष) श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली	सदस्य
12	डॉ. मनोज कुमार मीणा सहायक प्रोफेसर (शारीरिक शिक्षा) श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली	सदस्य
13	डॉ. अलका राय कुलसचिव (प्रभारी) श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सचिव

अधिकारी गण

1. कुलाधिपति - डॉ. हरि गौतम
2. कुलपति - प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
3. कुलसचिव - डॉ. अलका राय (कार्यवाहक)
4. वित्ताधिकारी - डॉ. अलका राय
5. परीक्षा नियंत्रक - डॉ. एन. पी. सिंह
6. संकाय प्रमुख - प्रो. के. भारत भूषण, शिक्षाशास्त्र संकाय
   प्रो. प्रेम कुमार शर्मा, वेद-वेदांग संकाय
   प्रो. हरेराम त्रिपाठी, दर्शन संकाय
   प्रो. जय कुमार एन. उपाध्ये, साहित्य एवं संस्कृति संकाय
   प्रो. केदार प्रसाद परोहा, आधुनिक विद्या संकाय
   प्रो. भागिरथि नंद, शैक्षणिक
7. छात्र कल्याण संकाय - प्रो. कमला भारद्वाज
8. कुलानुशासक एवं निदेशक, आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ - प्रो. बिहारी लाल शर्मा

परिचय

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन में लिए गए निर्णय के अनुपालन में 8 अक्तूबर, 1962 को विजयदशमी के दिन दिल्ली में संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की गई। डॉ. मण्डन मिश्र को विद्यापीठ का विशेष कार्याधिकारी एवं निदेशक नियुक्त किया गया। सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार अखिल भारतीय संस्कृत विद्यापीठ नाम से एक पृथक् संस्था स्थापित की गई। इसके संस्थापक अध्यक्ष तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे। विद्यापीठ के सर्वाङ्गीण विकास में तत्कालीन प्रधानमंत्री की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने संस्कृत विद्यापीठ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्था के रूप में विकसित होने की कामना की थी।

माननीय शास्त्री जी के आकस्मिक निधन के पश्चात् तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विद्यापीठ की अध्यक्षता स्वीकार की । उन्होंने घोषणा की कि 2 अक्तूबर, 1966 से विद्यापीठ को श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के नाम से जाना जाएगा। भारत सरकार द्वारा 01 अप्रैल, 1967 को विद्यापीठ का अधिग्रहण किया गया। 21 दिसम्बर, 1970 को श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली (एक पंजीकृत स्वायत्त संस्था, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) का अंग बन गया।

विद्यापीठ में संस्कृत वाङ्मय के पठन-पाठन, प्राचीन संस्कृत पाण्डुलिपि के संकलन एवं प्रकाशन, संस्कृत साहित्य की परम्परागत शिक्षण विधा को बनाए रखने और अनुसन्धान आदि कार्यों तथा इसके सर्वतोन्मुखी विकास से प्रभावित होकर मार्च, 1983 में भारत सरकार ने इसको मानित-विश्वविद्यालय का स्तर देने का प्रस्ताव रखा। अन्ततः आवश्यक परीक्षण एवं मूल्याङ्कन के पश्चात् भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संस्तुति को दृष्टि में रखत हुए नवम्बर, 1987 में विद्यापीठ को मानित-विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान किया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संस्तुति पर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से पृथक् एक संस्था श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के नाम से तत्कालीन मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री पी.वी. नरसिंह राव की अध्यक्षता में 20 जनवरी, 1987 को पञ्जीकृत की गयी । डॉ. मण्डन मिश्र 1989 में विद्यापीठ के प्रथम कुलपति नियुक्त हुए। विद्यापीठ ने 01 नवम्बर, 1991 से मानित-विश्वविद्यालय के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया।

विद्यापीठ में पाँच संकाय हैं- वेद-वेदाङ्ग सङ्काय, दर्शन सङ्काय, साहित्य-संस्कृति सङ्काय, शिक्षाशास्त्र सङ्काय एवं आधुनिक विद्या सङ्काय। प्रारम्भ के चार सङ्कायों में विभिन्न शास्त्रीय विषयों में शास्त्री (सम्मानित) नामक उपाधि हेतु त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम एवं स्नातकोत्तर उपाधि हेतु आचार्य नामक द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गई है। शिक्षाशास्त्र सङ्काय में शिक्षा-शास्त्री नामक द्विवर्षीय अध्यापक-प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम तथा शिक्षाशास्त्र में उच्च-स्तरीय अध्ययन हेतु शिक्षाचार्य नामक द्विवर्षीय पाठ्यक्रम का प्रवर्तन किया गया है। उपर्युक्त पाँच सङ्कायों में संस्कृत की विभिन्न शास्त्रीय शाखाओं एवं शिक्षाशास्त्र में शोधकार्य करने हेतु विशिष्टाचार्य, विद्यावारिधि एवं विद्यावाचस्पति पाठ्यक्रम की व्यवस्था है।

विद्यापीठ में संस्कृत शोध, पाण्डुलिपियों के प्रकाशन एवं संरक्षण के लिए एक स्वतन्त्र विभाग है। इस विभाग द्वारा न केवल प्राचीन पाण्डुलिपियों का अन्वेषण किया जाता है, अपितु संस्कृत-साहित्य के विद्वानों की उत्कृष्ट रचनाओं का प्रकाशन भी किया जाता है। साथ ही त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'शोध-प्रभा' का प्रकाशन भी किया जाता है। विभागीय स्तर पर ज्योतिष विभाग द्वारा 'विद्यापीठ-पंचांग' और 'भैषज्य-ज्योतिषम्' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। वास्तुशास्त्र विभाग द्वारा प्रतिवर्ष वास्तु शास्त्र विमर्श नामक शोध पत्रिका प्रकाशित की जाती है। विद्यापीठ में संगणक केन्द्र और महिला अध्ययन केन्द्र स्थापित किया गया है। महिला अध्ययन केन्द्र द्वारा शोधपत्रिका "सुमंगली" का प्रकाशन किया जाता है।

विद्यापोठ में 1994-95 के सत्र से व्यावसायिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम एवं योग, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, दर्शन, संस्कृत पत्रकारिता एवं संगणक प्रयोग सम्बन्धी स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम को नियमित रूप से अध्ययन-अध्यापन में सम्मिलित किया गया है। विद्यापीठ के वर्तमान कुलाधिपति डॉ. हरि गौतम और कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय के कुशल नेतृत्व और प्रशासनिक दक्षता से शैक्षणिक क्षेत्र मं विद्यापीठ निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर है।

संस्कृत विद्यापीठ द्वारा अपने निर्धारित उद्दश्यों को दृष्टि में रखते हुए विशेष दीक्षान्त समारोह 3 दिसम्बर, 1993 को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया । इस समारोह में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शङ्कर दयाल शर्मा को विद्यापीठ की मानद उपाधि 'वाचस्पति' प्रदान की गयी । विद्यापीठ का प्रथम दीक्षान्त समारोह 15 फरवरी, 1994 को विद्यापीठ परिसर में सम्पन्न हुआ, जिसमें राष्ट्रपति डॉ. शङ्कर दयाल शर्मा ने प्रथम दीक्षान्त भाषण दिया। विद्यापीठ का द्वितीय दीक्षान्त समारोह 11 जनवरी, 1996, तृतीय दीक्षान्त समारोह 11 जनवरी, 1999, चतुर्थ दीक्षान्त समारोह 11 फरवरी, 2000, पञ्चम दीक्षान्त समारोह 28 फरवरी, 2001, षष्ठ दीक्षान्त समारोह 17 फरवरी, 2002, सप्तम दीक्षान्त समारोह 11 नवम्बर, 2003, अष्टम दीक्षान्त समारोह 12 नवम्बर, 2005, नवम दीक्षान्त समारोह 10 नवम्बर, 2006, दशम दीक्षान्त समारोह 28 नवम्बर, 2007, एकादश दीक्षान्त समारोह 06 दिसम्बर, 2008, द्वादश दीक्षान्त समारोह 7 नवम्बर, 2009, त्रयोदश दीक्षान्त समारोह दिनांक 26 नवम्बर, 2010 चतुर्दश दीक्षान्त समारोह 7 जनवरी, 2013, पंद्रहवां दीक्षान्त समारोह 27 नवम्बर, 2015, सोलहवॉ दीक्षान्त समारोह दिनांक 9 जनवरी, 2017 तथा सत्रहवां दीक्षान्त समारोह 21 अप्रैल, 2018 को सम्पन्न हुआ जिसमें भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविन्द मुख्य अतिथि थे।

विद्यापीठ को अगले 5 वर्षों के लिए नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदान किया गया। विद्यापीठ के कामकाज की समीक्षा करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया। प्रो. अर्कनाथ चौधरी की अध्यक्षता में पाँच सदस्यों की समीक्षा समिति ने 9 अगस्त से 11 अगस्त 2016 तक श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ का दौरा किया। समीक्षा समिति ने विद्यापीठ के शैक्षिक कार्य और अन्य गतिविधियों का निरीक्षण किया और रिपोर्ट प्रस्तुत की। समीक्षा समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुमोदित किया गया है।

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ शास्त्रीय पारम्परिक विषयों के अध्ययनाध्यापन एवं गहन अनुसन्धान के द्वारा भारतीय शैक्षणिक परम्परा का संरक्षण करत हुए आज के इस संगणक युग में आधुनिक वैज्ञानिक शैक्षणिक परम्पराओं से समन्वय स्थापित करने का सार्थक प्रयास कर रहा है। संस्कृत स्नातकों को राजगारपरक शिक्षण प्रदान करते हुए संस्कृत के कुशल शिक्षकों के निर्माण में शिक्षाशास्त्र विभाग के माध्यम से सतत प्रयत्नशील है । फलस्वरूप विद्यापीठ के छात्र एवं अनुसन्धाता देश एवं विदेश की प्रतिष्ठित संस्थाओं में अपनी प्रतिभा और कौशल के साथ कार्यरत हैं ।

२. उद्देश्य

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली की स्थापना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

(क) शास्त्रोय परम्परा को संरक्षित करना ।

(ख) शास्त्रों की व्याख्या करना ।

(ग) आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समस्याओं के समाधान के लिए संस्कृत भाषा में विरचित प्राचीन शास्त्रों का औचित्य स्थापित करना ।

(घ) अध्यापकों के लिए आधुनिक एवं शास्त्रीय ज्ञान में गहन प्रशिक्षण हेतु साधन उपलब्ध कराना।

(ङ) उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में प्रवीणता प्राप्त करना, जिससे विद्यापीठ का अपना एक विशिष्ट चरित्र हो।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करते हुए विद्यापीठ अधोनिर्दिष्ट क्षेत्रों में निरन्तर कार्य कर रहा है:-

1. पारम्परिक संस्कृत वाङ्मय के साथ-साथ उसके अतिविशिष्ट शाखाओं के ज्ञान हेतु शिक्षण सुनिश्चित करना ।
2. संस्कृत के अध्यापकों के प्रशिक्षणार्थ साधनों का सुलभोकरण और संस्कृत शिक्षा से सम्बद्ध प्रासङ्गिक पक्षों पर शोध ।
3. संस्कृत अध्यापन से सम्बन्धित एशिया की विभिन्न भाषाओं एवं साहित्य के गहन अध्ययन एवं गवेषणार्थ सुविधाओं का सुलभीकरण, जिनमें पाली, इरानी, तिब्बती, मंगोली, चीनी, जापानी आदि भाषाएं एवं साहित्य प्रमुख हैं ।
4. अध्ययन-अध्यापन हेतु विभिन्न विषयों के लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण, भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर विशेष ध्यान रखना तथा संस्कृत और संबद्ध विषयों में परीक्षाओं का सञ्चालन ।
5. संस्कृत के मौलिक ग्रन्थों, टीकाओं का अनुवाद। उनसे सम्बद्ध साहित्य का प्रकाशन, प्रकाशित एवं अप्रकाशित सामग्री का संवर्धन ।

6. शोध-पत्रिका एवं शोधोपयोगी अनुसन्धान-प्रपत्रों, विषय सूची और ग्रन्थ-सूची आदि का प्रकाशन ।
7. पाण्डुलिपियों का सङ्कलन, संरक्षण एवं प्रकाशन, राष्ट्रिय संस्कृत पुस्तकालय और संग्रहालय का निर्माण। संस्कृत पाण्ड्लिपियों में प्रयुक्त लिपियों के प्रशिक्षण का प्रबन्धन ।
8. संस्कृत में आधुनिक तकनीकी साहित्य के साथ मौलिक संस्कृत ग्रन्थों के सार्थक निर्वचनों की दृष्टि से आधुनिक विषयों में शिक्षणार्थ साधनों की प्रस्तुति ।
9. पारस्परिक ज्ञानवर्धन के लिए आधुनिक एवं परम्परागत विद्वानों के मध्य अन्त:क्रिया का संवर्धन ।
10. शास्त्र-परिषदों, सङ्गोष्ठियों, सम्मेलनों और कायशालाओं का आयोजन ।
11. अन्य शिक्षण संस्थानों की उपाधियों, प्रमाण-पत्रीय पाठ्यक्रमों को विद्यापीठ की उपाधियों के समकक्ष मान्यता ।
12. विभागों एवं सङ्कायों की स्थापना और विद्यापीठ के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक मण्डलों एवं समितियां का गठन ।
13. स्वीकृत नियमों के अन्तर्गत छात्रवृत्तियों, अध्येतावृत्तियों, पुरस्कारों, पदकों का संस्थापन एवं वितरण।
14. विद्यापीठ के उद्देश्यों से पूरी तरह या अंशत: समान उद्देश्य वाले सङ्गठनों, समितियों या संस्थानों का सहयोग एवं उनकी सदस्यता तथा उनमें सहभागिता ।
15. विद्यापीठ के किसी एक या समस्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रासङ्गिक, आवश्यक या सहायक कार्य-कलापों का सम्पादन ।

३. कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

विद्यापीठ के संस्थापित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अधोदर्शित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का सञ्चालन किया जा रहा है-

1. स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध स्तर पर परम्परागत शैक्षणिक प्रविधियों के साथ-साथ आधुनिक पद्धतियों से संस्कृत वाङ्मय का अध्यापन ।
2. स्नातक, स्नातकोत्तर, विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि स्तर पर छात्राध्यापकों का प्रशिक्षण ।
3. ज्योतिष, वास्तु, पौरोहित्य, संगणक, योग आदि में प्रमाणपत्र, डिप्लोमा एवं अंशकालिक पाठ्यक्रमों का सञ्चालन ।
4. स्नातक, स्नातकोत्तर आदि उच्च शैक्षणिक स्तर की परीक्षाओं का सञ्चालन ।
5. समान-हित वाली संस्कृत योजनाओं में अन्य सङ्गठनों के साथ सहयोग ।
6. संस्कृत वाङ्मय पुस्तकालय का सम्वर्द्धन ।

7. पाण्डुलिपि संग्रह, दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का सम्पादन एवं प्रकाशन ।
8. शोधपत्रिका 'शोधप्रभा' एवं 'वास्तुशास्त्रविमर्श', 'भैषज्य ज्योतिषम्', 'सुमंगली' तथा 'पञ्चाङ्ग' का नियमित वार्षिक प्रकाशन ।
9. विविध व्याख्यानमालाओं, कार्यशालाओं, सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों का आयोजन ।
10. वास्तुशास्त्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का सञ्चालन ।
11. स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत स्वच्छता कार्यक्रम, एन.सी.सी., एन.एस.एस., क्रीड़ा एवं खेल-कूद आदि अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियों का सञ्चालन ।
12. विभिन्न साहित्यिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन ।

४. मण्डल, समिति एवं अधिकारी

1. प्रबन्ध मण्डल
2. वित्त-समिति
3. विद्वत्परिषद्
4. योजना एवं पर्यवेक्षण मण्डल
5. अध्ययन-मण्डल

समिति

1. शोध समिति
2. परीक्षा समिति
3. विभागीय शोध समीक्षा एवं सलाहकार समिति
4. शैक्षणिक कैलेण्डर समिति
5. बिल्डिंग समिति
6. प्रवेश समिति
7. नीति एवं योजना समिति
8. छात्रावास-समिति
9. विद्यापीठ परिसर विकास-समिति
10. छात्रवृत्ति समिति
11. शोध एवं प्रकाशन-परामर्शदात्री-समिति
12. शोधप्रभा सम्पादक-समिति
13. पुस्तकालय-समिति
14. कुलानुशासन समिति
15. परिचय-नियमावली-समिति
16. हिन्दी राजभाषा कार्यान्वयन-समिति
17. रोस्टर समिति
18. शिकायत समिति
19. अनुशासन समिति
20. शोधोपाधि समिति
21. आन्तरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ समिति

अधिकारी गण

1. कुलाधिपति
2. कुलपति
3. संकाय प्रमुख
4. छात्र कल्याण संकाय प्रमुख
5. कुलसचिव
6. वित्ताधिकारी
7. परीक्षा-नियंत्रक
8. विभागाध्यक्ष
9. कुलानुशासक
10. छात्रावास-अधिष्ठाता
11. मुख्य सतर्कता अधिकारी
12. निदेशक, आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ
13. उप-कुलसचिव
14. सहायक-कुलसचिव

५. कुलपति

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) के वर्तमान कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय हैं । मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आदेश के द्वारा श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के कुलपति पद पर प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय को नियमित कुलपति के रूप में अगले पाँच वर्षों के लिए नियुक्त किया गया । तद्नुसार प्रो. पाण्डेय द्वारा दिनांक 28.08.2015 को नियमित कुलपति पद का कार्यभार ग्रहण किया ।

कुलपति के कुशल नेतृत्व में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति द्वारा विद्यापीठ को मानित विश्वविद्यालय स्तर की कार्य पद्धति की सफलतापूर्वक समीक्षा पूर्ण की गई। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार विकल्पाधारित क्रेडिट प्रणाली को क्रियान्वित करते हुए समस्त पाठ्यक्रमों में संशोधन किया गया और तद्नुसार कक्षाओं का संचालन किया गया । शैक्षणिक कैलेण्डर के अनुसार सत्रीय परीक्षाएं आयोजित की गयीं तथा परीक्षा परिणाम शीघ्रतापूर्वक प्रकाशित किए गए ।

विद्वत्परिषद् और प्रबन्ध मण्डल की बैठकें आहूत कर नीति निर्धारण की दिशा में सक्रिय प्रयास किए गए । कई वर्षों से अध्यापकों की प्रोन्नति के लम्बित मामलों के संबंध में प्रो. पाण्डेय के कुशल नेतृत्व में परीक्षण समितियों एवं चयन समितियों का आयोजन किया गया । उनके कुशल नेतृत्व और प्रशासनिक दक्षता से शैक्षणिक क्षेत्र में विद्यापीठ निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर है। प्रो. पाण्डेय प्रसिद्ध शिक्षाविद् के रूप में इस

विद्यापीठ के लिए ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण देश में संस्कृत-भाषा-साहित्य के प्रचार-प्रसार और शास्त्रीय विधा के उन्नयन के लिए समर्पित हैं।

माननीय कुलपति के मार्गदर्शन और निरीक्षण में विद्यापीठ ने शैक्षणिक वर्ष 2018-19 के दौरान योग में नए स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू किए।

विद्यापीठ ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत एक शिक्षण अध्ययन केन्द्र PMMMNMTT की स्थापना की है जो संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे शिक्षकों को प्रौद्योगिकी से जोड़ रहा है।

६. कुलसचिव

वित्ताधिकारी डॉ. अलका राय द्वारा कुलसचिव का अतिरिक्त कार्यभार दिनांक 01/01/2018 से देखा जा रहा है।

७. वित्ताधिकारी

दिनांक 27.11.2017 को डॉ. अलका राय द्वारा विद्यापीठ में वित्ताधिकारी का पद ग्रहण किया। इससे पूर्व ''नेताजी सुभाष इन्स्टिटूट ऑफ टेक्नालॉजी'' में उप-कुलसचिव पद पर कार्यरत थीं। विद्यापीठ के योजना एवं

गैर-योजना संबंधी समस्त आवश्यक व्यय एवं अनुदान के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय से निरंतर सम्पर्क बनाए रखकर उन्होंने वित्तीय प्रबंधन में योगदान दिया है ।

८. परीक्षा नियंत्रक

डॉ. एन.पी.सिंह द्वारा दिनांक 31.12.2017 को विद्यापीठ में परीक्षा नियंत्रक का कार्यभार ग्रहण किया। इससे पूर्व डॉ. एन.पी.सिंह इन्दिरा गाँधी राष्ट्रिय मुक्त विश्वविद्यालय में कुलसचिव (मूल्यांकन) के पद पर कार्यरत थे। इनके द्वारा किए गए प्रयासों से परीक्षा विभाग एवं शैक्षणिक विभाग से संबंधित क्रियाकलापों को समृद्ध करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे ह। सभी कार्य समयानुसार पूर्ण कर छात्रों की समस्याओं का निदान करने की यथा सम्भव कोशिश की जा रही है।

९. छात्र कल्याण संकाय

प्रो. कमला भारद्वाज, विभागाध्यक्ष, व्याकरण विभाग को विद्यापीठ का छात्र कल्याण संकाय प्रमुख नियुक्त किया गया है। प्रो. भारद्वाज व्याकरण विषय की आचार्या ह तथा उन्हें कई शैक्षणिक संस्थानों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राज्य सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य में योगदान के लिए सम्मानित किया जा चुका है।

शैक्षणिक सत्र 2019-20 में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्टिय संस्कृत विद्यापीठ की छात्र-कल्याण संकायाध्यक्षा प्रो. कमला भारद्वाज के मार्ग निर्देशन में छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए बहुविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रो. भारद्वाज द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के निर्देशों का अनुपालन करते हुए विविध शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। विद्यापीठीय स्तर पर सद्भावना मार्च, अन्तर्राष्ट्रीय छात्र दिवस, सृजनात्मक लेखन, संस्कृत गान, वाद-विवाद, आशु भाषण आदि शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में छात्रों ने सोत्साह भाग लिया तथा अपनी बहुविध

प्रतिभा का परिचय दिया। राष्ट्रिय स्तर पर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की शलाका प्रतियोगिताओं के लिए राज्य-स्तरीय प्रतियोगियों के चयन का दायित्व भी छात्र कल्याण संकाय ने वहन किया। छात्रों को शास्त्र-संरक्षण के साथ-साथ व्यावहारिकता का प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु छात्र-संसद एवं सुशासन दिवस सदृश व्यावहारिक विषयों से सम्बद्ध आयोजन भी किए गए। समस्त सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में संस्कृत एवं अन्यान्य मातृभाषाओं के सम्बन्ध का माहात्म्य प्रतिपादित करने के लिए अन्तर्राष्टोय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में मातृभाषा गायन, संस्कृत का मातृभाषा में अनुवाद, निबन्ध लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन

किया गया। छात्रों को समस्याओं को सुनना, सामान्य शिष्टाचार एवं व्यवहार को सुधारना तथा छात्रों के पारस्परिक संबंधों में सांस्कारिक परिष्कार करना संकाय का विशिष्ट दायित्व है, इस दिशा में संकाय का सतत प्रयास रहा है कि छात्रों में शैक्षणिक व सांस्कृतिक शिक्षण के साथ-साथ शास्त्र व संस्कृति संरक्षण की प्रवृत्ति का भी विकास हो।

१०. संकाय प्रमुख (शैक्षणिक)

शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारू संचालन हेतु प्रो. भागिरथि नंद, प्रोफेसर (साहित्य) को विद्यापीठ का शैक्षणिक संकाय प्रमुख नियुक्त किया गया है।

११. कुलानुशासक

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी, निदेशक-आई.क्यू.ए.सी., विभागाध्यक्ष-वास्तुशास्त्र एवं कुलानुशासक को उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड के कुलपति के रूप में फरवरी, 2019 में नियुक्त किया गया। प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी के स्थान पर प्रो. बिहारी लाल शर्मा, निदेशक-आई.क्यू.ए.सी. को दिनांक 27.02.2019 से कुलानुशासक नियुक्त किया गया। प्रो. शमा के कुशल नेतृत्व में विद्यापीठ परिसर का संरक्षण, सुरक्षा व्यवस्था एवं छात्र अनुशासन इत्यादि सुनिश्चित किया जाता है।

१२. मुख्य सतर्कता अधिकारी

प्रो. रचना वर्मा मोहन, प्रोफेसर-शिक्षाशास्त्र को मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया है। वे हमेशा छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों को नैतिक मूल्यों स अवगत कराने के लिए काम करती ह।

१३. सङ्काय एवं विभाग

विद्यापीठ में पाँच संकाय तथा बीस विभाग ह। वेद-वेदांग संकाय की अध्यक्षता प्रो. प्रेम कुमार शर्मा, दर्शन संकाय की अध्यक्षता, प्रो. हरेराम त्रिपाठी, साहित्य एवं संस्कृति संकाय की अध्यक्षता प्रो. जय कुमार एन. उपाध्ये एवं आधुनिक विद्या संकाय की अध्यक्षता प्रो. केदार प्रसाद परोहा द्वारा को जा रही है। इन चार संकायों की स्थापना शास्त्र का अध्ययन-अध्यापन और विश्लेषणात्मक ज्ञान प्रदान करने के लिए की गई हैं। शिक्षाशास्त्र संकाय की स्थापना संस्कृत शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए को गई है। शिक्षाशास्त्र संकाय के अध्यक्ष प्रो. के. भारत भूषण ह।

इन संकायों के अंतर्गत 20 विभागों द्वारा पारंपरिक शास्त्रीय विषयों में उच्च-स्तर अध्ययन-अध्यापन किया जाता ह । ये सभी विभाग वैदिक शास्त्र विषयों से संबंधित ह जा कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत और पारम्परिक

ज्ञान के समृद्ध स्रोत हं। इन विभागों द्वारा उच्च शास्त्रीय ज्ञान के विभिन्न पारम्परिक एवं आधुनिक विषयों की उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है।

I
वेद-वेदाङ्ग-सङ्काय
वेद-पौरोहित्य विभाग

वेद विश्व का सबसे प्राचीन एवं ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। समस्त मानव जाति के सर्वाङ्गीण, सार्वकालिक विकास और समद्धि के लिए वेद मार्गदर्शक हैं। विश्व की संरचना, सम्पोषण एवं प्रगति के सभी विधानों का वर्णन वेदों में निहित है। शोषणरहित और समतामूलक समाज की स्थापना का मार्गदर्शन वेद करता है। मानव समाज में प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर जीवन को गतिशील बनाने की शैली वेदों की देन है। वस्तुतः वेद जीवन दर्शन हैं। सनातन धर्मावलम्बी वेदों का ही अनुगमन करते हं । वेद अपौरुषेय और अमर हैं । वेद मानव चरित्र को समुज्ज्वल बनाकर मानव में देवत्व की स्थापना करत हं। आधनिक युग में वेदाध्ययन की उपयोगिता बहुत अधिक है।

प्राचीन काल से ही मनुष्यों के लिए इहलौकिक तथा पारलौकिक मनोरथों की पूर्ति का साधन श्रौतयाग एवं स्मार्तयाग माना गया ह । श्रौतयागों का आधार संहिताओं के मन्त्र हैं, किन्तु केवल मन्त्रों की जानकारी मात्र से ही कोई याग सम्पन्न नहीं हो सकता, इसके लिए अनुष्ठान की पद्धति का भी पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है । पौरोहित्य-विभाग में छात्रों को अनुष्ठान पद्धति का पूर्ण ज्ञान एवं विविध कर्मकाण्डों से सम्बन्धित अनुष्ठानों की प्रक्रिया के सूक्ष्मतम परिचय के साथ अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है। कर्मकाण्ड के अध्ययन तथा यज्ञ-अनुष्ठान से समस्त जन का कल्याण होता है । ईश्वर की आराधना, साधना, सस्वरपाठ, रुद्राष्टाध्यायी, कुण्डमण्डपनिर्माण, व्रत, संस्कार, प्रतिष्ठा, शान्ति, मुहूत्त, अनुष्ठानादि की जानकारी के लिए यह विषय अत्यन्त ज्ञानपद है । पौरोहित्य से आस्तिक जन सम्पूर्ण मनोभिलषित प्रकार की कामनाओं की पूर्ति कर सकते हैं। यह विभाग भारतीय परम्परा से परिपूर्ण सामाजिक गतिविधियों तथा रीति-रिवाजों को सफल एवं शास्त्र-सम्मत बनाने में छात्रों को योग्य बनाता है, साथ ही साथ उन्हें आचार, व्यवहार व शिष्टाचार के सनातन तथ्यों से परिचित कराता है।

विभागीय आचार्य (वेद)

1.	प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. रामानुज उपाध्याय	आचार्य
3.	डॉ. देवेन्द्र प्रसाद मिश्र	सह आचार्य
4.	डॉ. सुन्दर नारायण झा	सह आचार्य
5.	डॉ. हनुमान मिश्र	सह आचार्य

वेद विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज.जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	6	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	7	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	3	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	5	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	3	-
आचार्य प्रथम वर्ष	-	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	4	-
विशिष्टाचार्य	1	3	1	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	3	3
विद्यावारिधि	8	3	2	1	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	11	4
कुल योग	24	6	4	1	-	-	-	-	6	-	-	-	-	-	34	7

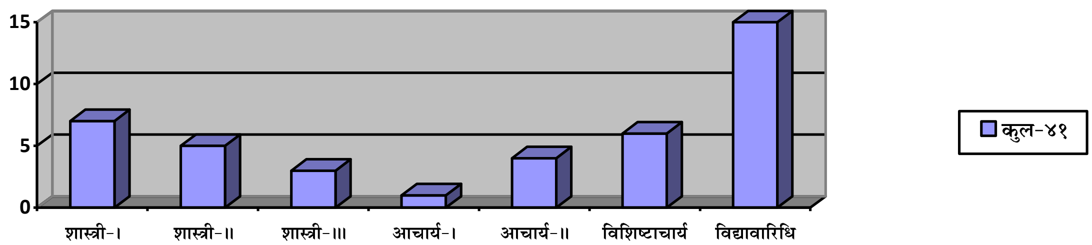

विभागीय आचार्य (पौरोहित्य)

1. प्रो. रामराज उपाध्याय — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. हरिहर त्रिवेदी — आचार्य
3. प्रो. वृन्दावन दाश — आचार्य

पौरोहित्य विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज.जा		विकलांग		पिछडा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु,	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	4	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	5	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	5	-
आचार्य प्रथम वर्ष	6	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	6	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	2	-
विशिष्टाचार्य	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
विद्यावारिधि	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
कुल योग	18	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	19	-

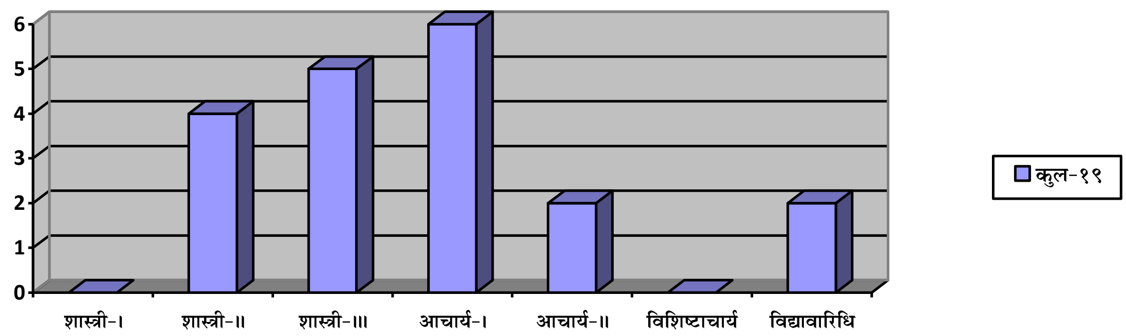

धर्मशास्त्र-विभाग

ऋषियों द्वारा धार्मिक आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्त, भक्ति, इष्टपूर्त्ति, नैतिकमूल्यबोध, सामाजिक तथा वैयक्तिक कर्त्तव्या कर्त्तव्य की व्यवस्था हेतु धर्मशास्त्र का प्रणयन किया गया है । वेदविहित कर्मों के आनुपूर्व्य से कल्पनाशास्त्र रूपक कल्प का यह अङ्गभूत है । इस शास्त्र में मनु, याज्ञवल्क्य, पाराशर, पारस्कर, गौतम, नारद, बृहस्पति, बौधायन, जीमूतवाहन, विज्ञानेश्वर, माधवाचार्य, कौटिल्य-प्रभृति सूत्र, स्मृति, भाष्य, तात्कालिक निबन्धात्मक प्राचीनग्रन्थों के अध्ययन के साथ ज्वलन्त युगोपयोगी एवं आधुनिकता के साथ सामञ्जस्य रखने वाले विषयों जैसे स्त्री-अधिकार, हिन्दविधि, संस्कार, नैतिकशिक्षा, पर्यावरण, मानवाधिकार, राजधर्म, दण्ड, अपराध प्रभृतिय पर अध्ययन-अध्यापन किया जाता है, जिससे सामाजिक विधि-व्यवस्थाओं के उन्नत दर्शनों का अध्ययन और मानवीय मूल्यों के प्रणयन के साथ-साथ आत्मिक विकास होता है ।

विभागीय आचार्य

1. प्रो. सुधांशु भूषण पण्डा — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. यशवीर सिंह — आचार्य
3. डॉ. हिमांशु शेखर त्रिपाठी — सहायक आचार्य
4. डॉ मीनाक्षी मिश्रा — सहायक आचार्य

पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज.जा		विकलांग		पिछडा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य प्रथम वर्ष	-	1	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	2
आचार्य द्वितीय वर्ष	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1
विशिष्टाचार्य	1	2	1	-	-	1	-	-	-	1	1	-	-	-	3	4
विद्यावारिधि	3	2	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	4	2
कुल योग	7	6	2	-	-	1	-	-	1	2	1	-	-	-	11	9

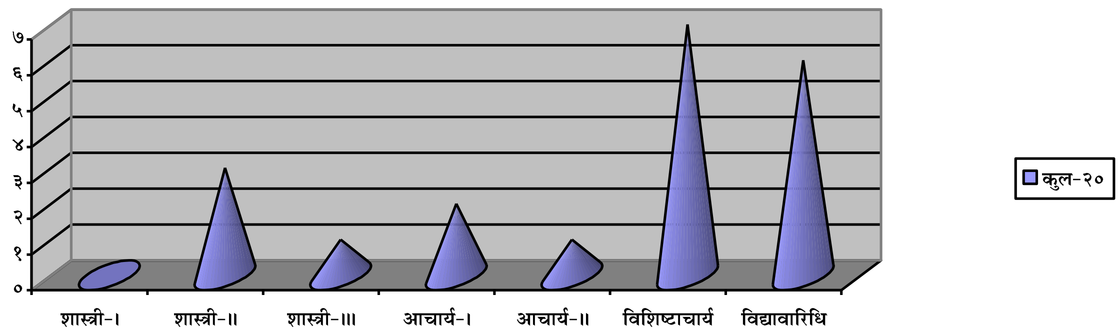

व्याकरण विभाग

संस्कृत वाङ्मय के सम्यक ज्ञान एवं अध्ययन के लिए व्याकरण-शास्त्र का अध्ययन किया जाता है। संस्कृत-व्याकरण की संवृद्धि एवं पुष्टता भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अतुलनीय है । विश्व की समस्त भाषाओं में संस्कृत सबसे परिपूर्ण एवं उन्नत भाषा स्वीकार की जाती है, जिसका मूल कारण इसका व्याकरण सम्बन्धो पक्ष है। अपनी इस विशेषता के कारण ही यह वेद का सर्वप्रमुख अङ्ग माना जाता है । इसके मूलतः पाँच प्रयोजन हैं - रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह। व्याकरण शास्त्र का बृहद् इतिहास है, किन्तु महामुनि पाणिनि और उनके द्वारा प्रणीत अष्टाध्यायी ही इसका केन्द्र- बिन्दु है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 3995 सूत्रों की रचना कर भाषा के नियमों को व्यवस्थित किया, जिसमें वाक्यों में पदों का संकलन, पदों का प्रकृति-प्रत्यय विभाग एवं पदों की रचना आदि प्रमुख तत्त्व हैं । इन नियमों की पूर्त्ति के लिए धातुपाठ, गणपाठ तथा उणादिसूत्र भी पाणिनि ने बनाए। सूत्रों में उक्त, अनुक्त एवं द्विरुक्त विषयों का विचार कर कात्यायन ने वार्त्तिक की रचना की । बाद में महामुनि पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना कर संस्कृत व्याकरण को पूर्णता प्रदान की । इन्हीं तीनों आचार्यों को त्रिमुनि के नाम से जाना जाता है । प्राचीन व्याकरण में इनके द्वारा रचित शास्त्रों का अनिवार्यतः अध्ययन किया जाता है ।

प्राचीन- व्याकरण एवं नव्य-व्याकरण दो स्वतन्त्र विषय हैं । नव्य-व्याकरण के अन्तर्गत प्रक्रिया क्रम के अनुसार शास्त्रों का अध्ययन किया जाता है, जिसमें भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट आदि आचार्यों के ग्रन्थों का अध्ययन मुख्य है।

विभागीय आचार्य

1.	प्रो. सुजाता त्रिपाठी	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा	आचार्य
3.	प्रो. कमला भारद्वाज	आचार्य
4.	डॉ. राम सलाही द्विवेदी	आचार्य
5.	डॉ. रामनारायण द्विवेदी	सह आचार्य (on Lien)
6.	डॉ. दयाल सिंह	सह आचार्य
7.	डॉ. नरेश बैरवा	सहायक आचार्य
8.	डॉ. धर्मपाल प्रजापत	सहायक आचार्य

नव्य व्याकरण विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्रो	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	25	2	-	-	-	-	-	-	3	-	3	-	-	-	31	2
शास्त्री द्वितीय वर्ष	19	1	2	-	1	-	-	-	1	-	-	-	-	-	23	1
शास्त्री तृतीय वर्ष	15	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	15	1
आचार्य प्रथम वर्ष	3	1	1	-	-	-	-	-	1	2	-	-	-	-	5	3
आचार्य द्वितीय वर्ष	4	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	5	-
विशिष्टाचार्य	9	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	11	-
विद्यावारिधि	6	-	-	-	-	-	-	-	1	-	2	-	-	-	9	-
कुल योग	81	5	3	-	1	-	-	-	9	2	5	-	-	-	99	7

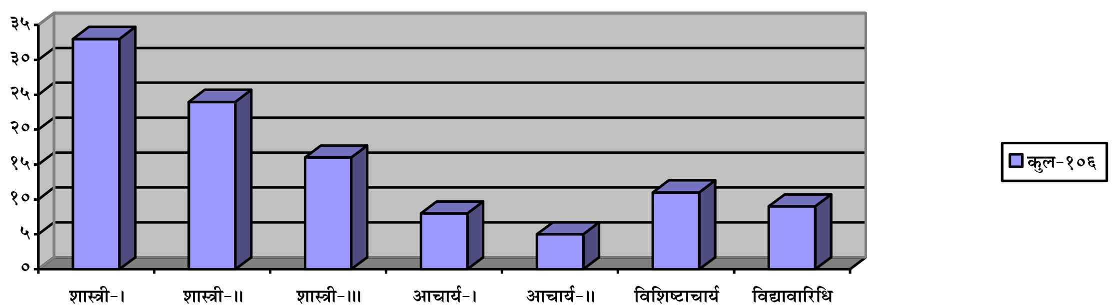

प्राचीन व्याकरण विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	1	1	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	1	2	2
शास्त्री द्वितीय वर्ष	-	1	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	2	1
शास्त्री ततीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	2	-
विशिष्टाचार्य	5	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	5	-
विद्यावारिधि	-	1	-	1	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	3
कुल योग	8	3	-	1	-	-	-	-	4	1	-	-	-	1	12	6

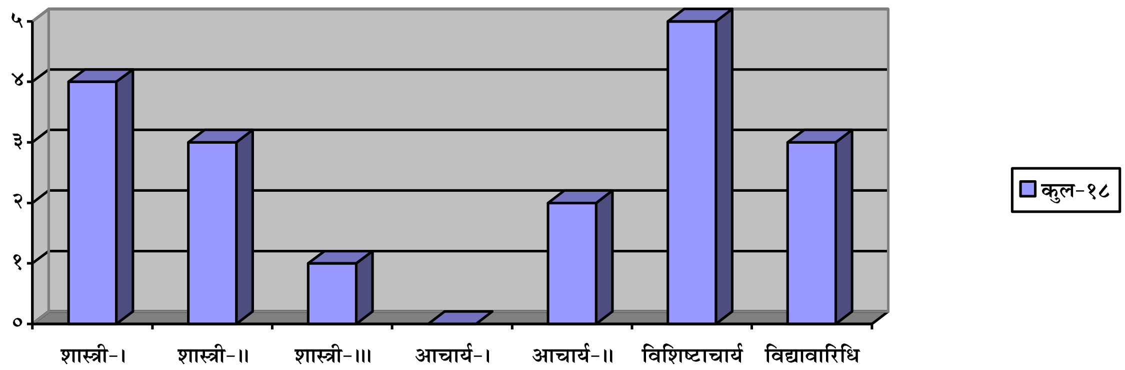

ज्योतिष-विभाग

ज्योषितशास्त्र "ज्योतिर्विज्ञान" नाम से प्रसिद्ध है, इससे न केवल इसकी वैज्ञानिकता ही प्रकट होती है बल्कि ग्रह नक्षत्रों की गति, स्थिति, युति, अमावस्या, पूर्णिमा, ग्रहणादि गणितीय पदार्थों के वेध के द्वारा दृक्सिद्धि के कारण यह शास्त्र विज्ञान की श्रेणी में प्रत्यक्षत्व की सिद्धि प्राप्त करता है। इस शास्त्र के मुख्य रूप से तीन विभाग सिद्धान्त, संहिता और होरा के रूप में किए गए हैं।

ज्योतिष विभाग द्वारा शास्त्री, आचार्य, विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि स्तर के पाठ्यक्रमों का शिक्षण प्रदान किया जाता है। यह विभाग जन-सामान्य को ज्योतिष-शास्त्र के परम्परागत ज्ञान से परिचित कराने के लिए एक-एक वर्ष की समयावधि के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम 'ज्योतिष-प्राज्ञ' एवं 'ज्योतिष-भूषण' सञ्चालित करता है। इसके साथ-साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वीकृति एवं उसके द्वारा प्रदत्त विशेष सहायता योजना (SAP-DRS-I,II एवं III ज्यो0) के अन्तर्गत मेडीकल-एस्ट्रोलॉजी में एक वर्ष का प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम सञ्चालित करता है। इस योजना के अन्तर्गत बाह्य विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान भी कराए जाते हैं।

ज्योतिष विभाग द्वारा प्रतिवर्ष 'पञ्चाङ्ग' का संपादन एवं प्रकाशन किया जाता है। इस वर्ष संवत् 2075 (शक्-संवत् 1940) के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन किया गया। इसका सम्पादन प्रो. प्रेम कुमार शर्मा एवं डॉ. बिहारी लाल शर्मा ने किया। पञ्चाङ्ग निर्माण का कार्य समस्त ज्योतिष विभागीय अध्यापकों द्वारा सामूहिक दायित्व के रूप में किया गया। इसके प्रकाशन, विक्रय एवं विद्वानों को उपलब्ध कराने का कार्य शोध प्रकाशन विभाग द्वारा किया गया।

विभागीय आचार्य

1.	प्रो. विनोद कुमार शर्मा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा	आचार्य
3.	प्रो. बिहारीलाल शर्मा	आचार्य
4.	प्रो. नीलम ठगेला	आचार्य
5.	प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा	आचार्य
6.	प्रो. परमानन्द भारद्वाज	आचार्य
7.	डॉ. सुशील कुमार	सह आचार्य
8.	डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधारी	सह आचार्य
9.	डॉ. रश्मि चतुर्वेदी	सह आचार्य

सिद्धान्त ज्योतिष विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	3	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	1
शास्त्री द्वितीय वर्ष	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
आचार्य प्रथम वर्ष	3	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	3	1
आचार्य द्वितीय वर्ष	6	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	6	1
विशिष्टाचार्य	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
विद्यावारिधि	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
कुल योग	24	2	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	24	3

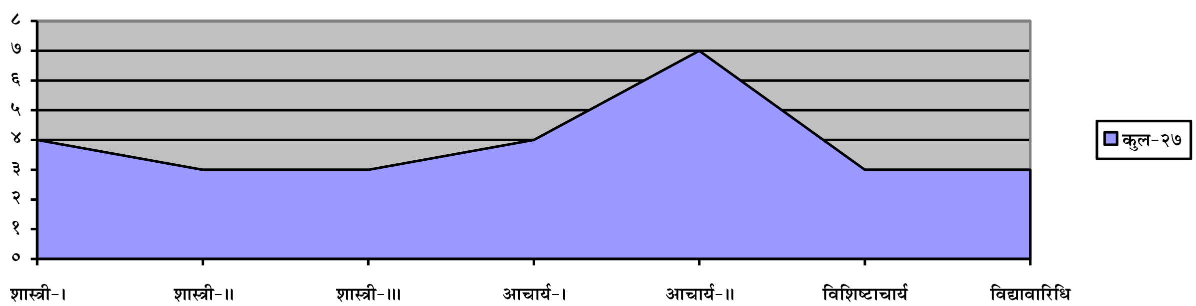

फलित ज्योतिष विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्रा	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	24	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	24	1
शास्त्री द्वितीय वर्ष	11	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	11	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	9	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	9	-
आचार्य प्रथम वर्ष	14	3	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	15	3
आचार्य द्वितीय वर्ष	13	1	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	-	-	14	1
विशिष्टाचार्य	9	2	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	9	3
विद्यावारिधि	21	2	-	-	-	-	1	-	2	1	-	-	-	-	24	3
कुल योग	101	9	-	1	-	-	2	-	3	1	-	-	-	-	106	11

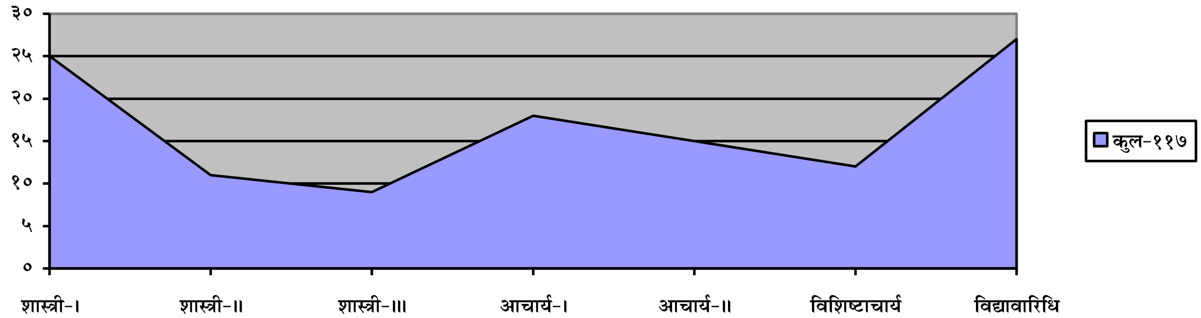

वास्तुशास्त्र विभाग

स्थापत्य के रूप में वास्तुशास्त्र का वर्णन वैदिककाल से ही सर्वत्र दिखाई देता है । दिग् और काल के अनुरूप किसी भी देश एवं स्थान में स्थापत्य का विचार अभिष्ट व्यक्ति के अनुरूप करना वास्तुशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है । स्थापत्य में शुभाशुभ विचार के कारण ही ज्योतिष शास्त्र के संहिता में वास्तु विद्या का समावेश हुआ।

वास्तु पुरुष मण्डल के वर्णन से यह द्योतित होता है कि जैसे हमारा सम्पूर्ण शरीर एक सजीव इकाई है परन्तु उसे बनाने वाली सूक्ष्म कोशिकाएँ अपने में एक चेतन्य इकाईयां हैं। उनकी प्रतिक्रियाएं समग्र शरीर की प्रतिक्रिया होती है। यही एकात्मता का भाव वास्तु में भी प्रधान है। ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र आदि सभी के ऊर्जा प्रभाव के कारण वास्तु-रचना अनुकूल और प्रतिकूल परिणाम देती है। वास्तुशास्त्र का उद्देश्य सर्वविध सुखी एवं शान्त सुरक्षित जीवन से है जहाँ रहकर व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकें।

वास्तुशास्त्र की एक विस्तृत शास्त्रीय परम्परा एवं वर्तमान में इसके स्वरूप एवं लोगों में इस शास्त्र के प्रति रुचि को देखते हुए विद्यापीठ ने अन्य विभागों के अनुरूप वास्तुशास्त्र विभाग में भी शास्त्री, आचार्य, विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि की कक्षाओं में प्रवेश सत्र 2013-14 से प्रारम्भ किया गया। जन सामान्य की वास्तुशास्त्र में रूचि को देखते हुए एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा निर्देशानुसार वास्तुशास्त्र में सम्प्रति द्विवर्षीय पी0जी0 डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चल रहा है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वास्तुशास्त्र के दुर्लभ एवं गम्भीर शास्त्रोय ज्ञान से सामान्य जनता को परिचित कराना है। शनिवार एवं रविवार को अंशकालीन पाठ्यक्रम के रूप में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम, डिप्लोमा एवं एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलते हैं।

वास्तुशास्त्र विभाग में वार्षिक वास्तुशास्त्र विमर्श का प्रकाशन होता है। वास्तुशास्त्र विमर्श का विक्रय एवं आवश्यकतानुसार विद्वानों को उपलब्ध कराने का कार्य विद्यापीठ के प्रकाशन विभाग द्वारा किया जाता है।

विभागीय आचार्य

1.	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा	प्रोफेसर
2.	प्रा. देवीप्रसाद त्रिपाठी	आचार्य (On lien)
3.	डॉ. अशोक थपलियाल	सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
4.	डॉ. देशबंधु	सहायक आचार्य
5.	डॉ. प्रवेश व्यास	सहायक आचार्य

6. डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा सहायक आचार्य
7. डॉ. दीपक वशिष्ठ सहायक आचार्य

पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	9	-	1	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	11	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	3	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	4	1
शास्त्री तृतीय वर्ष	7	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	7	-
आचार्य प्रथम वर्ष	6	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	6	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	7	-	-	1	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	8	1
विशिष्टाचार्य	1	1	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	1	3
विद्यावारिधि	4	3	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	4	4
कुल योग	37	5	2	2	-	-	-	-	2	2	-	-	-	-	41	9

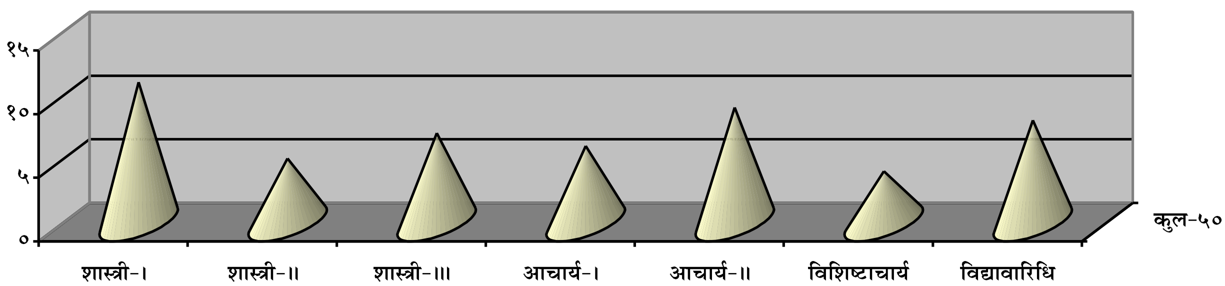

II

साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय

साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय के अन्तर्गत साहित्य, पुराणेतिहास, प्राकृत विभाग हं। साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय मूलतः संस्कृत साहित्य वाङ्मय की विभिन्न विधाओं में शिक्षण एवं शोध आदि कार्य सम्पादित करता है । संस्कृत के विभिन्न विद्वानों एवं रचनाकारों द्वारा प्रणीत साहित्य का अध्ययन-अध्यापन इसके विभागों में किया जाता है। इन विषयों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

साहित्य विभाग

'पञ्चमी साहित्यविद्या'-आचार्य राजशखर के इस कथनानुसार वेद-विहित चार विद्याओं के अतिरिक्त पञ्चमीविद्या के रूप में साहित्य का अनिवार्य स्थान माना गया है । सौन्दर्यशास्त्र, कला और कला-शास्त्र, सङ्गीत और सङ्गीतशास्त्र, नाट्य और नाट्यशास्त्र आदि इस के अन्तर्गत होने के कारण लोक जीवन में यह

साहित्य प्रतिपद अनुभूत होता है । साहित्य विभाग का प्रयास है कि शास्त्री से आचार्य तक अध्ययन के उपरान्त प्रत्येक छात्र एक पूर्ण विकसित साहित्यिक परम्परा से उद्बुद्ध हो। स्नातकोत्तर स्तर पर काव्य-शाखा, नाट्य-शाखा, एवं अलङ्कार-शाखा के रूप में संस्कृत साहित्य एवं साहित्यशास्त्र के विशद अध्ययन एवं अध्यापन से इस विभाग को विशेष गौरव प्राप्त है ।

वर्तमान युग में शोध की दृष्टि से तथा जन-सामान्य के लाभ के लिए महाकाव्यों की प्रासङ्गिकता के प्रचार-प्रसार एवं विशद-अध्ययन की दृष्टि से विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेष आर्थिक अनुदान (SAP) से 'बृहत्त्रयी बृहत्कोशपरियोजना' के रूप में एक विभागीय शोध-योजना चल रही है, जो विभाग के अध्येताओं की शोध-प्रवृत्ति-वद्धि की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । सैप (DRS-II) भी यू.जी. सी द्वारा स्वीकृत है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार साहित्य विभागीय पाठ्यक्रम का संशोधन एवं विस्तार विभागीय अध्ययन-मण्डल द्वारा किया गया, जिसमें भरत से लेकर आधुनिक कालपर्यन्त समस्त साहित्य शास्त्रीय ग्रन्थों का समावेश किया गया है। प्राच्य, पाश्चात्य साहित्य तथा संस्कृत साहित्यशास्त्र का अध्ययन भी कराया जा रहा है ताकि छात्रों की तुलनात्मक क्षमता का सामाजिक परिवेश के अध्ययन हेतु पर्याप्त विकास हो सके ।

विभागीय आचार्य

1.	प्रो. भागीरथि नन्द	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. शुकदेव भोइ	आचार्य
3.	प्रो. धर्मानन्द राउत	आचार्य
4.	डॉ. सुमन कुमार झा	सह आचार्य
5.	डॉ. अरविन्द कुमार	सह आचार्य
6.	डॉ. बी. कामाक्षम्मा	सहायक आचार्य
7.	डॉ. सौरभ दूबे	सहायक आचार्य
8.	डॉ. अनमोल शर्मा	सहायक आचार्य

साहित्य विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	15	5	-	-	1	-	-	-	2	-	-	-	-	-	18	5
शास्त्री द्वितीय वर्ष	22	3	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	22	5
शास्त्री तृतीय वर्ष	15	2	-	-	-	-	-	-	2	1	-	-	-	-	17	3
आचार्य प्रथम वर्ष	2	1	-	2	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	2	4
आचार्य द्वितीय वर्ष	8	1	-	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	8	3
विशिष्टाचार्य	2	3	1	-	-	-	-	-	3	-	-	-	-	-	6	3
विद्यावारिधि	6	2	-	1	1	-	1	-	1	2	1	-	-	-	10	5
कुल योग	70	17	1	3	2	-	1	-	8	8	1	-	-	-	83	28

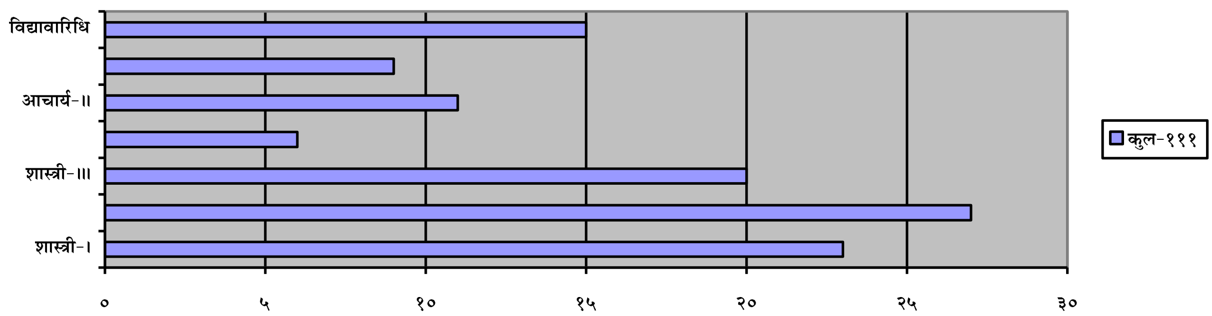

पुराणेतिहास विभाग

प्राचीन संस्कृत साहित्य में पुराणों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है । इन्हें भारतीय संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, भूगोल, इतिहास आदि का विश्वकोष कहना अतिश्योक्ति न होगी । समस्त शास्त्रों का मूल आधार पुराणों में विद्यमान है । अतः पुराणों का अध्ययन हर दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । भारतीय परम्परा के अनुसार महापुराणों की संख्या 18 है और इतने ही उपपुराण भी हैं । इन पुराणों क कर्त्ता महर्षि व्यास माने जाते हैं । पुराणों में मुख्यतः सृष्टि, प्रलय, राजवंशावलियाँ, मनुओं का काल तथा विभिन्न राजाओं का इतिहास वर्णित है । यही कारण है कि इसे पुराणेतिहास नाम से भी जाना जाता है ।

विभागीय आचार्य (पुराणेतिहास)

1. प्रो. शीतला प्रसाद शुक्ल — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष

पुराणेतिहास विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
आचार्य प्रथम वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
विशिष्टाचार्य	-	-	-	-	-	-	-	-	1	2	-	-	-	-	1	2
विद्यावारिधि	2	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	1
कुल योग	11	1	-	-	-	-	-	-	1	2	-	-	-	-	12	3

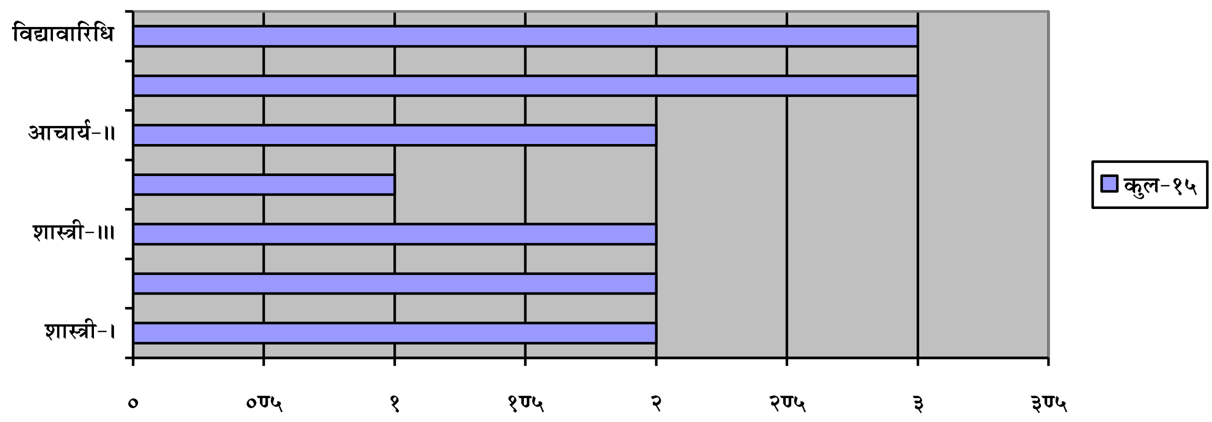

प्राकृत विभाग

भारत की प्राचीन भाषाओं में प्राकृत का गौरवपूर्ण स्थान है । एक समय में यह बोलचाल की भाषा भी थी। यही कारण है कि तत्कालीन दार्शनिकों ने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इस भाषा के माध्यम से दिया, जिनमें जैनदर्शन के आचार्य प्रमुख थे । इस भाषा की प्रचुरता एवं सरलता-सरसता के कारण ही संस्कृत नाट्य शास्त्रकारों ने नाटक के जनसामान्य पात्रों के संवादों को इस भाषा में निबद्ध करने का निर्देश किया, जिसका अनुपालन सभी नाट्यकारों ने किया । अत: प्राचीन धार्मिक सिद्धान्तां विशेष रूप से जैनदर्शन के सिद्धान्तों के मौलिक अध्ययन, संस्कृत नाटकों एवं प्राकृत काव्यों के अध्ययन के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्त्व सम्बन्धी अध्ययन के लिए यह विषय अत्यन्त उपयोगी है । अनेक शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं । इस भाषा के व्यापक अध्ययन के लिए प्राकृत प्रकाश, प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, गाथासप्तशती, पउमचरिउ, कर्पूरमञ्जरी आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है ।

विभागीय आचार्य (प्राकृत)

1. प्रो. कल्पना जैन — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. जयकुमार एन. उपाधये — आचार्य
3. प्रो. सुदीप कुमार जैन — आचार्य

प्राकृत विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
आचार्य प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3
विशिष्टाचार्य	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
विद्यावारिधि	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	1	-
कुल योग	3	3	-	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	5	3

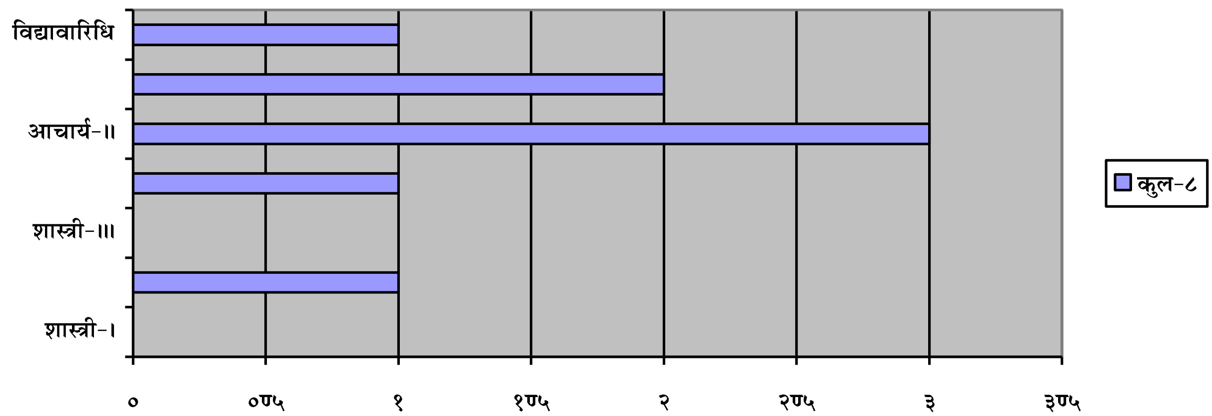

III

दर्शन सङ्काय

दर्शन संकाय के अन्तर्गत आठ विषयों का अध्ययन-अध्यापन होता है। ये आठ विभाग - न्याय-वैशेषिक, सांख्ययोग, अद्वैतवेदान्त, विशिष्टाद्वैतवेदान्त, जैनदर्शन, सर्वदर्शन, मीमांसा एवं योग है। भारतीय सनातन ज्ञान की विविध परम्पराओं का अध्ययन-अध्यापन इस संकाय के अन्तर्गत सम्पन्न होता है। वस्तुतः भारतीय दार्शनिक विधाओं के सम्बन्ध में गहन अनुसंधान और समाजोपयोगी ज्ञान-निर्माण में इसके विभिन्न विभाग सतत प्रयत्नशील हैं । विभागों और उनके विषयों की कार्यविधि का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

न्याय-वैशेषिक-विषय का प्रमुख उद्देश्य प्राचीनन्याय एवं नव्यन्याय के पाठ्यग्रन्थों का पारम्परिक अध्ययन एवं अध्यापन के माध्यम से संरक्षण एवं सम्वधन है। न्याय-वैशेषिक-विषय में प्राचीन-न्याय एवं नव्य-न्याय, दो विषयों का अध्ययन-अध्यापन सविधि होता है।

प्राचीन-न्याय विषय का अध्ययन करने वाले छात्र मुख्य रूप से प्राचीन-न्यायदर्शन एवं वैशेषिक-दर्शन के प्रारम्भिक ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं। प्राचीन न्याय का प्रथम ग्रन्थ ''न्याय-सूत्र'' है। इसके निर्माता महर्षि गौतम हैं। इस ग्रन्थ को आन्वीक्षिकी, न्यायविद्या, न्याय-दर्शन, न्याय-शास्त्र तथा तर्क-शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है। न्याय-दर्शन एवं वैशेषिक-दर्शन परस्पर एक दूसरे के विरोधो नहीं है इसलिए इन्हें समान-तन्त्र माना गया है। इन दोनों दर्शनों के अध्ययन से छात्रों में तार्किक क्षमता का विकास होता है तथा किसी भी विषय को युक्ति के आधार पर समझने की कला विकसित होती है।

नव्य-न्याय विषय का अध्ययन करने वाले छात्र प्रमुख रूप से 'तत्त्व-चिन्तामणि' नाम के ग्रन्थ का अध्ययन करते हैं। 'तत्त्व-चिन्तामणि' नव्य-न्याय का प्रथम ग्रन्थ है। इसके रचयिता आचार्य गङ्गेश उपाध्याय हैं। नव्य-न्याय, न्याय-सूत्र पर ही मूल रूप से आधारित है। न्यायदशन के प्रमाण, प्रमेय आदि सोलह पदार्थो का ही नव्य-न्याय के ग्रन्थों में विशिष्ट भाषा एवं शैली में आकर्षक-प्रतिपादन है।

नव्य-न्याय की भाषा अत्यन्त उन्नत है। इसलिए सभी शास्त्रां में विषय को सूक्ष्म रूप से सुस्पष्ट करने की दृष्टि से बाद के सभो समीक्षकों ने नव्य न्याय की भाषा शैली को सादर अपनाया है। संगणक के विशेषज्ञों ने इस भाषा को संगणक के लिए सर्वाधिक उपयोगी माना है। इस प्रकार नव्य-न्याय के अध्ययन से न्याय-दर्शन एवं वैशेषिक-दर्शन के अत्यन्त गूढ़ रहस्यों को समझने में जहाँ हम समर्थ होते हैं वहीं व्याकरण, ज्यातिष, साहित्य आदि अन्य शास्त्रों के मर्म को भी भली-भाँति समझने समझाने की विलक्षण प्रतिभा भी

अनायास पाप्त कर लेते हैं। नव्य–न्याय के अध्ययन से हर प्रकार का अज्ञान दूर हो जाता है। बुद्धि निर्मल होती है। संस्कृत पदों के व्यवहार की शक्ति उत्पन्न होती है। शास्त्रान्तर के अभ्यास की योग्यता प्राप्त होती है। इस प्रकार तर्कशास्त्र में किया गया श्रम छात्रों का हर तरह से उपकार करता है।

विभागीय आचार्य (न्याय)

1.	प्रो. बिष्णुपद महापात्र	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित	आचार्य
3.	प्रो. महानन्द झा	आचार्य
4.	डॉ. रामचन्द्र शर्मा	सह आचार्य

नव्य न्याय विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	4	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	2	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
आचार्य प्रथम वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
विशिष्टाचार्य	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
विद्यावारिधि	2	1	-	2	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	2	4
कुल योग	18	1	-	2	-	-	-	-	1	1	-	-	-	-	19	4

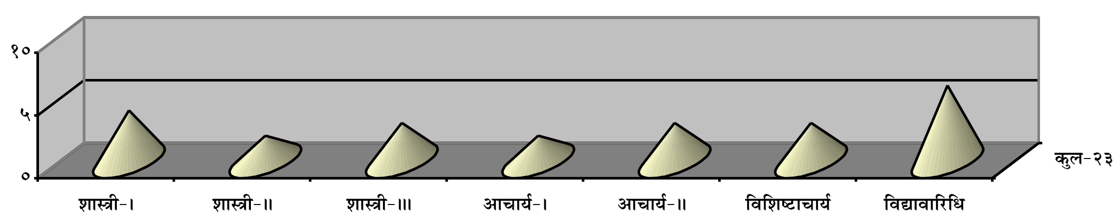

प्राचीन न्याय विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज.जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
आचार्य प्रथम वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	2	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	-
विशिष्टाचार्य	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	1	-
विद्यावारिधि	-	1	2	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	2	2
कुल योग	3	1	3	-	-	-	-	-	1	1	-	-	-	-	7	2

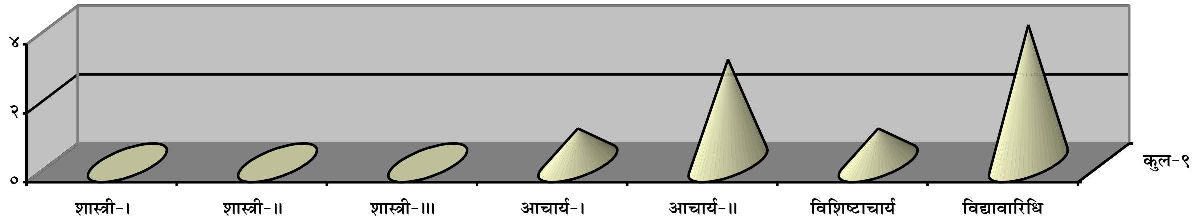

साङ्ख्य-योग का अध्ययन करने वाले छात्र प्रमुख रूप से साङ्ख्य दर्शन एवं योग-दर्शन के आधारभूत ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं । साङ्ख्य-दर्शन का प्रथम ग्रन्थ महर्षि कपिल के द्वारा प्रणीत साङ्ख्य-सूत्र है। प्रसिद्ध आचार्य ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित साङ्ख्यकारिका इस दर्शन का अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थ है । इस दर्शन में कुछ पदार्थ केवल प्रकृति हैं, कुछ प्रकृति एवं विकृति हैं, कुछ मात्र विकृति हैं, तो कुछ न प्रकृति हैं और न ही विकृति। इस प्रकार साङ्ख्यदर्शन में स्वीकृत सभी पच्चीस पदार्थों को चार वर्गों में बाँटा गया है ।

कपिल द्वारा प्रणीत साङ्ख्यदर्शन में ईश्वर की सत्ता न होने से इसे निरीश्वर साङ्ख्य कहते हैं । इस दर्शन में प्रकृति, महत्तत्त्व, अहङ्कार, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (घ्राण-रसना-चक्षु-त्वक्-श्रोत्र), पाँच कर्मेन्द्रियाँ (वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थ) मन, पाँच तन्मात्राएँ (गन्धातन्मात्रा-रसतन्मात्रा-रूपतन्मात्रा-स्पर्शतन्मात्रा-शब्दतन्मात्रा) एवं पाँच महाभूत (पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश) एवं पुरुष इस प्रकार कुल पच्चीस पदार्थ माने गए हैं। इन्हीं पदार्थों का अध्ययन इस दर्शन में कराया जाता है। योग-दर्शन का प्रथम ग्रन्थ महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रणीत 'योग-सूत्र' है । इस ग्रन्थ को पातञ्जल योगदर्शन के नाम से भी जाना जाता है। इस योग-दर्शन में साङ्ख्य दर्शन के ही सभी पच्चीस पदार्थ माने गए हैं, केवल पुरुष-विशेष क रूप में एक ईश्वर नाम का पदार्थ यहाँ अतिरिक्त स्वीकार किया गया है । इसीलिए योगदर्शन को सेश्वर साङ्ख्यदर्शन भी कहा जाता है।

विभागीय आचार्य (सांख्ययोग)

1. प्रो. मारकण्डेय नाथ तिवारी — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी — आचार्य
3. डॉ. रविशंकर शुक्ल — सह आचार्य

साङ्ख्य-योग विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	5	-	-	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	6	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य प्रथम वर्ष	3	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	1
आचार्य द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
विशिष्टाचार्य	-	1	1	1	-	-	-	-	2	1	-	-	-	-	3	3
विद्यावारिधि	4	1	2	-	1	-	-	-	3	-	1	-	-	-	11	1
कुल योग	14	3	3	1	3	-	-	-	5	1	1	-	-	-	26	5

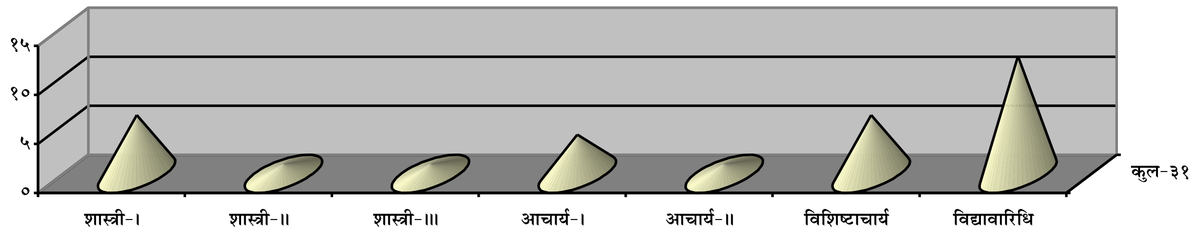

योग शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए विश्व की प्राचीनतम प्रणाली है। शताब्दियों से भारत में योगियों, ऋषियों एवं मनीषियों द्वारा योग का अभ्यास किया गया है। जिसके द्वारा जीवन के परम लक्ष्य कैवल्य (मोक्ष) को प्राप्त किया जाता है। योगविद्या से मानसिक शान्ति एवं शारीरिक संतुलन का दिव्य प्रभाव बना रहता है, इससे मेरुदण्ड में लचीलापन एवं स्नायुतन्त्र में निरन्तर वृद्धि होने लगती है, इससे शनैः-2 मूलाधारादि षट्चक्रभेदन भी होने लगता है। योगासन क्रिया अन्य व्यायामादि क्रियाओं से निरन्तर भिन्न है। क्योंकि योगक्रियाओं में श्वास-प्रणाली को केन्द्रित कर योगाभ्यास किया जाता है।

मानव, योग प्रणाली द्वारा अपने खोए हुए स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कर सकता है। यह प्रणाली मानसिक शान्ति को जन्म देती है । तथा आत्मतत्त्व में गुप्तशक्तियाँ उद्घाटित करती है, साथ ही अपनो संकल्पशक्ति में प्रचुर वृद्धि कर करती है। इससे जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होती है मानव इस प्रणाली द्वारा आत्म साक्षात्कार के उत्कृष्ट शिखर पर आसीन हो सकता है। अर्थात् आत्मस्वरूप को पहचानने में सक्षम हो जाता है। लिखा है-तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्टिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली में सत्र 2011-12 से 2017 तक योग विज्ञान केन्द्र के अधीनस्थ स्नातकोत्तर योग डिप्लोमा एवं योग प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम संचालित हुए थे। सत्र 2018-19 से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वीकृति से पूर्ण रूप से योग विभाग की स्थापना हुई है, जिसमें बी.ए. योग, एम.ए. योग, पी.जी. योग डिप्लोमा तथा प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। विभाग की समस्त कक्षाओं में लगभग 400 छात्र छात्राऐं योग अध्ययन कर रहे हैं।

विभागीय आचार्य (योग)

1.	प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	डॉ. रमेश कुमार	सहायक आचार्य
3.	डॉ. विजय सिंह गुसाईं	सहायक आचार्य
4.	डॉ. नवदीप जोशी	सहायक आचार्य

योग विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	10	12	5	-	2	-	-	-	5	4	1	-	-	-	23	16
शास्त्री द्वितीय वर्ष	11	6	5	3	2	-	-	-	6	2	-	-	-	-	24	11
आचार्य प्रथम वर्ष	11	15	3	4	2	-	-	-	6	5	-	-	-	-	22	24
आचार्य द्वितीय वर्ष	22	21	-	9	3	1	1	-	16	16	-	-	-	-	42	47
कुल	54	54	13	16	9	1	1	-	33	27	1	-	-	-	111	98

जैनदर्शन म ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यन्त चौबीस अर्हन्त तीर्थङ्करों को ‘जिन’ कहते हैं । जिन के दर्शन को ही जैन दर्शन कहते हैं । जैनदर्शन के तत्त्वज्ञान को सूत्रशैली में प्रस्तुत करने वाला ‘तत्त्वार्थ-सूत्र’ आचार्य उमास्वामी के द्वारा लिखित एक अद्वितीय ग्रन्थ है । तत्त्वार्थ सूत्र में प्रस्तुत विषयों का ही विशद विवेचन प्रायः जैन-दर्शन के अन्य ग्रन्थां में भी किया गया है, जिनका अध्ययन-अध्यापन जैन-दर्शन विषय के अन्तर्गत होता है । हरिभद्र सूरि का ‘षड्दर्शनसमुच्चय’ एवं ‘शास्त्रवार्त्तासमुच्चय’ भी जैनदर्शन की मान्यताओं को समझने में अत्यन्त उपादेय हैं। जैन-दर्शन में जीव-अजीव-आस्रव-बन्ध-संवर- निर्जरा-मोक्ष ये सात तत्त्व माने गए हैं । इनका तात्त्विक विश्लेषण तत्त्वार्थ-सूत्र में सुलभ है । जैनदर्शन का अनेकान्तवाद या स्याद्वाद आज के आधुनिक युग में अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन में अत्यन्त उपादेय है ।

विभागीय आचार्य (जैनदर्शन)

1. प्रो. अनेकान्त कुमार जैन — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. वीर सागर जैन — आचार्य
3. डॉ. कुलदीप कुमार — आचार्य

जैनदर्शन विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	3	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	3	1
शास्त्री द्वितीय वर्ष	1	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	3
शास्त्री तृतीय वर्ष	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	1
आचार्य प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	1	1	-	-	-	-	1	1
आचार्य द्वितीय वर्ष	-	1	-	-	-	-	-	-	1	2	-	-	-	-	1	3
विशिष्टाचार्य	1	1	-	-	1	-	-	-	-	1	-	-	-	-	2	2
विद्यावारिधि	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	1
कुल योग	7	8	-	-	1	-	-	-	2	4	-	-	-	-	10	12

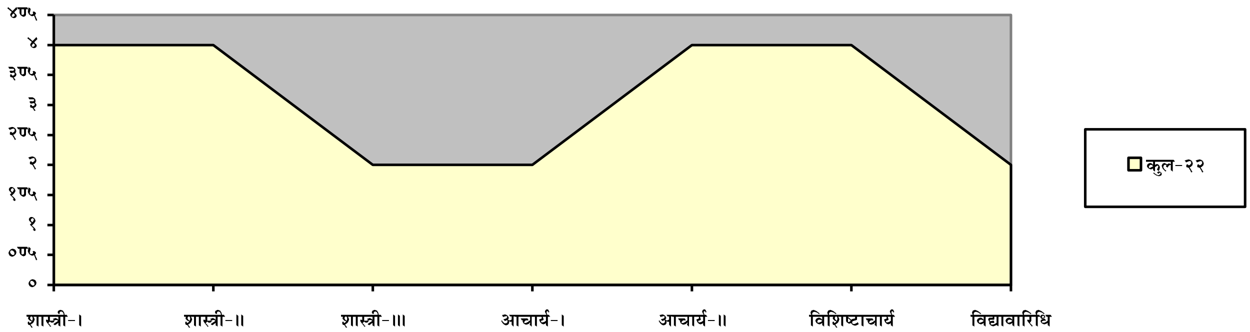

सर्वदर्शन दर्शनशास्त्र का सर्वाङ्गीण अध्ययन कराने वाला शास्त्र है। दर्शन का लक्ष्य नि:श्रेयस् की प्राप्ति है। व्यक्ति का परम लक्ष्य भौतिक भी हो सकता है, आध्यात्मिक भी। दर्शनशास्त्र दोनों मार्गों का औचित्य बतलाते हुए कर्तव्याकर्तव्य, शुभाशुभ का दिशाबोध कराता है । अत: व्यक्ति के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है ।

भारतीय दर्शन का आरम्भ वेदों से होता है, इसका उत्कर्ष उपनिषदों में मिलता है । कालान्तर में यथार्थ तत्त्व को अलग-अलग विश्लेषण के आधार पर समझाने की प्रक्रिया में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त- इन षड्दर्शनों एवं चार्वाक, जैन, बौद्ध, शैवादि दर्शन का अभ्युदय हुआ । इन सभी दर्शनों ने अपने-अपने विचारों को सूत्र-शैली में प्रस्तुत किया, जो तत्तत् दर्शनों के सूत्र-ग्रन्थों के नाम, जैसे- साङ्ख्यसूत्र, योगसूत्र, न्यायसूत्र, मीमांसासूत्र आदि से प्रसिद्ध हैं । सर्वदर्शन विषय में इन सभी दर्शनों का अध्ययन उनके आधारभूत सूत्रग्रन्थों एवं भाष्यग्रन्थों के माध्यम से करवाया जाता है । साथ ही समकालीन दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन का संक्षिप्त ज्ञान भी दिया जाता है।

विभागीय आचार्य (सर्वदर्शन)

1.	प्रो. संगीता खन्ना	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. हरेराम त्रिपाठी	आचार्य
3.	प्रो. प्रभाकर प्रसाद	आचार्य
4.	डॉ. जवाहर लाल	आचार्य
5.	श्री विजय गुप्ता	सहायक आचार्य

सर्वदर्शन विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री द्वितीय वष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	1	1	-	-	-	-	2	1
विशिष्टाचार्य	1	2	-	-	-	-	-	-	1	-	-	-	-	-	2	2
विद्यावारिधि	2	5	-	1	-	-	-	-	1	1	2	-	-	-	5	7
कुल योग	7	7	-	1	-	-	-	-	3	2	2	-	-	-	12	10

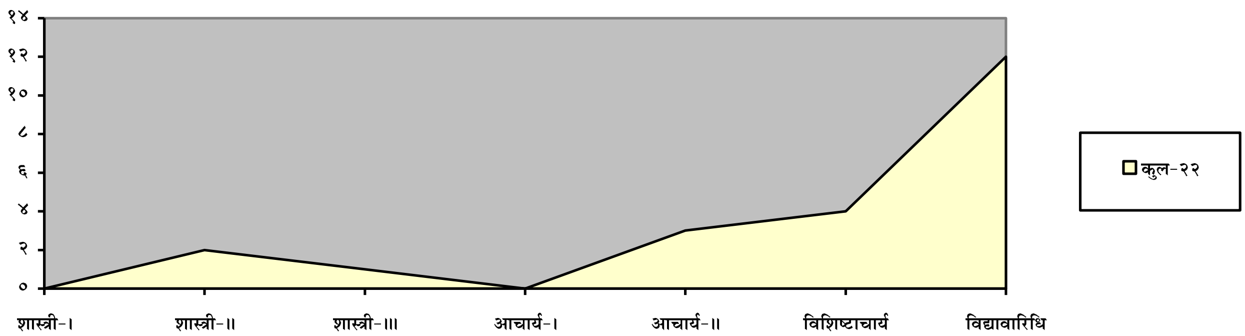

'पूजितविचारवचनो मीमांसाशब्दः' मीमांसा शब्द का अर्थ पूजित विचार होता है । **''कर्मेति मीमांसकाः''** इस वचन के अनुसार मीमांसा में कर्म को ही ईश्वर माना गया है । मोमांसा का प्रथम ग्रन्थ 'जैमिनि-सूत्र' है इसे द्वादशलक्षणी नाम से भी जाना जाता है । इस दर्शन में द्वादश अध्याय हैं । इस मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक महर्षि जैमिनि हैं । धर्म का क्या लक्षण है एवं धर्म में क्या प्रमाण है? यही समझाने के लिए इस ग्रन्थ की रचना हुई है । इसलिए इस दर्शन का प्रथम सूत्र - **'अथातो धर्मजिज्ञासा'** (जै.सू.1/1/1) है । इस शास्त्र में अनेक अधिकरण हैं, जिनके आधार पर धर्म या मानव-कर्त्तव्य याग आदि का विचार होता है। अधिकरण में पाँच अवयव या भाग होते हैं - विषय, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धान्त एवं सङ्गति।

विभागीय आचार्य (मीमांसा)

1. प्रो. ए.एस. आरावमुदन् — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. श्री राजेश कुमार गुर्जर — सहायक आचार्य

मीमांसा विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	4	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
आचार्य प्रथम वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
विशिष्टाचार्य	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
विद्यावारिधि	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	1
कुल योग	8	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	8	1

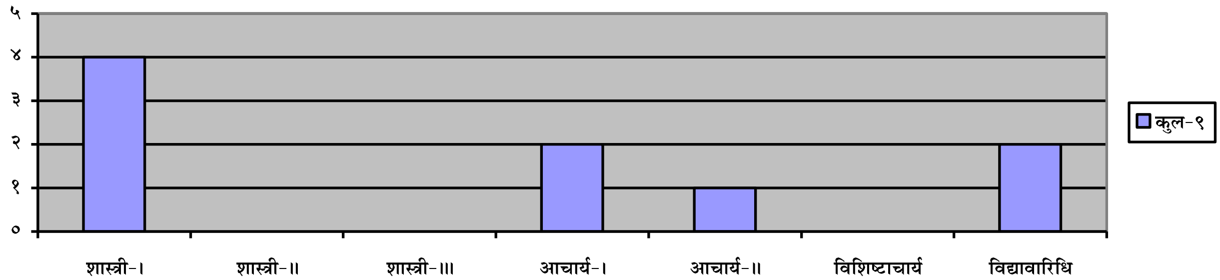

वेदान्त विभाग

अद्वैत-वेदान्त का अध्ययन करने वाले छात्र मुख्य रूप से 'ब्रह्मसूत्र' का अध्ययन करते हैं। अद्वैत वेदान्त को 'शाङ्करदर्शन' भी कहा गया है । **'वेदान्तो नाम उपनिषत् प्रमाणम्'** वेदान्त में 'उपनिषद्' को अर्थात् वेद-वाक्यों को परम प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है । अद्वैत वेदान्त चतुर्लक्षण हं । वेदान्तशास्त्र के प्रथम अध्याय में यह बताया गया है कि समस्त वेदान्तशास्त्र का तात्पर्य ब्रह्म में समाहित है इस शाङ्कर दर्शन में ब्रह्म ही एक सत्य है, सम्पूर्ण संसार ब्रह्म का विवर्त है, यही विभिन्न युक्तियों से समझाया गया है। यह दर्शन यदि ठीक से अध्येता हृदयङ्गम कर ले तो जीवन की अनेक विसङ्गतियों से छुटकारा पा सकता है तथा समाज में समता एवं एकता सुप्रतिष्ठित हो सकती है ।

विशिष्टाद्वैतवेदान्त-''यस्य पृथिवी शरीरं यस्यापः शरीरं यस्यात्मा शरीरम्'' इस बृहदारण्यक श्रुति के द्वारा अवगत होता है कि चित् (चेतन जीव) एवं अचित् (जड़ प्रकृति पथिव्यादि) शरीर से विशिष्ट आत्मा एक है, अद्वैत है, ऐसा निश्चित होता है । अतः उपनिषदादि प्रतिपाद्य केवल अद्वैत नहीं है, किन्तु चेतन एवं अचेतन से विशिष्ट ब्रह्म या ईश्वर अद्वैत है । जैसे लोक में शरीर एवं शरीरी आत्मा का परस्पर अत्यन्त भेद होने पर भी 'यह एक देवदत्त है' ऐसा जड़- चेतन का विशिष्ट एकत्व का व्यवहार होता है, वैसे ही जड़ पदार्थ, जीवों का अनेकत्व होने पर भी एवं ब्रह्म से उन सबका भेद होने पर भी चित्-अचित् से विशिष्ट ब्रह्म एक है - अद्वैत है ऐसा विशिष्टाद्वैतवेदान्त का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का मुख्य ग्रन्थ श्री बादरायण पणीत ब्रह्मसूत्र पर रामानुजाचार्य का ''श्रीभाष्य'' है, जिसके अध्ययन एवं श्रवण, मनन से जिज्ञासु छात्रगण विशिष्टाद्वैतवेदान्त को यथावत् समझकर अपने देवदुर्लभ मानव जीवन को धन्य एवं सफल बना सकते हैं ।

विभागीय आचार्य (अद्वैत वेदान्त)

1. डॉ. सतीश के.एस. सह आचार्य

अद्वैत वेदान्त विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
आचार्य प्रथम वर्ष	2	-	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	1
आचार्य द्वितीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
विशिष्टाचार्य	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1
विद्यावारिधि	3	2	1	1	-	-	1	-	1	1	-	1	-	-	6	5
कुल योग	5	3	1	2	-	-	1	-	1	1	-	1	-	-	8	7

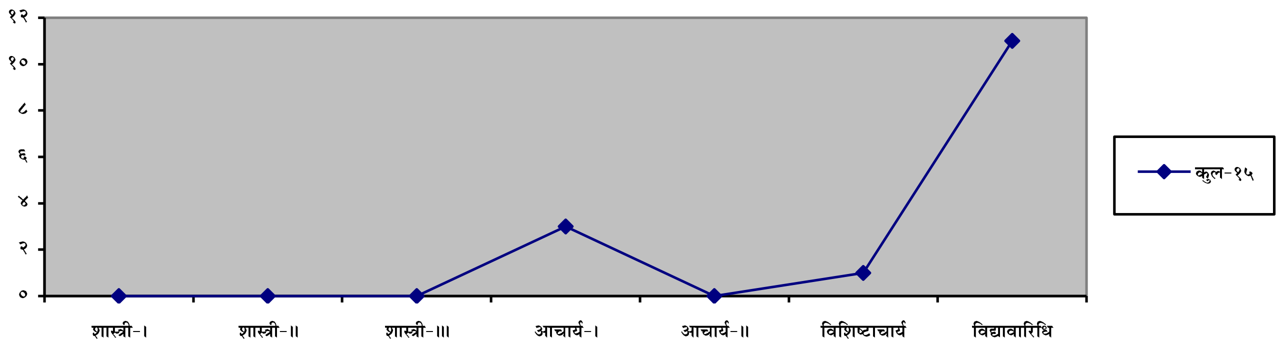

विभागीय आचार्य (विशिष्टाद्वैत वेदान्त)

1. प्रो. के. अनन्ता — आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. केदार प्रसाद परोहा — आचार्य
3. डॉ. सुदर्शनन्.एस. — सह आचार्य

विशिष्ट अद्वैत वेदान्त विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शास्त्री प्रथम वर्ष	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	2	-
शास्त्री द्वितीय वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
आचार्य प्रथम वर्ष	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	-
आचार्य द्वितीय वर्ष	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	1
विशिष्टाचार्य	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
विद्यावारिधि	1	2	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	1	3
कुल योग	6	3	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	6	4

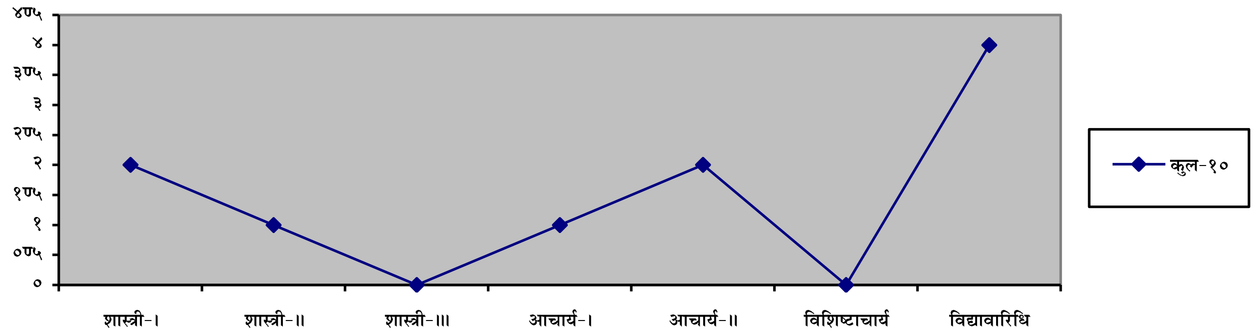

IV
आधुनिक विद्या संकाय

उच्चतर शिक्षा में अनुसन्धान की महती भूमिका को अभिलक्षित कर प्रारम्भ से ही विद्यापीठ में पृथक् रूप से एक शोध विभाग स्थापित है। विद्यापीठ के विभिन्न विभागों के अन्तर्गत विविध विषयों में अनुसन्धान करने वाले छात्रों की अनुसन्धान प्रविधि प्रशिक्षण सम्बन्धी प्रक्रिया सत्रीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य विभाग द्वारा संचालित होता है।

आधुनिक विषयों जैस-हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र एवं संगणक पर्यावरण अध्ययन जैसी उपयोगो विधा का अध्ययन-अध्यापन भी किया जाता है । इन विषयों के अध्यापन के लिए नियुक्त आचार्यो का विवरण निम्नवत है-

हिन्दी

1.	प्रो. सविता	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. जगदेव कुमार शर्मा	आचार्य

अंग्रेजी

1.	प्रो. मीनू कश्यप	आचार्य
2.	डॉ. अभिषेक तिवारी	सहायक आचार्य

राजनीति शास्त्र

1.	श्री केशव नारायण मिश्र	सह आचार्य

संगणक विज्ञान

1.	श्री आदेश कुमार	सह आचार्य
2.	श्री आदित्य पंचोली	सहायक आचार्य

पर्यावरण अध्ययन

1.	डॉ. सुमिता त्रिपाठी	सहायक आचार्य

समाजशास्त्र

1.	कु0 वन्दना शुक्ला	सहायक आचार्य

शोध एवं प्रकाशन

1.	प्रो. शिवशंकर मिश्र	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष

V

शिक्षाशास्त्र संकाय

संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण-अधिगम प्रणालियों मे सामर्थ्य विकसित करने हेतु प्रतिबद्ध, कुशल एवं प्रशिक्षित अध्यापक एवं अध्यापक शिक्षक तैयार करना है, जिसके लिए विभाग द्वारा शिक्षाशास्त्री (बी. एड), शिक्षाचार्य (एम.एड.), विशिष्टाचार्य(एम.फिल) एवं विद्यावारिधि(पी-एच.डी.) पाठ्यक्रमों का अध्यापन किया जाता है। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश अखिल भारतीय संयुक्त प्रवेश परीक्षा के आधार पर किया जाता है जो श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली, रा.सं.संस्थान, नई दिल्ली एवं रा.सं.विद्यापीठ तिरूपति द्वारा वार्षिक क्रमानुसार आयोजित की जाती है।

शिक्षाशास्त्र विभाग का ध्येय संस्कृत शिक्षणशास्त्र पर केन्द्रित शिक्षण अधिगम प्रणालियों का प्रभावी नियोजन, अभिकल्पन एवं क्रियान्वयन करना है। साथ ही संस्कृत शिक्षणशास्त्र के अनुक्षेत्र में नवाचारी कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना एवं संस्कृत शिक्षा पर केन्द्रित शोध में अन्तर्विद्यापरक उपागम को बढावा देना इस ध्येय का केन्द्रबिन्दु है। शिक्षण हतु विभाग में उत्तम भौतिक एवं अनुदेशनात्मक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। तीन प्रयोगशालाओं यथा-भाषा, मनोविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ-साथ विभागीय पुस्तकालय, संसाधन कक्ष, सामाजिक अध्ययन केन्द्र, कला कक्ष तथा संगोष्ठी कक्ष से विभाग समुन्नत है। शिक्षाशास्त्री क छात्रों का विद्यालयीय स्तर पर शिक्षण हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इन्हें विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले संस्कृत भाषा एवं प्राचीन विषयों यथा-साहित्य, दर्शन एवं ज्योतिष के साथ-साथ आधुनिक विषयों के शिक्षण हेतु तैयार किया जाता है। कम्प्यूटर विषय का अध्ययन भी कराया जाता है। शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षाचार्य के विद्यार्थियों द्वारा प्राचीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विविध पक्षों एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विद्यालयीय समस्याओं, शैक्षिक प्रबन्धन, शिक्षा की वर्तमान नीतियों, विशिष्ट शिक्षा, शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक पक्षों, नवाचारी शिक्षण तथा शिक्षण अधिगम की दृष्टि से भारतीय साहित्य से सम्बन्धित विषयों पर लघ्शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए जाते हैं।

विशिष्टाचार्य पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को विद्यावारिधि/शोध कार्य (शिक्षाशास्त्र) हेतु तैयार किया जाता है। विद्यावारिधि के विद्यार्थी पारम्परिक एवं आधुनिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित शोध कार्य करते हैं। विभाग द्वारा इस सत्र से विद्यावारिधि पूर्व (पीएच.डी) षाणमासिक शिक्षा पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

शिक्षाशास्त्र संकाय के आचार्य

1.	प्रो. के. भारत भूषण	-	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. नागेन्द्र झा	-	आचार्य
3.	प्रो. रमेश प्रसाद पाठक	-	आचार्य
4.	प्रो. रचना वर्मा मोहन	-	आचार्य
5.	प्रो. रजनी जोशी चौधरी	-	आचाय
6.	प्रो. सदन सिंह	-	आचार्य

7. प्रो. कुसुम यदुलाल – आचार्य
8. प्रो. मीनाक्षी मिश्र – आचार्य
9. प्रो. विमलेश शर्मा – आचार्य
10. प्रो. अमिता पाण्डेय भारद्वाज – आचार्य
11. प्रो. एम.जयकृष्णन् – आचार्य
12. श्री मनोज कुमार मीणा – सहायक आचार्य
13. डॉ. सविता राय – सहायक आचार्य
14. डॉ. सुरेन्द्र महतो – सहायक आचार्य
15. डॉ. प्रेम सिंह सिकरवार – सहायक आचार्य
16. डॉ. तमन्ना कौशल – सहायक आचार्य
17. डॉ. अजय कुमार – सहायक आचार्य
18. डॉ. पिंकी मलिक – सहायक आचार्य
19. डॉ. शिवदत्त आर्या – सहायक आचार्य
20. डॉ. परमेश कुमार शर्मा – सहायक आचार्य
21. डॉ. ममता – सहायक आचार्य
22. डॉ. आरती शर्मा – सहायक आचार्य
23. डॉ. विचारी लाल मीणा – सहायक आचार्य
24. डॉ. जितेन्द्र कुमार – सहायक आचार्य
25. डॉ. प्रदीप कुमार झा – सहायक आचार्य
26. डॉ. दिनेश कुमार यादव – सहायक आचार्य
27. डॉ. इक्कुर्ति वेंकटेश्वरलु – सहायक आचार्य
28. डॉ. सुनील कुमार शर्मा – सहायक आचार्य
29. डॉ. कैलाश चन्द मीना – सहायक आचार्य
30. श्रीमती अनीता – सहायक आचार्य

शिक्षाशास्त्र विभाग के पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण:

पाठ्यक्रम	सामान्य		अनु. जा		अनु.ज. जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		कुल	
	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष	62	37	9	16	6	7	3	-	17	37	-	-	4	2	101	99
शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष	76	56	4	5	2	1	-	-	24	29	-	-	-	-	106	91
शिक्षाचार्य प्रथम वर्ष	3	2	-	1	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	5	3
शिक्षाचार्य द्वितीय वर्ष	5	-	-	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	6	-
विशिष्टाचार्य	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
विद्यावारिधि	12	4	2	-	-	-	-	-	1	1	-	-	4	-	19	5
कुल योग	158	99	15	22	9	8	3	-	44	67	-	-	8	2	237	198

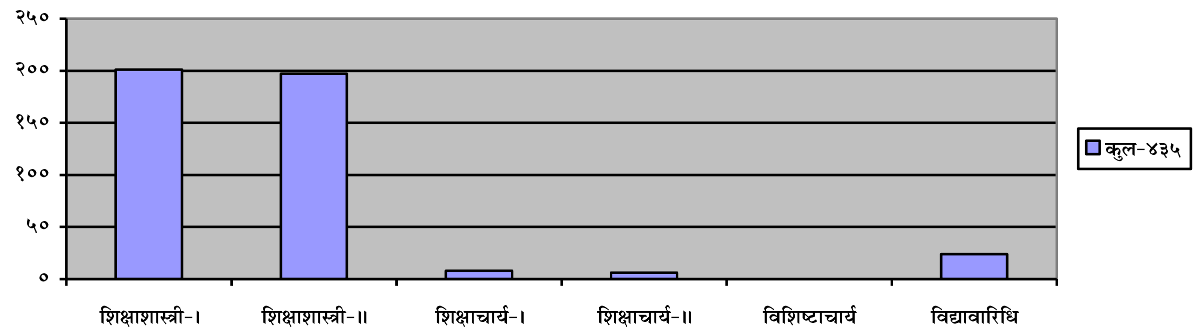

क) राष्ट्रीय संगोष्ठी/कार्यशाला/विशिष्ट व्याख्यान

(1) शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 24.02.2020 से 28.02.2020 तक ''अध्यापक शिक्षापाठ्यक्रमपुनरीक्षण'' पर एक कार्यशाला का आयोजन शिक्षाशास्त्र संकाय प्रमुख प्रो0 के. भारत भूषण की अध्यक्षता में सम्पन्न किया गया ।

(2) डॉ अदित्यनाथ झा स्मारक व्याख्यान माला के अन्तर्गत दिनांक 12.03.2019 को एक स्मारक व्याख्यान आयोजित किया गया।

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी विभाग द्वारा अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जो निम्न प्रकार है-

(1) **सत्र-प्रारम्भ**

सत्र का प्रारम्भ 11 जुलाई, 2019 को हुआ तथा प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ की गई ।

(2) **विद्यार्थियों का अभिविन्यास कार्यक्रम**

12 जुलाई, 2019 को नए सत्र का औपचारिक उद्घाटन संकायाध्यक्ष प्रो. के. भारत भूषण द्वारा किया गया तथा अध्यापकों द्वारा शिक्षाशास्त्री(बी.एड्.) एवं शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के विद्याथियों को उनके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित जैसे सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, शिक्षण अभ्यास तथा सत्रीय कार्यों के बारे में बताया गया। विभाग के सभी शिक्षकों ने पढ़ाए जान वाले विषयों के बारे में भी चर्चा की। एम.एड. और एम.फिल. के विद्यार्थियों को भी उनके विभिन्न प्रश्न पत्रों के विषय में उनके शिक्षकों द्वारा अभिमुख किया गया। सभी वैकल्पिक विषयों को उनके समक्ष परिचयात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे विद्यार्थी बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से अपने वैकल्पिक विषय का चयन कर सकें। लघु शोध प्रबन्ध के लिए विषयों का चयन करने हेतु एक अलग अभिविन्यास कार्यक्रम किया गया।

ख. शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) की गतिविधियाँ

(1) **प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण**- प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण शिक्षाशास्त्री के प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। दिनांक 09.09.2019 से 18.09.2019 के दौरान यह प्रशिक्षण शिक्षाशास्त्री के छात्र-छात्राओं को दिया गया ।

(2) **संस्कृत सम्भाषण शिविर**- संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षण की आवश्यकता को देखते हुए, शिक्षाशास्त्र विभाग के विद्यार्थियों के लिए दिनांक 01.08.2019 से 30.08.2019 तक संस्कृत सम्भाषण कक्षाओं का आयोजन किया गया। ।

(3) **सूक्ष्म शिक्षण कार्यक्रम**-छात्राध्यापकों को स्कूलों में प्रशिक्षण अभ्यास शुरू करने से पूर्व सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण दिनांक 27.06.2019 से 10.07.2019 तक प्रदान किया गया ।

(4) **विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम**- शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.) के प्रशिक्षणार्थियों के लिए दिनांक 19.07.2019 को विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम हेतु एक दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(5) **विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम**- हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.) के प्रशिक्षणार्थियों दिनांक 22.07.2019 से 31.12.2019 तक दिल्ली के माध्यमिक विद्यालयों में जाकर विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन तथा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

(6) **स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण**- स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण शिक्षाशास्त्री के छात्र-छात्राओं के लिए पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। यह प्रशिक्षण दिल्ली राज्य भारत स्काउट एवं गाइड की ओर से उनके कैम्पिंग ग्राउण्ड में दिया जाता है। प्रारम्भिक प्रशिक्षण डे कैम्प के रूप में होता है। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के तृतीय सेमेस्टर दिनांक 17.12.2019 से 23.12.2019 तक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(ग) शिक्षाचार्य (एम.एड्.) की गतिविधियाँ

(1) कक्षा-संगोष्ठी-

शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के विद्यार्थियों के लिए प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में प्रत्येक सप्ताह में एक कक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी हेतु विषयों की घोषणा एक सप्ताह पूर्व की जाती है। प्रत्येक विद्यार्थी को पूरे सत्र में पत्र प्रस्तुत करने होते हैं। संगोष्ठी से सम्बन्धित सभी कार्य जैसे संयोजन, प्रतिवेदन लेखन, संगोष्ठी व्यवस्था तथा धन्यवाद ज्ञापन इत्यादि विद्यार्थियों के द्वारा ही किया जाता है।

(2) सत्रीय कार्य-

प्रत्येक वर्ष शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के विद्यार्थियों द्वारा पूरे सत्र में कई कार्यक्रम सम्पन्न किए जाते हैं। इस वर्ष भी शिक्षाचार्य (एम.एड्.) छात्रों द्वारा उनके पाठ्यक्रमानुसार दोनों सेमेस्टरों में सत्रीय कार्य सम्पन्न किए गए।

(3) मनोविज्ञान परीक्षण एवं प्रयोग-

शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के छात्रों द्वारा प्रथम सेमेस्टर में चार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा प्रयोगों को सम्पन्न कर लिखित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

(4) विभागीय प्रकाशन-

शिक्षाशास्त्र संकाय द्वारा विभागीय पत्रिका 'शिक्षाज्योति' सत्र (2019-20) का प्रकाशन किया गया ।

शिक्षण अधिगम केन्द्र

भारत सरकार की बारहवीं परियोजना के अन्तर्गत **पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन** एक केन्द्रीय प्रायोजित परियोजना है जिसका लक्ष्य शिक्षा के सभी स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च) के शैक्षिक विकास में गुणवत्ता को सुनिश्चित करना है। **मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग** की इस बहु-आयामी परियोजना के अन्तर्गत **श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली** के शिक्षाशास्त्र विभाग में शिक्षण अधिगम केन्द्र को स्वीकृति प्रदान की गई। इस केन्द्र का उद्घाटन विद्यापीठ के माननीय कुलपति **प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय** की गरिमामयी उपस्थिति में **पद्म श्री रामबहादुर राय** (अध्यक्ष-इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली) के कर कमलों द्वारा दिनांक **२४ अक्टूबर, २०१७** को किया गया। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य भाषा शिक्षा विशेषकर संस्कृत से जुड़े अध्यापक, अध्यापक शिक्षक एवं शोधार्थियों में शिक्षण अधिगम प्रणालियों के नियोजन, अभिकल्पन, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन हेतु अपेक्षित कुशलताओं का विकास एवं संवर्द्धन करना है। केन्द्र के सुचारु संचालन हेतु **परामर्शदात्री बोर्ड, आन्तरिक निगरानी समिति एवं कार्यक्रम नियोजन समिति** का गठन किया गया। इस केन्द्र की अध्यक्षा **प्रो. अमिता पाण्डेय भारद्वाज** हैं। तृतीय चरण में केन्द्र द्वारा 13 कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक आयोजन किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है:-

केन्द्र द्वारा तृतीय चरण में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण
(दिनांक ०१.०४.२०१९ से ३१.०३.२०२० पर्यन्त)

क्र. सं.	संगोष्ठी /कार्यशाला/सम्मेलन का विषय	दिनांक	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
1.	संकाय अनुबोधन कार्यक्रम	22 अप्रैल से 22 मई, 2019	एक मासिक	20
2.	क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा क्षमता संवर्द्धन	24 से 26 जून, 2019	त्रि दिवसीय	33
3.	अधिगम परिणाम आधारित परीक्षण पद रचना	08 से 12 जुलाई, 2019	पंच दिवसीय	36
4.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2019: भाषा एवं अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ में संवाद एवं सुझाव	25-26 जुलाई, 2019	द्वि दिवसीय	39
5.	माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण हेतु छात्राध्यापक संदर्शिका प्रारूप निर्माण	26 से 28 अगस्त, 2019	त्रि दिवसीय	7 आमंत्रित
6.	माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण हेतु छात्राध्यापक संदर्शिका पाठ्यवस्तु निर्माण	16 से 20 सितम्बर, 2019	पंच दिवसीय	13 आमंत्रित

7.	मोबाइल आधारित शिक्षण एवं अधिगम	14-16 अक्टूबर, 2019	त्रि दिवसीय	31
8.	संकाय अनुबोधन कार्यक्रम	5 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 2019	एक मासिक	31
9.	माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण हेतु छात्राध्यापक संदर्शिका समीक्षा	16-20 दिसम्बर, 2019	पंच दिवसीय	11 आमंत्रित
10.	अभिकल्पन, विकास, एवं परिदान: स्वयं द्वारा ऑनलाइन कोर्स	6-10 जनवरी, 2020	पंच दिवसीय	32
11.	अधिगम प्रबन्धन प्रणाली निर्माण एवं प्रयोग	22-24 जनवरी, 2020	त्रि दिवसीय	25
12.	रचनावादी पाठ योजना एवं शिक्षण रचना युक्तियाँ	10 से 20 फरवरी, 2020	दस दिवसीय	40
13.	ऑनलाइन आकलन उपकरण एवं प्रक्रियाएँ	2-4 मार्च, 2020	त्रि-दिवसीय	27

राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र-

भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षण अधिगम केन्द्र को वर्ष 2019 के लिए भी संस्कृत शिक्षण शास्त्र विषय पर स्वयं (SWAYAM) के माध्यम ऑनलाइन पुनश्चर्या कार्यक्रम ARPIT- 2019 कोर्स के लिए कोर्स निर्माण एवं संचालन हेतु राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में अधिसूचित किया। कोर्स के 40 मॉड्यूल के अभिकल्पन एवं विकास के संदर्भ में केन्द्र द्वारा माननीय कुलपति **प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी** की अध्यक्षता में **'संस्कृत शिक्षण शास्त्र अर्पित २०१९ मॉड्यूल्स प्रारूप एवं विषयवस्तु'** विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 11 सितम्बर, 2019 को किया गया। इस चार माह के कोर्स के 40 माड्यूल्स का अभिकल्पन चतुर्थ कोष्टिक उपागम यथा ई-ट्यूटोरियल, ई-टेक्ट, परिचिर्चा मंच एवं आकलन पर किया गया तथा इसमें 20 घण्टे की वीडियो एवं 20 घण्टे की ई-सामग्री का निर्माण किया गया। इस कार्यक्रम का प्रारंभ 01 अक्टूबर, 2019 को हुआ जिसमें 608 अधिगमकर्ता पंजीकृत हुए। इस कोर्स की परीक्षा नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (NTA) द्वारा 16 फरवरी, 2020 को ऑनलाइन माध्यम आयोजित की गई। यह कोर्स 31 जनवरी, 2020 को पूर्ण हुआ।

अंशकालोन पाठ्यक्रम (स्ववित्तपोषित) में प्रविष्ट छात्रों की सूची

पाठ्यक्रम		सामान्य		अनु. जा		अनु.ज.जा		विकलांग		पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		विदेशी		आर्थिक कमजोर वर्ग		कुल		
		पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	पु	स्त्री	कुल
षाण्मासिक ज्योतिष प्रवेशिका एक सत्रीय		26	5	-	2	-	1	-	-	-	1	-	-	-	1	-	-	26	10	36
एक वर्षीय ज्योतिष प्राज्ञ डिप्लोमा पाठ्यक्रम दो सत्र		30	8	-	-	-	-	1	-	-		-	-	-	-	-	-	31	8	39
द्विवर्षीय ज्योतिभूषण एडवांस डिप्लोमा चार सत्र	प्रथम सत्र	14	8	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	14	8	22
	द्वितीय सत्र	8	3	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	8	4	12
एक वर्षीय एस्ट्रोलॉजी (भैषज्य ज्योतिष) डिप्लोमा दो सत्र		9	5	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	9	5	14
षाण्मासिक वास्तुशास्त्र प्रमाण पत्रीय पाठ्यक्रम एक सत्रीय		5	3	-	-	-	-	-	-	1		-	-	-	-	-	-	6	3	9
एक वर्षीय वास्तुशास्त्र डिप्लोमा		3	1	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	3	1	4
वास्तुशास्त्र पी.जी. डिप्लोमा (द्विवर्षीय)	प्रथम सत्र	7	1	-	-	-	-	-	-	1		-	-	-	-	-	-	9	1	10
	द्वितीय सत्र	7	1	-	-	-	-	1	-	-		-	-	-	-	-	-	8	1	9
वास्तुशास्त्र एडवांस डिप्लोमा (द्विवर्षीय)		-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
षाण्मासिक योग प्रमाण पत्रीय		8	9	-	-	-	-	-	-	2		-	-	-	-	-	-	10	11	21
पी.जी. योग डिप्लोमा एक वर्षीय		39	46	6	9	1	-	-	-	21		-	-	-	-	-	-	67	73	140
षाण्मासिक पौरोहित्य प्रशिक्षण प्रवेशिका		16	-	-	-	-	-	-	-	2		-	-	-	-	1	-	19	-	19
एक वर्षीय पौरोहित्य डिप्लोमा दो सत्र		29	-	-	-	-	-	-	-	1		-	-	-	-	1	-	31	-	31
षाण्मासिक संस्कृत प्रशिक्षण एवं संभाषण		-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
संस्कृत वाड्मय में प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम, एक वर्षीय		-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
एडवांस डिप्लोमा संस्कृत पत्रकारिता (त्रैमासिक)		-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-

भाषा पत्रकारिता एक वर्षीय पी.जी. डिप्लोमा	-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
षाण्मासिक जैनविद्या सर्टिफिकेट कोर्स	-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
एक वर्षीय जैनविद्या डिप्लोमा	12	28	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	12	28	40
पाण्डुलिपि-विज्ञान एवं अभिलेख प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम	-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
ऑफिस ऑटोमेशन में षाण्मासिक संगणक प्रमाण पत्रीय	-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
संगणक प्रोग्रामिंग में षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय	-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
वेब डिजाइनिंग में षाण्मासिक संगणक प्रमाण पत्रीय	-	-	-	-	-	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-	-	-
																कुल	253	156	406

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली और भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में सहमति ज्ञापन इस सिद्धान्त पर आधारित है कि संस्कृत पत्रकारिता के विशिष्ट (एडवांस्ड) त्रैमासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम को शैक्षणिक वर्ष 2017-18 से श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली में संचालित किया जायेगा। संस्कृत पत्रकारिता के विशिष्ट प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के संचालन में दोनों संस्थाओं की शैक्षणिक नीतियों का अनुपालन करते हुए पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने वाले छात्रों को प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

दिशा-निर्देशों में उल्लिखित क्रेडिट प्रणाली सभी पाठ्यक्रमों के लिए अपनाया गया है। विद्यापीठ के विभाग और संकायों को पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए प्रत्येक विषय पर दो सह-चयनित विशेषज्ञों के साथ अध्ययन मण्डल स्थापित करने का अधिकार है। जब भी, कोई विभाग इसे अद्यतन करने के लिए पाठ्यक्रम को संशोधित करने और समाज की आवश्यकता के संदर्भ में अधिक उपयोगी अनुभव करता है, तो वे पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए संबंधित विषय-वस्तु पर कार्यशाला / संगोष्ठी आयोजित करते हैं।

बोर्ड ऑफ स्टडीज द्वारा दिए गए सुझावों को विद्वत्परिषद् और प्रबंधन मण्डल के समक्ष मंजूरी के लिए रखा जाता है। आवश्यक परिवर्तन वैधानिक निकायों के निर्णय के आधार पर किए जाते हैं। विद्यापीठ और उसके विभाग पेशे या उद्योग से संबंधित बाहरी विशेषज्ञों से सलाह लेते हैं।

१४. प्रकाशन

संस्कृत वाङ्मय की प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षण, सम्पादन, प्रकाशन, और संस्कृत के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट अनुसन्धान हेतु शोध एवं प्रकाशन विभाग का गठन किया गया है । इस विभाग द्वारा त्रैमासिक शोध-पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन किया जाता है। विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित होने वाली शोध-पत्रिका 'शोधप्रभा' में संस्कृत के विशिष्ट विद्वानों के साथ-साथ नए अनुसन्धानकर्त्ताओं के शोधपत्र प्रकाशित किए जाते हैं। इस विभाग द्वारा समय-समय पर विभिन्न विषयों पर शोधगोष्ठियों, परिचर्चाओं और सम्मेलनों का भी आयोजन किया जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा शोध के सम्बन्ध में घोषित विनियम, 2009 के क्रियान्वयन हेतु विभाग द्वारा अनुसन्धान प्रविधि सम्बन्धी शिक्षण कार्य एवं शोध-छात्रों के चयन का भी कार्य किया जाता है।

शोध-प्रकाशन विभाग द्वारा वर्ष 2018-19 सत्र में जिन प्रमुख कार्यों का निष्पादन किया गया, उनका विवरण निम्नलिखित है-

(१) विद्यावारिधि सत्रीय पाठ्यक्रम का संचालन

विद्यावारिधि पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली द्वारा विद्यावारिधि प्रवेश परीक्षा दिनांक 19 मई, 2019 को आयोजित की गई, जिसमें उत्तीर्ण विशिष्टाचार्य तथा नेट, जे.आर. एफ. उत्तीर्ण 169 छात्रों ने विद्यावारिधि सत्रीय पाठ्यक्रम में भाग लिया। विद्यावारिधि सत्रीय पाठ्यक्रम शुभारम्भ सारस्वत साधना सदन के कक्ष सं. 301 में दिनांक 03 सितम्बर, 2019 को विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी की अध्यक्षता में प्रो. के. भारत भूषण, प्रो. जयकुमार उपाध्ये, प्रो. प्रेमकुमार शर्मा, प्रो. केदार प्रसाद परोहा, प्रो. अरावमुदन, प्रो. रजनी जोशी चौधरी, डॉ. आदेश कुमार, श्री आदित्य पंचोली जी के मुख्यातिथित्व में हुआ। कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी ने शोधच्छात्रों को निष्ठापूर्वक शोधकार्य करने के लिए संबोधित किया, कार्यक्रम का संचालन शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशंकर मिश्र जी ने किया। वैदिक मंगलाचरण एवं लौकिक मंगलाचरण सत्रीय पाठ्यक्रम के छात्रों ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. ज्ञानधर पाठक ने किया। कार्यक्रम की व्यवस्था डॉ. जीवनकुमार भट्टराई ने की। उक्त पाठ्यक्रम दो खण्डों में संचालित किया गया, जिनमें निम्नलिखित आचार्यों ने अध्यापन कार्य किया-

1.	प्रो. प्रेमकुमार शर्मा	वेद-वेदांग शोधसर्वेक्षण
2.	प्रो. हरेराम त्रिपाठी	दर्शनशास्त्रीय शोधसर्वेक्षण
3.	प्रो. राम सलाही द्विवेदी	व्याकरणशास्त्रीय शोधसर्वेक्षण
4.	प्रो. शिवशंकर मिश्र	शोधप्रविधि एव पाण्डुलिपिविज्ञान
5.	डॉ. आदेश कुमार	संगणकसम्प्रयोग
6.	डॉ. आदित्य पंचोली	संगणकसम्प्रयोग
7.	डॉ. अनमोल शर्मा	साहित्य-पुराण शास्त्रीय शोधसर्वेक्षण

(२) विशिष्टाचार्य (एम.फिल्) पाठ्यक्रम में शोधच्छात्रों की प्रवेश प्रक्रिया एवं संचालन

इस वर्ष विद्यापीठ द्वारा विशिष्टाचार्य (एम. फिल्) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु दिनांक 22 जून एवं 18 अगस्त, 2019 को प्रवेश परीक्षा आयोजित की गई, उसमें सफलता प्राप्त छात्रों ने पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। विशिष्टाचार्य पाठ्यक्रम का शुभारम्भ जुलाई, 2019 को शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशङ्कर मिश्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसका संयोजन डॉ. ज्ञानधर पाठक जी ने किया। मंगलाचरण विशिष्टाचार्य कक्षा के छात्रों ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जीवन कुमार भट्टराई ने किया। सत्रीय पाठ्यक्रम में शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपिविज्ञान का अध्यापन शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशंकर मिश्र द्वारा किया गया।

(३) विश्व पुस्तक मेला

विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, दिल्ली में हॉल न. 12 ए स्टॉल सं. 100 पर दिनांक 4-12 जनवरी, 2020 तक भाग लिया गया, जिसमें विद्यापीठ से अधिकृत 3 व्यक्तियों ने स्टॉल पर विक्रय एवं प्रचार-प्रसार का कार्य किया-

1. डॉ. ज्ञानधर पाठक
2. डॉ. जीवन कुमार भट्टराई
3. श्री रमेश चन्द मीणा

मेले में विद्यापीठ का प्रदर्शन अच्छा रहा, पुस्तकों का विक्रय भी अच्छा रहा। आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख प्रो. केदार प्रसाद परोहा, शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशंकर मिश्र, मानविकी विभाग के प्रो. जगदेव कुमार शर्मा, जैन दर्शन विभाग के प्रो. अनेकान्त कुमार जैन, शिक्षाशास्त्रविभाग के प्रो. एम. जयकृष्णन् अभियान्त्रिकी विभाग के अधिशासी अभियन्ता श्री रमाकान्त उपाध्याय प्रभृति विद्यापीठीय अध्यापकगण, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों ने मेले में स्टॉल पर आकर प्रोत्साहित किया। काञ्चीपुरम् पीठाधीश्वर शंकराचार्य श्री विजयेन्द्र सरस्वती महाराज, भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता श्री शाहनवाज हुसैन ने स्टाल का निरीक्षण किया। बहुतायत संख्या में प्रकाशन सूची एवं विद्यापीठ का नाम मुद्रित थैले पुस्तकों क साथ ग्राहकों को दिए गए।

(४) विश्व सम्मलन में पुस्तक प्रदर्शनी

संस्कृतभारती द्वारा आयोजित ''विश्वसम्मेलन'' छतरपुर, नई दिल्ली में दिनाङ्क 09-11 नवम्बर, 2019 तक विद्यापीठ ने प्रतिभाग कर प्रदर्शनी का आयोजन किया। विद्यापीठ की वेद-कर्मकाण्ड से सम्बन्धित यज्ञपात्रों की प्रदर्शनी स्टॉल सं. 1 तथा पुस्तक एवं विद्यापीठ डाक्यूमेन्ट्री प्रदर्शनी स्टॉल सं. 10 में आयोजित की गई। उक्त सम्मेलन में लगभग 5000 संस्कृत के विद्वानों ने भाग लिया। कई देशों के संस्कृत प्रचारकों ने भाग लिया। दिल्ली के प्राईवेट एवं सरकारी स्कूलों के अध्यापकों एवं छात्रों ने प्रदर्शनी का आनन्द लिया। प्राय: सभो संस्कृत विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने प्रदर्शनी स्थल का निरीक्षण किया। विद्यापीठ के माननीय कुलपति जी ने कई बार प्रदर्शनी स्थल का निरीक्षण किया। भारत के उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, राज्य शिक्षा मंत्री माननीय श्री संजय धोत्रे ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कार्यक्रम का समापन मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री रमेश पोखरियाल ''निशंक'' जी ने किया।

पुस्तक प्रदर्शनी के साथ-साथ पुस्तकों का विक्रय भी किया गया और प्रकाशन सूची वितरित कर विद्यापीठ और संस्कृत का प्रचार-प्रसार किया गया। विद्यापीठ के प्राय: सभी अध्यापकों एवं छात्रों ने प्रदर्शनी का दर्शन किया। संस्कृत भाषा और विद्यापीठ के विकास में प्रदर्शनी महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी। आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख

प्रो. केदार प्रसाद परोहा, शोध विभागाध्यक्ष प्रो. शिवशङ्कर मिश्र जी के निर्देशन में डॉ. ज्ञानधर पाठक, डॉ. जीवन कुमार भट्टराई एवं श्री रमेशचन्द्र मीणा ने प्रदर्शनी स्थल पर कार्य किया।

(५) आचार्य वाचस्पति उपाध्याय स्मारक व्याख्यानमाला

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के शोध विभाग द्वारा ''आचार्य वाचस्पति उपाध्याय स्मारक व्याख्यानमाला'' दिनांक 29.11.2019 को वाचस्पति सभागार में आयोजित की गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी ने की। माननीय कुलपति महोदय ने विद्यापीठ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विद्यापीठ के संस्थापक कुलपति डॉ. मण्डन मिश्र के महनीय योगदान एवं आचार्य वाचस्पति उपाध्याय के द्वारा पल्लवित विद्यापीठ को व्याख्यायित किया एवं उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने के लिए छात्रों तथा अध्यापकों को प्रेरित किया। उक्त व्याख्यानमाला में मुख्यातिथि के रूप में दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री बृजेश सेठी ने 95 प्रतिशत भारतीय शास्त्रीय आधारों पर चल रही वर्तमान न्यायिक प्रक्रिया के स्वरूप को स्वीकार किया।

सारस्वत अतिथि अधिवक्ता पूर्व अध्यक्ष, बार काउंसिल ऑफ इण्डिया श्री सूर्यप्रकाश खत्री ने न्यायिक प्रक्रिया में शास्त्रों के महत्त्व को व्याख्यायित करते हुए मंदिरों में शास्त्रीय संगीत के आयोजन पर बल दिया तथा विश्वविद्यालय में प्राचीन एवं नवीन न्यायप्रणाली पर पाठ्यक्रम बनाने, व्याख्यान आयोजित करने का सुझाव दिया। मुख्य वक्ता पूर्व धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा के राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. वाचस्पति शर्मा त्रिपाठी ने विभिन्न स्मृतियों में वर्णित न्यायिक प्रक्रिया के स्वरूप को सारगर्भित रूप मं व्याख्यायित किया जो सबके लिए लाभदायक सिद्ध हुआ। विशेष आमन्त्रित अतिथि जैनाचार्य अमर मुनि महाराज जी ने ऐसे विषय पर व्याख्यानमाला आयोजन करने हेतु विद्यापीठ का धन्यवाद किया। सम्मानित अतिथि अधिवक्ता श्री आर.एन.वत्स ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

वैदिक मंगलाचरण डॉ. सूर्यमणि भण्डारी एवं पौराणिक मंगलाचरण प्रो. आर.एस.अरावमुदन् ने किया। व्याख्यानमाला में स्वागत भाषण व्याकरण विभागाध्यक्ष प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा ने दिया। कार्यक्रम का संयोजन शोध विभागाध्यक्ष प्रो. शिवशंकर मिश्र ने किया। इस व्याख्यानमाला में आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख प्रो. केदार प्रसाद परोहा, छात्रकल्याण संकाय प्रमुख प्रो. कमला भारद्वाज, साहित्य संस्कृति संकाय प्रमुख प्रो.जयकुमार उपाध्ये, प्रो. बिहारीलाल शर्मा, प्रो. सुजाता त्रिपाठी, डॉ. ज्ञानधर पाठक, डॉ. जीवन कुमार भट्टराई, एवं विद्यापीठ के अन्य आचार्य एवं कर्मचारी गण, विशिष्टाचार्य, विद्यावारिधि सत्रीय पाठ्यक्रम के शोधच्छात्रों ने भी भाग लिया।

उक्त व्याख्यानमाला से शोधच्छात्रों ने आधुनिक न्याय प्रणाली एवं भारतीय शास्त्र परम्परा के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। यह व्याख्यानमाला भव्यतापूर्वक आयोजित की गयी। व्याख्यानमाला के आयोजन से निश्चित ही सभी लाभान्वित हुए।

(६) राष्ट्रीय पाण्डुलिपिविज्ञान-लिपिविज्ञानकार्यशाला

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के आधुनिक विद्या संकाय के अन्तर्गत शोध विभाग द्वारा आयोजित दस दिवसीया ''राष्ट्रिया पाण्डुलिपिविज्ञान- लिपिविज्ञानकार्यशाला'' का आयोजन दिनाङ्क 03/02/2020 से 14/02/2020 तक किया गया। कार्यशाला में निम्नलिखित 8 विद्वानों ने अधोलिखित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान एवं प्रशिक्षण कार्य किया। इस कार्यशाला में विद्यापीठ में पंजीकृत विद्यावारिधि एवं विशिष्टाचार्य के सत्रीय पाठ्यक्रम के छात्रों ने विशेष रूप से प्रतिभाग किया।

दिनांक	व्याख्यानकर्ता	विषय
03.02.2020	श्री दिनेश कामत	संस्कृतभाषायाः वैशिष्ट्यम्
04.02.2020	डॉ. कीर्तिकान्त शर्मा	लिपीनां परिचयः, शारदालिपेः परिचयः इतिहासश्च
05.02.2020	डॉ. कीर्तिकान्त शर्मा	शारदालिपेरभ्यासः ग्रन्थलिपेरितिहासः अभ्यासश्च
06.02.2020	डॉ. रवीन्द्र वशिष्ठ	लिपेरुद्भवः विकासश्च, ब्राह्मीलिपेरितिहासः अभ्यासश्च
07.02.2020	डॉ. विरेन्द्र वांगडु	सचित्रपाण्डुलिपीनां परिचयः
10.02.2020	प्रो. सुदीप कुमार जैन	पाण्डुलिपियों का क्रमिकविकास, पाण्डुलिपि वैविध्य परिचय
11.02.2020	श्री हरिकिशन शर्मा	Sanskrit in 21st Century
12.02.2020	प्रो. रमाकान्त पाण्डेय	पाठसम्पादनम्, मातृकासम्बद्धपारिभाषिकपदानां परिचयः
13.02.2020	प्रो. रमाकान्त पाण्डेय	हस्तप्रतिकृतिषु दोषकारणानि दोषपरिहारश्च
14.02.2020	डॉ. संघमित्रा बासु	पाण्डुलिपिभाण्डागारेष्वपलब्धाः पाण्डुलिपयः

कार्यशाला का उद्घाटन विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी की अध्यक्षता में एवं संस्कृत भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री दिनेश कामत जी के मुख्यातिथित्व तथा विद्यापीठ की कुलसचिव डॉ. अलका राय के सारस्वत अतिथित्व में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन में अतिथियों का स्वागत दर्शनसंकाय प्रमुख प्रो. हरेराम त्रिपाठी एवं धन्यवाद ज्ञापन आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख प्रो. केदार प्रसाद परोहा ने किया। शोधच्छात्रों द्वारा वैदिक एवं पौराणिक मंगलाचरण किया गया। उद्घाटन सत्र का संचालन शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशङ्कर मिश्र ने किया। कार्यशाला में प्रतिदिन 90-90 मिनट के दो विशिष्ट व्याख्यान विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए।

कार्यशाला का समापन कार्यक्रम विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी की अध्यक्षता में, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की निदेशिका डॉ. संघमित्रा बासु के मुख्यातिथित्व में, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर के प्रो. रमाकान्त पाण्डेय के विशिष्टातिथित्व में सम्पन्न हुआ। समापन कार्यक्रम का संचालन शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशङ्कर मिश्र ने किया। समापन समारोह के अतिथियों का स्वागत भाषण शोधसहायक डॉ. ज्ञानधर पाठक ने किया। धन्यवाद ज्ञापन आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख प्रो. केदार प्रसाद परोहा ने किया। समापन कार्यक्रम में छात्रों को कार्यशाला का प्रमाण पत्र माननीय कुलपति जी, मुख्यातिथि डॉ. संघमित्रा बासु, संकाय प्रमुख केदार प्रसाद परोहा, शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशङ्कर मिश्र ने प्रदान किया। इन दोनों अवसरों पर विद्यापीठ के आचार्यगण उपस्थित रहे, कार्यशाला के संयोजन में शोधविभाग के सहयोगी प्रूफ रीडर डॉ. जीवन कुमार भट्टराई ने पूर्ण सहयोग दिया। कार्यशाला के समस्त व्याख्यान स्वर्णजयन्ती सदन क भूतल सभागार में आयोजित किए गए। उक्त कार्यशाला का संयोजन शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशङ्कर मिश्र द्वारा सम्पन्न किया गया।

(७) शोधप्रभा पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन

शोधप्रकाशनपरामर्शदात्रीसमिति के निर्देशानुसार शोधप्रभासम्पादकमण्डल के द्वारा प्रकाशनार्थ तथा समीक्षक विद्वानों द्वारा संस्तुत निर्दिष्ट निबन्धों एवं उनके सुझावों के अनुसार शोधविभागाध्यक्ष प्रो. शिवशंकर मिश्र जी के सम्पादकत्व में एवं शोधसहायक डॉ. ज्ञानधर पाठक जी के सहसम्पादकत्व में 4 अंकों का प्रकाशन किया गया। जुलाई, 2019 के अंक से पत्रिका के आकार-प्रकार में परिवर्तन किया गया। 112 पृष्ठों से बढ़ाकर 160 पृष्ठ की गई तथा आवरण पृष्ठ बहुरंगी किया गया, साईज 20x30/8 के स्थान पर 20x26/8 किया गया। शोधपत्रिका विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के केयर लिस्ट में अपनी गुणवत्ता के कारण अपना स्थान बनाए हुए हैं। इस वर्ष प्रकाशित निबन्धों का विवरण निम्न है-

क्र.सं. अंक	कुल प्रकाशित शोध निबन्ध	शोधच्छात्र	विद्यापीठीय-अध्यापक	बाह्यविद्वान्
1.शाधप्रभा अक्टूबर, 2018	12 निबन्ध	5	4	5
2.शोधप्रभा जनवरी, 2019	13 निबन्ध	4	4	5
3.शोधप्रभा अप्रैल, 2019	13 निबन्ध	4	4	5
4.शोधप्रभा जुलाई, 2019	16 निबन्ध	4	4	5
कुल	54	8	19	27

इस प्रकार कुल 54 निबन्धों का प्रकाशन किया गया, जिसमें 8 शोधच्छात्रों के 19 विद्यापीठीय-अध्यापकों एवं 27 बाह्यविद्वानों के शोधनिबन्ध प्रकाशित किए गए। शोधविभागाध्यक्ष डॉ. शिवशंकर मिश्र जी के सम्पादकत्व में डॉ. ज्ञानधर पाठक एवं डॉ. जीवनकुमार भट्टराई द्वारा सम्पादन एवं संशोधन का कार्य किया गया।

(८) सम्पादन एवं प्रकाशन

संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण के निमित्त विद्यापीठ द्वारा इस वर्ष निम्नलिखित का प्रकाशन किया गया-

1. वास्तुशास्त्रविमर्श दशम पुष्प
2. शोधप्रभा अक्टूबर, 2018
3. शोधप्रभा जनवरी, 2019
4. शोधप्रभा अप्रैल, 2019
5. शोधप्रभा जुलाई, 2019
6. विद्यापीठवार्ता (अक्टूबर-दिसम्बर, 2018)
7. विद्यापीठवार्ता (जनवरी-मार्च, 2019)
8. विद्यापीठवार्ता (अप्रैल-जून, 2019)
9. विद्यापीठवार्ता (जुलाई-सितम्बर, 2019)
10. विद्यापीठ पंचाग (संवत्- 2076)

(९) विद्यापीठवार्ता का प्रकाशन

विद्यापीठ की गतिविधियों से संस्कृत जगत् को निरन्तर परिचित कराने के लिए त्रैमासिक विद्यापीठवार्ता प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें विद्यापीठ के प्रत्येक विभाग में किए गए विशिष्ट कार्यो का उल्लेख किया जाता है। यह विद्यापीठ का त्रैमासिक संस्कृत भाषा में निबद्ध समाचार पत्र है। इसके सम्पादक शोध-विभागाध्यक्ष प्रो. शिवशंकर मिश्र जी हैं। सहसम्पादक शिक्षाशास्त्रविभाग के सहायकाचार्य डॉ. परमेश कुमार शर्मा जी हैं। इसके संयोजन का कार्य प्फ रीडर डॉ. जीवन कुमार भट्टराई द्वारा किया गया। इस वर्ष इसके चारों अंकों को प्रकाशित कर संस्कृत जगत् के विशिष्ट विद्वानों एवं संस्कृतानुरागियों को उपलब्ध कराया गया।

(१०) ग्रन्थ विक्रय

विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों, शोधप्रभा, पञ्चाङ्ग, भैषज्यज्योतिषमंजूषा एवं वास्तुशास्त्रविमर्श के विक्रय के साथ-साथ मन्त्रालय के पुनर्मुद्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत मुद्रित ग्रन्थों का विंक्रय भी किया जाता हैं तथा शोधप्रभा की वार्षिक सदस्यता भी सदस्यों से प्राप्त की जाती है। इस वर्ष मन्त्रालय प्रकाशन की कुल विक्रय राशि रू. 120623/- तथा विद्यापीठ प्रकाशन, पंचांग, वास्तुशास्त्रविमर्श, भैषज्यज्योतिषमञ्जूषा, शोधप्रभा एवं शोधप्रभा सदस्यता की विक्रय राशि रू. 149724/- इस प्रकार कुल विक्रय राशि रू. 270347/- प्राप्त हुई।

(११) पाण्डुलिपि संग्रहालय

विद्यापीठ में पाण्डुलिपि संग्रहालय है, जिसमें विभिन्न विषयों से सम्बन्धित 1697 पाण्डुलिपियाँ हैं । ये पाण्डुलिपियाँ संस्कृत साहित्य की विभिन्न शाखाओं- वेद, उपनिषद्, पुराण, ज्योतिष, व्याकरण, वेदान्त, सांख्ययोग, न्याय, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, साहित्य, संगीत, एवं आयुर्वेद आदि से सम्बन्धित हैं। देवनागरी लिपि की पाण्डुलिपियों का सूचीसंग्रह 'विशदपाण्डुग्रन्थसूची भाग-1' प्रकाशित किया गया है ।

१५. विभिन्न संगोष्ठियाँ एवं स्मारक व्याख्यानमालाएँ

सत्र 2019-20 में निम्नलिखित संगोष्ठियों एवं स्मारक व्याख्यानमालाओं का आयोजन विद्यापीठ के विभागों द्वारा किया गया:-

वित्तीय वर्ष २०१९-२० में आयोजित व्याख्यानमालाएँ			
क्र.सं.	नाम	आयोजन दिवस	संयोजक का नाम
1	पद्मश्री मण्डन मिश्र स्मारक व्याख्यानमाला	24.09.2019	प्रो० कमला भारद्वाज-छात्र कल्याण संकाय प्रमुख
2	आचार्य वाचस्पति उपाध्याय स्मारक व्याख्यानमाला मुख्य वक्ता: प्रो. वाचस्पति शर्मा त्रिपाठी	29.11.2019	प्रो० शिवशंकर मिश्र-शोध विभागाध्यक्ष
3	पं० कल्याणदत्त शर्मा स्मारक व्याख्यानमाला मुख्य वक्ता: प्रो. ओंकारनाथ चतुर्वेदी	19.02.2020	प्रो० प्रेम कुमार शर्मा-वेद वेदांग संकाय प्रमुख

4	आचार्य गौरीनाथ शास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला बाह्य विद्वान: प्रो. चमूकृष्ण शास्त्री	21.02.2020	प्रो0 के. अनन्ता-अद्वैत वेदांत विभाग
5	आचार्य रमाकान्त उपाध्याय स्मारक व्याख्यानमाला बाह्य विद्वान: प्रो. राम किशोर त्रिपाठी	24.02.2020	प्रो0 मारकण्डेय नाथ तिवारी, सांख्ययोग विभाग

वर्ष २०१८-१९ में आयोजित संगोष्ठियाँ/कार्यशाला

क्र.सं.	संयोजक/संकाय	संगोष्ठी/कार्यशाला का विषय	अवधि
1	प्रो0 सुधांशु भूषण पंडा, धर्मशास्त्र विभाग	**कार्यशाला** विषय: 'व्रतपर्वोत्सवनिर्णयहेतु'	22-01-2020 से 24-01-2020 तक
2	प्रो0 के. भारत भूषण संकाय प्रमुख-शिक्षाशास्त्र संकाय	**कार्यशाला** विषय: 'पंचदिवसव्यापिनी अध्यापकशिक्षा पाठ्यक्रम पुनरीक्षण कार्यशाला'	24-02-2020 से 28-02-2020 तक
3	प्रो0 बिष्णुपद महापात्र-न्याय विभाग	**राष्ट्रीय कार्यशाला** विषय: 'सृष्टिविमर्श'	29-02-2020
4	डॉ0 अरविन्द कुमार, साहित्य विभाग	**राष्ट्रीय संगोष्ठी** विषय: 'रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना'	19-02-2020

१६. अध्ययन पाठ्यक्रम

विद्यापीठ निम्नलिखित पूर्णकालिक एवं अंशकालिक पाठ्यक्रमों का सञ्चालन, अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था तथा परीक्षोपरान्त छात्रों को उपाधि प्रदान करता है ।

नियमित पाठ्यक्रम

कक्षा	वेद-वेदांग संकाय	दर्शन संकाय	सहित्य एवं संस्कृति संकाय	शिक्षाशास्त्र संकाय
	विषय	विषय	विषय	
शास्त्री (त्रिवर्षीय) आचार्य (द्विवर्षीय) विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) विद्यावारिधि (पीएच.डी.)	शुक्लयजुर्वेद, पौरोहित्य, धर्मशास्त्र, नव्यव्याकरण, प्राचीन व्याकरण, सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र	प्राचीनन्याय, नव्यन्याय, सर्वदर्शन, सांख्ययोग, अद्वैतवेदान्त, विशिष्टाद्वैत वेदान्त, जैनदर्शन, मीमांसा	साहित्य, पुराणेतिहास, प्राकृत	शिक्षाशास्त्री, शिक्षाचार्य, विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि

प्रमाणपत्रीय, डिप्लोमा एवं एडवांस डिप्लोमा स्ववित्तपोषित अंशकालिक पाठ्यक्रमः-

प्रमाणपत्रीय (षाणमासिक)	डिप्लोमा (एक वर्षीय)	एडवांस डिप्लोमा (द्विवर्षीय)
1. ज्योतिष प्रवेशिका 2. वास्तुशास्त्र प्रमाणपत्रीय 3.योग प्रमाणपत्रीय 4. पौरोहित्य प्रशिक्षण 5. संस्कृत प्रशिक्षण एवं सम्भाषण पाठ्यक्रम 6. संस्कृत वाङ्मय प्रमाणपत्रोय 7. ऑफिस आटोमेशन प्रमाणपत्रीय 8. संगणक प्रोग्रामिंग प्रमाणपत्रीय 9. वेब डिजाइनिंग प्रमाणपत्रीय 10. जैनविद्या प्रमाणपत्रीय	1. ज्योतिप्राज्ञ डिप्लोमा 2. मेडिकल एस्ट्रोलॉजी डिप्लोमा 3. वास्तुशास्त्र डिप्लोमा 4. वास्तुशास्त्रीय पी.जी. डिप्लोमा 5. पी.जी. योग डिप्लोमा 6. पौरोहित्य डिप्लोमा 7. संस्कृत भाषा पत्रकारिता पी.जी. डिप्लोमा 8. जैनविद्या डिप्लोमा	1. ज्योतिषभूषण एडवांस डिप्लोमा 2. वास्तुशास्त्र एडवांस डिप्लोमा

१७. छात्रवृत्ति

उद्‌दश्यः पारम्परिक पद्धति में संस्कृत वाङ्मय की शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से छात्रों को निम्नलिखित छात्रवृत्तियां दी जाती हैं :-

क्रमांक	कक्षा	वर्ष	छात्रवृत्तियों की संख्या	छात्रवृत्ति राशि
1	शास्त्री (बी.ए.)	प्रथम वर्ष	120	800/-रु0 प्रति माह
2	शास्त्री (बी.ए.)	द्वितीय वर्ष	120	800/-रु0 प्रति माह
3	शास्त्री (बी.ए.)	तृतीय वर्ष	120	800/-रु0 प्रति माह
4	शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.)		60	800/-रु0 प्रति माह
5	आचार्य (एम.ए.)	प्रथम वर्ष	25 प्रति विषय	1000/-रु0 प्रति माह
6	आचार्य (एम.ए.)	द्वितीय वर्ष	25 प्रति विषय	1000/-रु0 प्रति माह
7	शिक्षाचार्य (एम.एड्.) (शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम में आनुषंगिक राशि)		13	1000/-रु0 प्रति माह 750/- रु0
8	विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) (विशिष्टाचार्य पाठ्यक्रम में आनुषंगिक राशि)		20	1500/-रु0 प्रति माह 2000/-रु0 प्रति वर्ष
9	विद्यावारिधि (प्रति एक विषय)(पी-एच.डी.) (विद्यावारिधि पाठ्यक्रम में आनुषंगिक राशि)		20	5000/-रु0 प्रति माह 3000/-रु0 प्रति वर्ष

१८. परीक्षा-विभाग

विद्यापीठ शास्त्री, आचार्य, शिक्षाचार्य तथा विशिष्टाचार्य की परीक्षाएं वर्ष में दो बार सत्रीय परीक्षा आयोजित करता है । शिक्षाशास्त्री की वार्षिक परीक्षा आयोजित होती है। वर्ष 2018-19 में विभिन्न परीक्षाआं में प्रविष्ट एवं उत्तीर्ण छात्रों का विवरण निम्नलिखित है-

वर्ष 2018-2019 का परीक्षा-परिणाम

कक्षा	कुल प्रविष्ट छात्र		कुल छात्र उत्तीर्ण							
			कुल (छात्र + छात्रा)				छात्रा (केवल)			
	कुल छात्र व छात्रा	केवल छात्रा	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	कुल	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रणी	तृतीय श्रेणी	कुल
शास्त्री	96	10	19	40	04	63	--	07	--	07
आचार्य	85	11	29	28	01	58	01	06	--	07
विशिष्टाचार्य	57	17	31	23	--	54	09	08	--	17
शिक्षाशास्त्री	198	93	194	--	--	194	90	--	--	90
शिक्षाचार्य	07	02	05	--	--	05	02	--	--	02

उपर्युक्त पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त विद्यापीठ में अंशकालिक, नियमित पाठ्यक्रमों ज्योतिष प्राज्ञ एवं ज्योतिषभूषण, वास्तुशास्त्र, मेडिकल एस्ट्रोलॉजी, पौरोहित्य, योग विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि की परीक्षा भो परीक्षा विभाग द्वारा सम्पन्न कराई गई ।

१९. अन्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

(क) सत्रारम्भ

विद्यापीठ में सत्रारम्भ पर प्रतिवर्ष विशेष यज्ञ का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2019-20 में विद्यापीठीय समस्त गतिविधियों के निर्विघ्न सञ्चालनार्थ शैक्षणिक शुभारम्भ के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय जी की अध्यक्षता में श्री नवचंडी दुगा यज्ञ का आयाजन किया गया। इसमें विद्यापीठ के सभी अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र उपस्थित थे।

(ख)अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

भारत सरकार के दिशा-निर्देशानुसार माननीय कुलपति महोदय जी के निर्देशन में दिनांक 21.06.2019 को विद्यापीठ में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, जिसमें योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। योगाभ्यास में अध्यापकगण, कर्मचारीगण तथा लगभग 400 छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हुए।

(ग) स्वतन्त्रता-दिवस

15 अगस्त, 2019 को विद्यापीठ में मुख्य भवन के समक्ष कुलपति महोदय द्वारा राष्ट्रीय-ध्वजारोहण समारोह संपन्न हुआ । इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह द्वारा राष्ट्रगान गाया गया । कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 09:30 बजे हुआ । सर्वप्रथम विद्यापीठ के एन.सी.सी. छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'सम्मान-गारद' का निरीक्षण कुलपति महोदय ने किया । निरीक्षण के अनन्तर शास्त्री जी की प्रतिमा पर कुलपति महोदय ने माल्यार्पण किया । समारोह में उपस्थित एन. सी. सी. के वरिष्ठ अधिकारी एवं विद्यापीठ के आचार्यों का अभिनन्दन माल्यार्पण से किया गया । कार्यक्रम में उपस्थित विद्यापीठ परिवार के सभी सदस्यों को तथा विशेष रूप से एन.सी.सी. के छात्र सैनिकों को कुलपति महोदय ने सम्बोधित किया । उन्होंने एन.सी.सी. एवं विद्यापीठ के युवा छात्रों द्वारा राष्ट्रीय एवं विद्यापीठ स्तर पर किए गए रचनात्मक कार्यों की सराहना की। इनसे राष्ट्र के गौरव की अभिवृद्धि एवं रक्षा के लिए संस्कृत के माध्यम से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का आग्रह किया। कुलपति जी ने एन. सी. सी. के छात्रों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करने की घोषणा की ।

(घ) संस्कृत-सप्ताह एवं संस्कृत-दिवस

विद्यापीठ में दिनांक 12.08.2019 से 19.08.2019 तक प्रो. कमला भारद्वाज की अध्यक्षता में संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया। संस्कृत दिवस का आयोजन दिनांक 15.08.2019 को किया गया।

(ड.) हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 01/09/2019 से 15/09/2019 तक प्रो. जगदेव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस आयोजन के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं के लिए, लोक गीतगायन प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता आयाजित की गई।

कर्मचारी वर्ग के लिए हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रतिरूप लेखन, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता एवं भाषण प्रतियोगिता श्रुतलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई।

(च) सतर्कता जागरूकता सप्ताह

दिनांक 28.10.2019 से 04.11.2019 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. नागेन्द्र झा की अध्यक्षता में शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं के लिए शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। छात्र-छात्राओं के लिए एक सतर्कता जागरूकता व्याख्यान प्रो. रचना वर्मा मोहन, मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा दिया गया । इसके अतिरिक्त छात्र-छात्राओं के लिए निबन्ध लेखन एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

(छ) श्री लाल बहादुर शास्त्री जन्म-दिवस

विद्यापीठ में 2 अक्टूबर का दिन श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्म-दिवस के रूप में मनाया जाता है । विद्यापीठ के आचार्यों द्वारा सामूहिक श्रीमद्भगवद्गीता पाठ किया गया। तदुपरान्त विद्यापीठ में प्रतिष्ठित शास्त्री जी की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित की गई ।

(ज) स्वच्छता पखवाड़ा

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 150वें जन्मोत्सव 02 अक्टूबर, 2019 तक भारत को पूर्णत: स्वच्छ बनाने की दिशा में दिनांक 02 अक्टूबर, 2014 से माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का प्रारम्भ किया गया। विद्यापीठ द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा दिनांक 16.01.2020 से 31.01.2020 तक मनाया गया जिसमें प्रो. रमेश प्रसाद पाठक द्वारा छात्र-छात्राओं के बीच व्यक्तिगत स्वच्छता, शारीरिक, मानसिक, पर्यावरण एवं सामाजिक आदि पहलुओं पर जागरूकता विकसित करने के लिए एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। विद्यापीठ के कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं ने महात्मा गांधी के दृष्टिकोण को साकार करने के उद्देश्य से विद्यापीठ के आस-पास के क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

(झ) राष्ट्रीय एकता दिवस

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार राष्ट्रीय एकता दिवस दिनांक 31.10.2019 को मनाया गया। इस अवसर पर विद्यापीठ के शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं के लिए माननीय कुलपति की अध्यक्षता में एक शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त रन-फार यूनिटी भी विद्यापीठ के गेट नम्बर-2 से शुरू की गई।

(ञ) राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

दिनांक 11.11.2019 को विद्यापीठ में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य में प्रो. रमेश प्रसाद पाठक, शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा समस्त अध्यापकों एवं कर्मचारियों के लिए एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रो. कमला भारद्वाज, छात्र कल्याण संकायप्रमुख की अध्यक्षता में छात्र-छात्राओं के लिए एक वाद-विवाद प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

(ट) कम्प्यूटर हिन्दी ट्रेनिंग कार्यशाला

दिनांक 15.11.2019 को विद्यापीठ के गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए प्रशिक्षण देने हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(ठ) संविधान दिवस

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार दिनांक 26.11.2019 को कुलपति महोदय की अध्यक्षता में संविधान दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलपति महोदय द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा गया तथा भारतीय संविधान में उल्लेखित भारतीय नागरिकों के मौलिक अधिकारों एवं कर्तव्य के प्रति समस्त विद्यापीठ के समस्त अध्यापकगण, कर्मचारी तथा छात्र-छात्राओं को अवगत कराया गया।

इसके अतिरिक्त प्रो. जगदेव कुमार शर्मा, प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), श्री अजय कुमार टंडन, उप-कुलसचिव (लेखा एवं विकास) एवं श्रीमती भारती त्रिपाठी, सहायक कुलसचिव (प्रशासन-।) द्वारा छात्र-छात्राओं के लिए एक वाद-विवाद प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

(ड) फिट इंडिया कार्यक्रम

फिट इंडिया कार्यक्रम दिनांक 06.01.2020 को मनाया गया। इस अवसर पर प्रो. नागेन्द्र झा द्वारा स्वर्ण जयंती सदन के भूतल में स्वास्थ्य जागरूकता, महत्व एवं संबंधित गतिविधियों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर समस्त अध्यापक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारी उपस्थित थे।

(ढ) राष्ट्रीय मतदाता दिवस

दिनांक 24.01.2020 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर शिक्षाशास्त्र विभाग के प्राफेसर नागेन्द्र झा की अध्यक्षता में समस्त अध्यापकों एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए एक मतदाता प्रतिज्ञा का आयोजन किया गया।

(ण) गणतन्त्र-दिवस

26 जनवरी, 2020 को विद्यापीठ परिसर में मुख्य भवन के समक्ष कुलपति महोदय ने गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय-ध्वजाराहण किया । इस अवसर पर कुलपति महोदय ने एन.सी.सी. परेड का निरीक्षण किया तथा लाल बहादुर शास्त्री जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया । उपस्थित छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कुलपति महोदय ने देश के लिए प्राणों की आहूति देने वाले शहीदों का पावन स्मरण किया तथा इन शहीदों द्वारा प्रदर्शित पथ पर चलने का आग्रह युवा कैडेटों से किया । राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों में एन.सी.सी. कैडेट की आवश्यकता को भी उन्होंने रेखांकित किया । उन्होंने शस्त्र एवं शास्त्र के प्रशिक्षण को अनिवार्य मानते हुए इन दोनों प्रशिक्षणों से आप्त भारतीय परम्परा को श्रद्धा के साथ स्मरण किया ।

(त) सरस्वती-पूजन-महोत्सव

संवत् 2076 माघ शुक्ल वसन्त पंचमी के शुभ अवसर पर दिनांक 30.01.2020 को कुलपति महोदय की अध्यक्षता में सरस्वती की प्रतिमा का शास्त्रीय विधि-विधान से स्थापन एवं पूजन किया गया । साथ ही सारस्वत यज्ञ का आयोजन प्रो. हरिहर त्रिवेदी, अध्यक्ष छात्रावास प्रवेश/प्रबंध समिति एवं पूर्व वेद वेदांग संकाय प्रमुख के निर्देशानुसार छात्रावास अधिष्ठाता डॉ. सुंदर नारायण झा के सहयोग एवं पौरोहित्य विभागाध्यक्ष प्रो. रामराज उपाध्याय के आचार्यत्व में सम्पन्न किया गया।

(थ) मातृभाषा दिवस

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार दिनांक 21.02.2020 को मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। इस समारोह के अवसर पर प्रो. कमला भारद्वाज, छात्र-कल्याण संकायप्रमुख, डॉ. परमेश कुमार शर्मा एवं डॉ. दिनेश कुमार यादव के निर्देशन में छात्र-छात्राओं के लिए व्याख्यान, भाषण एवं गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

(द) क्रीडा प्रतियोगिता एवं स्पर्धा

छात्रों के स्वास्थ्य शारीरिक और मानसिक विकास क लिए विभिन्न खेलों एवं खेल प्रतिस्पधाओं का विशेष महत्व है। इसे ध्यान में रखते हुए विद्यापीठीय छात्र-छात्राओं के लिए एक स्वतन्त्र क्रीडा अनुभाग है, जिसके द्वारा विभिन्न खेलों की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हं। मुख्यत: धावन पथ, क्रिकेट, योगासन, मल्लयुद्ध, कबड्डी, बैडमिंटन, वालीवाल, आदि खेलों का आयोजन किया गया जिसमें 600 से अधिक छात्र छात्राओं ने भाग लिया। COVID-19 की समस्या के कारण छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत नहीं किया गया।

श्री ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय की टीम ने राष्ट्रीय विश्वविद्यालय खेलों के वार्षिक कैलेण्डर, 2019-20 के अनुसार एसोसिएशन आंफ इंडियन यूनिवर्सिटीज़ (इंटर यूनिवर्सिटी स्पोर्ट्स बोर्ड) और नार्थ ज़ोन इंटर यूनिवर्सिटी में भाग लिया है ।

श्री हर्ष (शास्त्री छात्र) को अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय पुरुष फ्री कुश्ती स्टाइल और ग्रीको रोमन शैली, 2019-20 में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान और प्राद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा) में कांस्य पदक और प्रथम खेलों इंडिया विश्वविद्यालय गेम, 2019-20, कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (KIIT), भुवनेश्वर, ओडिशा में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया

(ध) एन.सी.सी.

विद्यापीठ में एन.सी.सी. प्रशिक्षण व्यवस्था के निरीक्षणार्थ एवं सञ्चालनार्थ एन.सो.सी अधिकारी के रूप में विद्यापीठ की प्रो. मीनू कश्यप एवं डॉ अभिषेक तिवारी कार्यरत हैं।

- श्री सुधांशु शर्मा ने थल सेना शिविर के दो कैडरों मे भाग लिया। पहला और दूसरा शिविर दिल्ली में क्रमशः 20-29 मई, 2019 तथा 19-28 जून, 2019 के बीच आयोजित किया गया था।

- कमांडिंग ऑफिसर, 7 डीबीएन द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार 21 जून, 2019 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का निरीक्षण करने के लिए विद्यापीठ को नोडल केन्द्र में नामित किया गया था, जिसमें बड़ी संख्या में विद्यापीठ और जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय के कैडेटों ने सक्रिय रूप से भाग लिया था।

- 6 कैडेटों ने 24 जुलाई, 2019 से 02 अगस्त, 2019 के बीच एन.सी.सी ग्रुप मुख्यालय, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली में पूर्व आरडीसी/सीएटीसी शिविर में भाग लिया।

- 5 कैडेटों ने एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली में 06 अगस्त, 2019 से 17 अगस्त, 2019 तक एक भारत श्रेष्ठ भारत शिविर में भाग लिया।

- 15 अगस्त, 2019 को विद्यापीठ के कैडेटों नें गार्ड ऑफ ऑनर समारोह में भाग लेकर माननीय कुलपति महोदय को सम्मान प्रदान किया।

- 07 कैडेटों ने मेरठ कैंट, उ.प्र. में दिनांक 01 सितम्बर, 2019 से 15 सितम्बर, 2019 तक आर्मी अटैचमेंट कैंप में भाग लिया।

- 21 कैडेटों ने एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली में सी.ए.टी.सी. शिविर में भाग लिया। इसके साथ ही 02 वरिष्ठों और 01 कैडेट ने आर.डी.सी. के दूसरे कैडर (24 सितम्बर, 2019 से 03 अक्टूबर, 2019) में भाग लिया।

- 04 कैडेटों ने एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली में सी.ए.टी.सी. शिविर में भाग लिया। इसके साथ ही 02 वरिष्ठों और 01 कैडेट ने आर.डी.सी. के तीसरे कैडर (03 नवम्बर, 2019 स 12 नवम्बर, 2019) में भाग लिया।

- विद्यापीठ के कैडेटों ने डीजी एन.सी.सी के निर्देशों के अनुसार स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने परिसर में और कटवारिया सराय गांव में दिनांक 01 दिसम्बर, 2019 से 15 दिसम्बर, 2019 तक स्वच्छता अभियान और अन्य गतिविधियों का संचालन किया।

- 01 कैडैट ने एन.सी.सी. भवन, रोहिणी में दिनांक 05 जनवरी, 2020 से 14 जनवरी, 2020 तक सी.ए.टी.सी. शिविर में भाग लिया।

- एस.यू.ओ. नवीन, एस.जी.टी. अक्षय कुमार तथा सी.डी.टी. पारस सुयाल ने प्रतिष्ठित गणतंत्र दिवस परेड (आर.डी.सी) में भाग लिया।

- कैडेटों ने 26 जनवरी, 2020 को गणतंत्र दिवस पर विद्यापीठ के माननीय कुलपति को विशेष गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

- लेफ्टिनेंट (डॉ.) अभिषेक तिवारी, एसोसिएट एन.सी.सी. अधिकारी, श्री.ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ ने 12 अक्टूबर, 2019 से 23 अक्टूबर, 2019 तक पेड्डापुरम (काकीनाडा ग्रुप) में आयोजित विशेष राष्ट्रीय एकता शिविर, 2019 में चयनित कैडेटों के साथ दिल्ली निदेशालय का प्रतिनिधित्व किया।

(न) अनुशासन

विश्वविद्यालय परिसर की सुरक्षा-व्यवस्था एवं छात्रों में अनुशासनप्रियता को सुदृढ़ करने के लिए कुलानुशासक उत्तरदायी होते हैं । कुलानुशासक सत्र के आरम्भ में कुलानुशासक मण्डल का गठन कुलपति जी की स्वीकृति से करते हैं । यह मण्डल सुरक्षा एवं अनुशासन से सम्बद्ध आवश्यक विषयों पर यथासमय कुलानुशासक की अध्यक्षता में विचार-विमर्श करता है। विद्यापीठ की परिचय नियमावली 39(5) के अनुसार छात्रों एवं शोधछात्रों के लिए निम्नलिखित सदस्यों से युक्त अनुशासन समिति का गठन किया गया है-

1.	कुलानुशासक	अध्यक्ष
2.	संकाय प्रमुख (छात्रकल्याण)	सदस्य
3.	सम्बन्धित संकाय प्रमुख	सदस्य
4.	सम्बन्धित विभागाध्यक्ष	सदस्य
5.	कुलपति द्वारा नामित अ.जा /ज.जा./अ.पि.वग/महिला/वि. वर्ग का एक अध्यापक (उक्त वर्ग के छात्रों से संबंधित होने पर)	सदस्य
6.	सहायक कुलसचिव/ अनुभाग अधिकारी (शैक्षणिक)	सचिव

अनुशासन मण्डल

1. प्रो. बिहारी लाल शर्मा (कुलानुशासक एवं विभागाध्यक्ष ज्योतिष)	-	अध्यक्ष
2. प्रो. नागेन्द्र झा (शिक्षा शास्त्र संकाय)	-	सदस्य
3. प्रो. के. भारत भूषण (संकाय प्रमुख शिक्षा शास्त्र)	-	सदस्य
4. प्रो. प्रेम कुमार शर्मा (संकाय प्रमुख, वेदवेदांग)	-	सदस्य

5. प्रो. हरेराम त्रिपाठी (संकाय प्रमुख, दर्शन संकाय) – सदस्य
6. प्रो. जय कुमार एन. उपाध्ये (संकाय प्रमुख, साहित्य एवं संस्कृति सकाय – सदस्य
7. प्रो. केदार प्रसाद परोहा (संकाय प्रमुख आधुनिक विद्या) – सदस्य
8. प्रो. कमला भारद्वाज (संकाय प्रमुख छात्र कल्याण) – सदस्य
9. प्रो. शुकदेव भोई (आचार्य साहित्य विभाग) – सदस्य
10.प्रो. जगदेव कुमार शर्मा (आचार्य, मानविकी विभाग) – सदस्य
11. प्रो. सदन सिंह (संपर्क अधिकारी एस.सी, एस.टी. प्रकोष्ठ) – सदस्य
12. श्री सुच्चा सिंह (सहायक कुलसचिव-शैक्षणिक) – सदस्य

नोडल अधिकारी-एंटी रैगिंग: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उच्च शिक्षण संस्थानों में रैगिंग रोकथाम नियम 2009 के अनुपालन में प्रो. बिहारी लाल शर्मा को नोडल अधिकारी, एंटी रैगिंग नियुक्त किया गया है। शैक्षणिक सत्र 2018-19 में रैगिंग से सम्बन्धित कोई भी मामला नोडल अधिकारी के संज्ञान में नहीं आया।

नोडल अधिकारी छात्र शिकायत निवारण प्रकोष्ठ: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमानुसार प्रो. बिहारी लाल शर्मा को छात्र शिकायत निवारण प्रकोष्ठ का नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। शैक्षणिक सत्र 2018-2019 में नोडल अधिकारी के संज्ञान में छात्रों से सम्बन्धित कोई भी शिकायत नहीं आई।

२०. शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पद

वर्तमान में शैक्षणिक वर्ग में 11 प्रोफेसर, 24 सह-प्रोफेसर एवं 104 सहायक प्रोफेसर तथा 01 सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के कुल 1 पद स्वीकृत हैं। गैर शैक्षणिक वर्ग में कुल 135 पद (ग्रुप-'ए'- 14 ग्रुप-'बी'- 33 एवं ग्रुप-'सी'-88 स्वीकृत है। कुलपति, कुलसचिव एवं वित्ताधिकारी के मार्गदर्शन में विद्यापीठ प्रशासन ने समस्त प्रशासकीय दायित्त्वों का निवर्हन अधिकारियों एवं सहकर्मियों की सहायता से किया है।

विद्यापीठ द्वारा रिक्त पदों पर योग्य अभ्यर्थियों की भर्ती के लिए सतत् प्रयास किया जा रहा है ।

२१. आरक्षण एवं अन्य प्रावधान

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशेष प्रकोष्ठ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशों के अनुसार विद्यापीठ में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशष प्रकोष्ठ स्थापित किया गया है। विद्यापीठ विश्वविद्यालय अनुदान आयाग एवं भारत सरकार की आरक्षण संबंधी नीतियों का अनुपालन करता है। अनुसूचित जाति/जनजाति के उम्मीदवारों को छात्रवृत्ति प्रदान करने, स्टाफ क्वार्टर और छात्रावास आबंटन में भी आरक्षण की व्यवस्था करता है। चयन एवं पदोन्नति के समय भी विद्यापीठ में आरक्षण नीति का पालन होता है। डॉ. सदन सिंह, शिक्षाशास्त्र संकाय, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के सम्पर्क अधिकारो के रूप में कार्य कर रहे हैं। उपर्युक्त सभी स्थितियों में भारत सरकार की सभी आरक्षण नीतियों को पूर्णत: लागू करने के लिए विद्यापीठ में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जाति प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक पदों एवं छात्रों के पंजीयन में भी गत वर्षों की अपेक्षा पर्याप्त सुधार हुआ है।

वर्ष के दौरान इस प्रकोष्ठ ने शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कैडर का रोस्टर रजिस्टर तैयार किया। तद्नुसार विद्यापीठ प्रशासन द्वारा बैकलॉग रिक्तियां का विज्ञापन जारी किया गया। प्रकोष्ठ द्वारा अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों के संबंध में सांख्यिकीय रिपोर्ट तैयार कर मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भेजी गया।

शैक्षणिक पदों में आरक्षण का विवरण

शैक्षणिक	पुरुष/महिला	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जन. जाति	अन्य पिछड़ी जाति	विकलांग	अल्पसंख्यक	योग
प्रोफेसर (Direct)	पुरुष	09	01	--	--	--	--	10
	महिला	--	--	--	--	--	--	--
प्रोफेसर (CAS के अन्तर्गत)	पुरुष	31	02	--	--	.	--	33
	महिला	11	02	--	--	--	--	13
सह-प्रोफेसर (Direct)	पुरुष	03	--	--	-	--	--	03
	महिला	00	--	--	--	--	--	00
सह-प्रोफेसर (CAS के अन्तर्गत)	पुरुष	10	02	--	--	01 VH	--	13
	महिला	01	--	--	--	--	--	01
सहायक प्रोफेसर	पुरुष	14	02	03	09		01	29
	महिला	08	--	--	02	--	--	10
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	पुरुष	**01**	**-**	**-**	**-**	**-**	**--**	**01**
योग		**88**	**09**	**03**	**11**	**01**	**01**	**113**

गैर-शैक्षणिक पदों में आरक्षण का विवरण

गैर-शैक्षणिक	पुरुष/महिला	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जन. जाति	अन्य पिछड़ी जाति	विकलांग	अल्पसंख्यक	योग
ग्रुप 'ए'	पुरुष	04	02	--	03	--	--	09
	महिला	03	01	--	--	--	--	04
ग्रुप 'बी'	पुरुष	10	03		05	--	--	18
	महिला	07	03	--	01	--	--	11
ग्रुप 'सी' (ग्रुप 'सी'+'डी')	पुरुष	34	13	03	15	02 (01-HH, 02-OH)	--	68
	महिला	07	--	--	02	--	--	09
योग		**65**	**22**	**03**	**26**	**03**	**--**	**119**

प्रकोष्ठ के उद्देश्य

1. विद्यापीठ में अनुसूचित जाति/जनजाति के लिए आरक्षण नीति को लागू करना ।
2. विद्यापीठ में प्रवेश एवं शैक्षणिक/गैर-शैक्षणिक पदों पर चयन के समय लागू नीतियों के आँकड़े संग्रह करना ।
3. भारत सरकार द्वारा इस उद्देश्य हेतु निर्धारित उद्दश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना ।
4. विद्यापीठ में आरक्षण नीति के लगातार लागू करने, नियन्त्रण एवं मूल्यांकन के साथ-साथ भारत सरकार की नीति एवं कार्यक्रमों के प्रभावशाली कार्यान्वयन के लिए योजना बनाना ।

- **प्रकोष्ठ के प्रमुख कार्य**

1. भारत सरकार और राष्ट्रीय अनुसूचित जाति और जनजाति आयोग के निर्णयों का अनुपालन करना एवं प्रवेश के लिए भरे जाने वाले फार्म में दी गई अनुबंधित तिथि तक अनुसूचित जाति/जनजाति की श्रेणी के छात्रों एवं विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की वार्षिक सूचनाएँ एकत्रित करना और उसके लिए आवश्यक कदम उठाना ।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति क आवेदकों की शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार के लिए आयोग द्वारा निर्धारित नीतियों के विकास एवं संशोधन के लिए सूचनाएं एवं प्रतिवेदन एकत्रित करना ।
3. भारत सरकार के आदेशों और आयोग के निर्णयों को प्रसारित करना तथा विद्यापीठीय शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पदों की नियुक्ति एवं प्रशिक्षण के लिए सूचनाएँ एकत्रित करना ।
4. एकत्रित सूचनाओं का विश्लेषण और प्रतिवेदन तैयार करना । मानव संसाधन विकास-मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अन्य प्राधिकरणों को आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु प्रतिवेदन प्रस्तुत करना ।
5. अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति के छात्रों एवं कर्मचारियों द्वारा दिए गए विद्यापीठ में प्रवश, नियुक्ति, पदोन्नति एवं अन्य स्थितियों में प्रस्तुत प्रतिवेदनों की जाँच करना ।
6. विद्यापीठ में सुधार प्रशिक्षण योजना के कार्य की जाँच करना ।
7. विद्यापीठीय अनुस्चित जाति/जनजाति के कर्मचारियों की शिकायत के लिए 'शिकायत सुधार समिति' के रूप में कार्य करना एवं उनकी शैक्षणिक एवं प्रशासनिक समस्याओं के निराकरण के लिए आवश्यक सहायता करना ।
8. विद्यापीठ में विभिन्न पदों पर अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति के आवेदकों की भर्ती के लिए रिकॉर्ड रखना ।
9. आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक अभावों से पीड़ित इन दो समुदायों में उच्च शिक्षा के विकास के लिए समय-समय पर कार्य करना ।

२२. आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ

विद्यापीठ के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गुणवत्ता को बनाए रखन तथा उसमें वृद्धि एवं संस्थागत अन्तराष्ट्रीय कार्य संस्कृति के अभ्यास के लिए आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकाष्ठ का गठन कुलपति महोदय की अध्यक्षता में किया गया है । प्रो. बिहारी लाल शर्मा, प्रोफेसर (ज्योतिष विभाग) इस प्रकोष्ठ के निदेशक हैं।

उद्‌दश्यः-

1. शैक्षिक और प्रशासनिक कार्यों के निष्पादन में सुधार हेतु चेतना, निरंतरता और उत्प्रेरक कार्यक्रम हेतु गुणवत्ता प्रणाली का विकास करना ।
2. गुणवत्ता संस्कृति एवं संस्था में उत्तम कार्य व्यवहारों के संस्थात्मिकरण का आन्तरीकरण करते हुए गुणवत्ता अभिवृद्धि की दिशा में संस्थात्मक प्रकार्यों के लिए उपायों को बढ़ावा देना ।

आई.क्यू.ए.सी. के कार्यः-

1. विविध शैक्षिक और प्रशासनिक गतिविधियों हेतु गुणवत्ता बेंचमार्क/पैरामीटर का विकास और क्रियान्वयन करना ।
2. सहभागी शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के लिए वांछित ज्ञान और तकनीकी को अपनाने हेतु गुणवत्ता शिक्षा एवं संकाय सदस्यों की सुसाध्यता के लिए विद्यार्थी केन्द्रित परिवेश के सृजन हेतु सुविधाओं को सुलभ कराना ।
3. विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा अन्य लाभ प्राप्त कत्ताओं से गुणवत्ता संबंधित सांस्थानिक प्रक्रियाओं पर परिपुष्टियों को प्राप्त करने की व्यवस्था करना ।
4. उच्च शिक्षा के विभिन्न गुणात्मक पैरामीटर के विषय में सूचना का प्रचार-प्रसार करना ।
5. गुणवत्ता परक विषयों और गुणवत्ता चक्रों की अभिवृद्धि के विषय में कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन करना ।
6. विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का प्रलेखीकरण करके गुणात्मक सुधार करना ।
7. गुणवत्ता संबंधित गतिविधियों के समन्वय हेतु संस्था की नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना, जिसमें अच्छे संव्यवहारों को ग्रहण करना और प्रचार-प्रसार करना सम्मिलित है।
8. सांस्थानिक गुणवत्ता को बनाए रखन एवं इसमें अभिवृद्धि करने के उद्‌देश्य से एमआईएस द्वारा सांस्थानिक डाटा बेस का विकास करना और उसकी देखरेख करना ।
9. गुणात्मक संस्कृति का विकास करना ।
10. निर्धारित प्रारूप में सम्बद्ध गुणवत्ता आश्वासन निकाय द्वारा गुणात्मक पैरामीटर / निर्धारक मानदण्ड पर संस्था की वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट को तैयार करना ।
11. ए.क्यू.ए.आर. पर आधारित विभिन्न इकाइयों के गुणात्मक रेडार और पदानुक्रम का द्वि-वार्षिक विकास करना ।
12. आई.क्यू.ए.सी. के साथ, प्रत्यायन के पूर्व एवं प्रत्यायन के पश्चात्, गुणवत्ता-निर्धारण, पुष्टि और वृद्धि हेतु अन्तर-क्रिया करना है ।

२३. कैरियर काउंसलिंग सेल

विद्यापीठ में कैरियर काउंसलिंग सेल की स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 11वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत की गई । छात्रों की सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए कैरियर काउंसलिंग सेल छात्रों को विभिन्न व्यवसायों में प्रवेश हेतु तैयार करने के लिए उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं, सम्प्रेषण-कौशल एवं रोजगार सम्बन्धो कौशलों को विकसित करता है । वर्तमान में डॉ. रजनी जोशी चौधरी सेल की को-आर्डिनेटर हैं।

२४. महिला अध्ययन केन्द्र

विद्यापीठ के महिला अध्ययन केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 10वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत 2006 में हुई। केन्द्र का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय ग्रन्थों का महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन एवं पुनर्विश्लेषण है। अक्टूबर 2011 तक इस केन्द्र की निदेशिका प्रो. पी. गीता थी। इसके उपरान्त प्रो. रजनी जोशी चौधरी 1 नवम्बर 2011 से केन्द्र की प्रभारी निदेशिका हैं।

सत्र 2019-2020 के अन्तगर्त केन्द्र द्वारा निम्नलिखित गतिविधियां सम्पन्न की गई -

1. शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) द्वितीय वर्ष के विद्यार्थयों के लिए एक दस दिवसीय 'जेन्डर संवेदीकरण जागरूकता' नामक फाउन्डेशन कार्यक्रम दिनांक 6 फरवरी 2020 से 20 फरवरी 2020 तक पूर्ण किया गया। शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) के सभी विद्यार्थियों ने इस कार्यशाला में अत्यन्त उत्साह एवं सक्रियता से भाग लिया क्योंकि इसमें अन्तर्क्रियात्मक शिक्षण तकनीकों का प्रयोग किया गया। इस पाठ्यक्रम की मान्यता है कि शिक्षकों में जेन्डर संवेदीकरण विकसित करने के लिए बी.एड. की कक्षा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें वे उन शिक्षण कौशलों का अभ्यास करते हैं जो उन्हें एक विद्यालय में प्रभावी शिक्षण हेतु प्रशिक्षित करते हैं। जेन्डर संवेदीकरण तथा जागरूकता कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व को सह-शिक्षा परिस्थितियों में शिक्षण हेतु अधिक प्रभावी बनाता है।

2. 'जेन्डर-संवेदीकरण तथा जागरूकता' कार्यक्रम में शिक्षण करने वाले शिक्षकों के अभिविन्यास हेतु कार्यक्रम से एक दिन पूर्व दिनांक फरवरी 2020 को एक 'प्रवर्तन-कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को कक्षा शिक्षण में संवादात्मक तकनीकों के प्रयोग हेतु अभिविन्यासित किया गया। ये शिक्षण तकनीकें मस्तिष्क-मंथन, समूह-परिचर्चा, समस्या-समाधान, पैनल परिचर्चा तथा विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुतीकरण इत्यादि थी। इन शिक्षकों को आंकलन तकनीकों के विषय में अभिविन्यासित किया गया।

3. 6 मार्च 2020 को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' का आयोजन 'स्वस्तिकवाचन' संस्था के संयुक्त तत्त्वाधान में किया गया। इस कार्यक्रम का विषय संस्कृत भाषा, संस्कृति तथा महिला अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति विद्यापीठ ने की। डॉ. अलका राय, कुलसचिव विद्यापीठ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थी। इस अवसर पर यू.एस. की सुश्री विलिन्दाबियर, प्रमाणित आयुर्वेद की चिकित्सक तथा यू. के. की संस्कृत प्रेमी सुश्री लूसी गेस्ट, अन्तर्राष्ट्रीय चन्द्रमौन चेरिटेबल ट्रस्ट की संस्थापिका को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विद्यापीठ के शिक्षक, शिक्षार्थी तथा कर्मचारी सभी उपस्थित हुए।

4. इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस को 'सप्ताह' के रूप में आयोजित किया गया। विद्यापीठ के विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों के लिए महिलाओं से सम्बन्धित तात्कालिक विषयों पर निबन्ध लेखन, स्वरचित कविता पाठ, चार्ट निर्माण तथा भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कर्मचारियों के लिए 'भावाभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कर्मचारियों ने नारी-योगदान, नारी-न्याय, नारी-समानता तथा नारी-सम्मान के प्रति अपने संवेगों एवं विचारों का प्रस्तुतीकरण कविता एवं भाषण के रूप में किया। विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों की उत्तम प्रस्तुतियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में सम्मानित किया गया।

5. 'सुमंगली: जेन्डर और भारतीय विरासत की शोध-पत्रिका' अंक VI (2018) मुद्रण की अन्तिम स्थिति में है और अंक VII (2019) अभी प्रकाशन की स्थिति में है।

6. विभिन्न हिन्दी एवं अंग्रेजी समाचार पत्रों में महिलाओं से सम्बन्धित समाचारों की कटिंग से तैयार डाक्यूमेन्ट अभी प्रकाशन की अन्तिम स्थिति में है।

२५. संगणक केन्द्र

संगणक केन्द्र विद्यापीठ के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा अन्य कर्मचारियों को संगणक संबंधी सुविधा प्रदान करता है। यह उनके शैक्षणिक क्रियाकलापों एंव शोध कार्य में सहायता करता है। यह केन्द्र विद्यापीठीय प्रांगण में स्थित विभागों, प्रशासनिक भवनों, छात्रावास, अतिथि आवास, इत्यादि में संगणक सम्बन्धी नेटवर्क एवं संगणक का प्रबंधन भी देखता है।

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी का बुनियादी ढाँचा-

1. शास्त्री, शिक्षाशास्त्री, आचार्य, विशिष्टाचार्य तथा विद्यावारिधि पाठ्यक्रम की कक्षाओं के छात्रों की सुविधा के लिए तीन वातानुकूलित कम्प्यूटर लैब हैं, जिसमें पाठ्यक्रम के अनुरूप छात्रों के सीखने के कौशल को बढ़ाने के लिए एवं नई चुनौतियों का सामना करने के लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षण उपकरण जैसे इंटरनेट सुविधा, LCDTV, मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर आदि उपलब्ध ह ।
2. इंटरनेट बैडविथ : संगणक केन्द्र में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के NKN परियोजना के तहत 10 जी. बो.पी.एस इंटरनेट लिंक के साथ इंटरनेट की सुविधा है। यह छात्रा के लिए अवसर, संकायों, शोधकत्ताओं और विभागों को विभिन्न स्रोतों से सभी प्रकार की जानकारी और डाउनलोड करने की सुविधा उपलब्ध कराता है।
3. संस्कृत, हिन्दी और अग्रेंजी त्रिभाषी वेबसाइट की व्यवस्था की गई है।
4. 550 विस्तर लाइनों के साथ EPABX की सुविधा है।
5. इस वर्ष विद्यापीठ के संगणक केन्द्र ने सर्वर, साफ्टवेयर तथा नेटवर्किंग उपकरणों जैसे विभिन्न पहलुओं में उन्नति की ह ।

संगणक केन्द्र द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाएँ :-

संगणक केन्द्र विद्यापीठ में कम्प्यूटिंग सुविधा, ई-मेल, वेबसाइट होस्टिंग, विकास एवं प्रबंधन की सुविधा प्रदान करता है । यह अपने मूल्यवान डेटा का विश्लेषण पाने के लिए शोधकर्ताओं की मदद करता है । इंटरनेट की सुविधा प्रदान करता है । वर्ल्ड वाइड वेब का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाता है तथा विद्यापीठ के छात्रों के लिए लैब की सुविधा प्रदान करता है । संगणक केन्द्र विद्यापीठ की निम्न आवश्यकताओं को पूर्ण करता है ।

1. विद्यापीठ में प्रिंटर तथा सर्वर कम्प्यूटर, लैपटाप, डेस्कटाप की खरीद, स्थापना और रखरखाव ।
2. विद्यापीठ के सभी सर्वर (सर्वर प्रबंधन) के रखरखाव ।
3. विद्यापीठ के सभी शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए, आवासीय कर्मचारियों, छात्रावास, गेस्टहाउस में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराना ।
4. संगणक केन्द्र में फायरवाल प्रणाली की व्यवस्था की गई है ताकि बाहरी हैकर्स से नेटवर्क की रक्षा की जा सके तथा नेटवर्क के भार को संतुलित किया जा सके ।
5. विद्यापीठ में कर्मचारियों की हार्डवेयर संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए दूरसंचार निवारण नेटवर्क की व्यवस्था की गई है ।
6. विद्यापीठ की कम्प्यूटर लब में नेटवर्क से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का प्रबंध किया गया है ।
7. विद्यापीठ में कार्य कर रहे इंजीनियर्स द्वारा सिस्टम और हार्डवेयर की मरम्मत का कार्य किया जाता है ।
8. मेल साफ्टवेयर की मदद से प्रशासन मेल सर्वर द्वारा विद्यापीठ के कर्मचारियों तथा छात्रों को कहीं से भी अपने ई-मेल खाते का उपयोग करने की सुविधा प्रदान की गई है ।
9. समय-समय पर विद्यापीठ के छात्रों एवं कर्मचारियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ।
10. साप्ताहिक आधार पर भंडारण/फाईल सर्वर के बैकअप/रिकवरी आदि की भी व्यवस्था की जाती है ।
11. संगणक केन्द्र विभागों और छात्रों को हार्डवेयर खरीदने की भी सलाह देता है ।

विद्यापीठ की आधिकारिक वेबसाइट का प्रबन्धन-सामान्य जानकारी के अलावा संगणक केन्द्र उपयोगकर्ताओं को निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान करता है:-

1. विद्यापीठ में संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी त्रिभाषी वेबसाइट ।
2. निविदाएँ और कैरियर, कोटेशन/निविदाओं और नौकरी पोस्टिंग प्रकाशन ।
3. विभिन्न प्रकार के परिपत्रों एवं सूचनाओं का प्रकाशन ।
4. ई-संसाधन-संकायों एवं छात्रों के शोधकार्य के लिए उपयोगी है ।
5. पूर्व छात्र पंजीकरण- विद्यापीठ के पूर्व छात्र वेबसाइट के माध्यम से खुद को पंजीकृत कर सकते हैं ।
6. प्रवेश जानकारी-विद्यापीठ की वेबसाइट पर दाखिले की प्रक्रिया पर पूरी जानकारी, प्रवेश परीक्षा, प्रास्पेक्टस जानकारी, आवेदन-पत्र एवं परीक्षा परिणाम आदि की जानकारी की सुविधा उपलब्ध कराता है ।

२६. जन-सूचना अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्राधिकृत अधिकारी

भारत सरकार के जन-सूचना अधिकार नियम को पूर्ण रूप से लागू करने हेतु विद्यापीठ में निम्नलिखित अधिकारियों को केन्द्रीय जनसूचना अधिकारी/केन्द्रीय सहायक सूचना अधिकारी के रूप नियुक्त किया गया है।

क्र. सं.	**नाम, पद एवं दूरभाष सं०**	**केन्द्रीय जनसूचना अधिकारी/केन्द्रीय सहायक सूचना अधिकारी**	**सूचना क्षेत्र**
1	डॉ. अलका राय वित्ताधिकारी एवं (कुलसचिव) प्रभारी 011-46060567	अपीलीय अधिकारी	जनसूचना अधिकार के अन्तर्गत समस्त सूचनाओं पर सर्वोच्च जनसूचना अधिकारी
2	श्री अजय कुमार टण्डन, उप-कुलसचिव (लेखा एवं विकास) 011-46060521	पारदर्शिता अधिकारी	सूचनाओं को वेबसाइट पर अपलोड करने के संबंध में पारदर्शिता
3	श्री बनवारी लाल वर्मा (सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर) 011-46060616	नोडल ऑफिसर एवं केन्द्रीय सहायक जन सूचना अधिकारी	जनसूचना अधिकार अधिनियम, 2005 के अंतर्गत दिए गए केन्द्रीय सहायक जनसूचना अधिकारी के कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारियाँ
4	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा वेद-वेदांग संकाय प्रमुख 011-46060643	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	वेद-वेदांग संकाय से सम्बन्धित सूचना

5	प्रो. हरेराम त्रिपाठी दर्शन संकाय प्रमुख 011-46060319	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	दर्शन संकाय से सम्बन्धित सूचना
6	प्रो. केदार प्रसाद परोहा आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख 011-46060527	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	आधुनिक विद्या संकाय से सम्बन्धित सूचना
7	प्रो. के. भारत भूषण संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र संकाय 011-46060636	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	शिक्षा शास्त्र संकाय से सम्बन्धित सूचना
8	प्रो. जय कुमार एन. उपाध्ये साहित्य एवं संस्कृति संकाय प्रमुख 011-46060518	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	साहित्य एवं संस्कृति संकाय से सम्बन्धित सूचना
9	पो. नीलम ठगेला छात्र कल्याण संकाय प्रमुख 011-46060621	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	छात्र कल्याण संकाय तथा व्याकरण विभाग से सम्बन्धित सूचना
10	प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी अध्यक्ष/संयोजक एवं विभागाध्यक्ष (योग) 011-46060641	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	योग विभाग से सम्बन्धित सूचना
11	प्रो. बिहारी लाल शर्मा निदेशक (आई.क्सू.ए.सी.) एवं कुलानुशासक 011-46060615	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	आई.क्यू.ए.सी. एवं कुलानुशासक से सम्बन्धित सूचना
12	प्रो. रचना वर्मा मोहन, मुख्य सतर्कता अधिकारी 011-46060622	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	सतर्कता मामलों से सम्बन्धित सूचना
13	प्रो. रजनी जोशी चौधरी निदेशक (महिला अध्ययन केन्द्र) 011-46060618	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	महिला अध्ययन केन्द्र, कैरियर काउंसिलिंग सैल तथा प्लेसमेंट सैल से सम्बन्धित सूचना
14	प्रो. शिवशंकर मिश्र प्रोफेसर 011-46060609	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	शोध एवं प्रकाशन विभाग से सम्बन्धित सूचना

15	प्रो. जगदेव कुमार शर्मा अध्यक्ष-हिन्दी राजभाषा 011-46060525	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	हिन्दी राजभाषा से सम्बन्धित सूचना
16	प्रो. अमिता पाण्डेय भारद्वाज अध्यक्ष- PMMMNMTT (TLC) 9811580640	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	पी.एम.एम.एम.एन.एम.टी.टी. प्रोजेक्ट से सम्बन्धित सूचना
17	डॉ. सुंदर नारायण झा होस्टल वार्डन (प्रभारी) 011-46060353	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	विद्यापीठ के छात्रों के होस्टल से सम्बन्धित सूचना
18	प्रो. (श्रीमती) मीनू कश्यप प्रोफेसर (अंग्रेजी) 011-46060540	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	एन.सी.सी. (छात्रा वर्ग) से सम्बन्धित सूचना
19	डॉ. अभिषेक तिवारी सहायक प्रोफेसर प्रमुख- एन.सी.सी. 9654039797	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	एन.सी.सी. (छात्र वर्ग) से सम्बन्धित सूचना
20	श्री मनोज कुमार मीणा सहायक प्रोफेसर-शारीरिक शिक्षा 011-46060528	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	क्रीडा/ शारीरिक शिक्षा, व्यायामशाला से सम्बन्धित सूचना
21	डॉ. कांता उप-कुलसचिव (परीक्षा) 011-46060520	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	परीक्षा विभाग से सम्बन्धित सूचना
22	श्री रमाकांत उपाध्याय कार्यपालक अभियंता 011-46060323	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	इंजीनियरिंग विभाग से सम्बन्धित सूचना
23	श्री राजेश कुमार पाण्डेय, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष 011-46060532	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	पुस्तकालय से सम्बन्धित सभी सूचना
24	श्रीमती सुषमा डेमला सहायक कुलसचिव (लेखा) 011-46060559	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	वित्त एवं लेखा विभाग से सम्बन्धित सभी सूचना

25	श्री सुच्चा सिंह सहायक कुलसचिव (शैक्षणिक) एवं अनुसूचित जाति / जनजाति प्रकोष्ठ 011-4606548	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	शैक्षणिक विभाग से सम्बन्धित सूचना, छात्रों से सम्बन्धित मामले एवं अनुसूचित जाति/ जनजाति से सम्बन्धित समस्त सूचना
26	श्री मंजीत सिंह, सहायक कुलसचिव (गैर-शैक्षणिक एवं चयन) 011-46060556	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	1. गैर-शैक्षणिक विभाग एवं जनसूचना अधिकार से सम्बन्धित सूचना 2. मंत्रालय/ यू.जी.सी. के पार्लियामेंट सवालों, कोर्ट केस तथा चयन से सम्बन्धित सूचना
27	श्री जय प्रकाश सिंह सहायक कुलसचिव (GAD) 011-46060646	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	जनरल प्रशासन स्टोर, सिक्योरिटी प्रबंध, जनसूचना अधिकार, चिकित्सकीय बिलों का भुगतान आदि से सम्बन्धित सूचना
28	श्री राजेश कुमार सहायक कुलसचिव (विकास एवं एस.सी./एस.टी. सैल)	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	विकास विभाग, एस.सी./एस.टी. सैल, विद्यापीठ के अतिथि निवास तथा हेल्थ केयर यूनिट से सम्बन्धित सूचना
29	श्रीमती भारती त्रिपाठी सहायक कुलसचिव (शैक्षणिक)		1. शैक्षणिक विभाग एवं जनसूचना अधिकार से सम्बन्धित सूचना 2. मंत्रालय/ यू.जी.सी. की पार्लियामेंट सवालों, कोर्ट केस तथा चयन से सम्बन्धित सूचना
30	श्री प्रमोद चतुर्वेदी निजी सचिव (कुलपति) 011-46060605	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	कुलपति कार्यालय से सम्बन्धित सूचना
31	श्री ज्ञान चंद शर्मा सहायक प्रोग्रामर 011-46060645	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी	संगणक केन्द्र से सम्बन्धित सूचना

२७. आधार, संरचना एवं भवन

(क) भूमि एवं भवन

विद्यापीठ परिसर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के दक्षिण दिल्ली जिला में कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र के प्लाट सं. बी-4 पर शहीद जीत सिंह मार्ग पर 10.65 एकड़ में स्थित है। इसके आस-पास विभिन्न शक्षणिक एवं शाध संस्थाएँ जैसे - भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., एन.यू.ई.पी.ए. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, आई.आई.एफ.टी. आदि हैं। इसके सामन उत्तर की ओर सड़क

के उस पार विश्वकर्मा भवन, आई.एस.टी.ई. आदि पूर्व में केन्द्रीय विद्यालय संगठन, केन्द्रीय जल आयोग आदि, दक्षिण में केन्द्रीय समाज कल्याण आई.एम.आई आदि तथा पश्चिम में संजय वन है। यह परिसर सुरम्य है। सभी शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक भवनों तक पहँचने के लिए उचित सड़क की व्यवस्था है। परिसर में कई वाटिकाएँ है- जैसे सारस्वत उद्यानम्, विश्रान्ति वाटिका, स्वर्ण जयन्ती पार्क आदि है। परिसर में 24 घंटे बिजली, पानी की सप्लाई सुनिश्चित करने हेतु विद्यापीठ में 11 किलो बोल्ट का अपना उच्च पारेषण विद्युत उपगृह, पर्याप्त जनरटर सेट्स, ट्यूबवेलस, मल-जल-शोधन संयंत्र आदि हैं। परिसर में पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था हेतु हाई मास्ट लाइटिंग सिस्टम लगे हुए हैं।

विद्यापीठ में कुल चार शैक्षणिक (गैर-आवासीय) भवन है। इनका विवरण निम्न प्रकार है:-

1. शैक्षणिक सदन :- यह सबसे पुराना दो मंजिला भवन है, जो कुल 3431.81 वर्गमीटर में बना हुआ है, जिसमें शैक्षणिक, शोध एवं पुस्तकालय आदि समाविष्ट हैं। इस भवन में दर्शन तथा साहित्य एवं संस्कृति संकाय के सभी विभाग हैं। इसी भवन में एक अत्याधुनिक ज़िम भी है।
2. सारस्वत साधना सदन :- यह पाँच मंजिला भवन (भूतल+3+तहखाना) है, जो 4000.26 वर्गमीटर में बना है। इस भवन में 1 लिफ्ट लगा है। इस भवन में कुलपति कार्यालय, परीक्षा विभाग, संगणक केन्द्र, महिला अध्ययन केन्द्र, सम्मेलन कक्ष, समिति कक्ष, संकाय कार्यालय, मुख्य सर्तकता-अधिकारी आदि के कार्यालय हैं।
3. बृहस्पति भवन :- यह एक दो मंजिला भवन है, जो 410.40 वर्गमीटर में बना है। इसमें वेद और पौरोहित्य विभाग है। इसमें कर्मकाण्ड प्रयोगशाला भी है। इस वर्ष यज्ञशाला में कई यज्ञानुष्ठानों का आयोजन किया गया।
4. स्वर्ण जयन्ती सदन :- यह पाँच मंजिला भवन (भूतल+3+तहखाना) है, जो 6283 वर्गमीटर में बना है। इस भवन में 3 लिफ्ट एवं 4 सीढ़ियाँ हैं। यह भवन हरित भवन के मानकों के अनुसार बनाया गया है। इस भवन में प्रशासनिक कार्यालय, वित्त विभाग, शैक्षणिक विभाग, विकास विभाग, ज्योतिष विभाग, वास्तु विभाग, व्याकरण विभाग, धर्मशास्त्र विभाग, शिक्षाशास्त्र विभाग, सांख्यिकी केन्द्र, समिति कक्ष, संकाय कार्यालय, प्रॉक्टर कार्यालय, कुलसचिव, वित्त अधिकारी आदि के कार्यालय हैं।

बृहस्पति भवन को छोड़कर अन्य सभी शैक्षणिक भवन अन्दर ही अन्दर एक दूसरे से जुड़े हैं। इन सभी भवनों में रेन वाटर हारवेस्टिंग की व्यवस्था है।

(ख) आवासीय भवन

विद्यापीठ परिसर में शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के लिये कुल 48 आवास हैं, जिनमें टाइप -V के 7 आवास, टाइप-IV के 8 आवास, टाइप -III के 8 आवास, टाइप -II के 8 आवास, टाइप-I के 16 आवास तथा एक कुलपति आवास है।

(ग) अतिथि निवास (विश्रान्ति निलय)

विद्यापीठ के अतिथि निवास में 8 डबल बेड वाले कक्ष, 2 वी.आई.पी. कक्ष, 1 कार्यालय कक्ष एवं एक भव्य डाइनिंग कक्ष है। यह अतिथि निवास शैक्षणिक और शोधकार्यों, शैक्षणिक प्रशासन में लगे हुए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों एवं सस्दयों द्वारा उपयोग के लिए है।

(घ) छात्रावास

विद्यापीठ में 50 कक्षां का 99 छात्रों के निवास के लिए चार मंजिला छात्रावास भवन है। इसमें 16 एक स्थानीय कक्ष, 18 द्विस्थानीय कक्ष और 17 त्रिस्थानीय कक्ष हैं। छात्रावास में आधुनिक सुविधाएं जैसे:- स्थानीय दूरभाष, मनोरंजन कक्ष, भोजनालय कक्ष जलपान कक्ष एवं पाकशाला भी है।

वर्ष 2019-2020 में विद्यापीठीय छात्रावास में डॉ. सुन्दर नारायण झा, प्रभारी अधिष्ठाता के रूप में कार्यरत हैं। छात्रावास अधिष्ठाता एवं छात्रावास समिति के सहयोग से छात्रावास संचालन, प्रबन्ध एवं रख-रखाव के कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न किए जाते हैं। शैक्षणिक सत्र 2019-2020 में निम्नलिखित विवरण के अनुसार छात्रावास आबंटन किया गया था। अनुसूचित जाति-05 ।

अनुसूचित जन-जाति-04, अन्य पिछड़ा वर्ग-10, दिव्यांग 01, सामान्य-77, आर्थिक कमजोर वर्ग-02 ।

(ङ) पुस्तकालय

महामहोपाध्याय पद्मश्री डॉ मंडन मिश्र ग्रंथालय विद्यापीठ की शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों में सतत रूप से सहभागी एवं सक्रिय रहा है। यह ग्रंथालय अपने पारंपरिक एवं आधुनिक संग्रहों के लिए विख्यात है। संस्कृत वाङ्मय के विविध आयामों का संग्रह इस ग्रंथालय की विशेषता है। वेद, पुराण, उपनिषद्, धर्मशास्त्र, योग, ज्योतिष, व्याकरण, वास्तु, साहित्य, दर्शन, पौरोहित्य, आयुर्वेद, आदि का श्रेष्ठ संग्रह इसे अतिविशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है। शिक्षा, दर्शन, मनोविज्ञान, हिंदी, अंग्रेजी, तथा अन्य समकालीन साहित्यकारों की रचनाओं का संग्रह इसे ज्ञानभंडार की श्रेणी में ला खड़ा करता है। विभिन्न विषयों से सम्बंधित एक लाख से अधिक ग्रन्थ ग्रंथालय में उपलब्ध हं।

विद्यापीठ पुस्तकालय न केवल विद्यापीठ सदस्यों वरन् वैसे सभी संस्कृत स्नेही जनों को पुस्तकालय की सदयस्ता प्रदान करता है जो इस क्षेत्र में अध्ययन एवं शोध करना चाहते हैं। इस प्रकार यह पुस्तकालय संस्कृत के अध्ययन एवं प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

2018-19 में ग्रंथालय में पर्याप्त संख्या में शोध एवं समसामयिक पत्र-पत्रिकाएं एवं लगभग सभी प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्र हिंदी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में पाठकों के लिए उपलब्ध कराए गए। ई-शोधसिंधु योजना के अंतर्गत ग्रंथालय में अनेक ई-संसाधनों जैसे ई-जर्नल्स, ई-बुक्स,एवं ई-डेटाबेस की सुविधा भी पाठकों को उपलब्ध कराई गई एवं सभी का लिंक विद्यापीठ के वेबसाइट पर उपलब्ध भी करा दिया गया। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी के अधिकतम उपयोग के लिए विद्यापीठ के सभी अध्यापकों, छात्रों एवं अन्य कर्मचारियों को व्यक्तिगत रूप से उनके ई-मेल एवं मोबाइल पर उसके पंजीकरण सम्बंधित निवेदन प्रेषित किया गया। इस विषय पर अध्यापकों, छात्रों एवं अन्य कर्मचारियों को सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष द्वारा संबोधित भी किया गया जिससे ई-संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो सके।

विद्यापीठ एवं इनफ्लिबनेट के मध्य 2013-14 में हुए समझौते के बाद लगातार शोध-प्रबन्धों के डिजिटलीकरण का कार्य तीव्र गति से चल रहा है तथा 2018-19 में 450+ से अधिक शोध-प्रबन्धों के डिजिटलीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया है तथा इसे शोध-गंगा प्लेटफार्म पर उपलब्ध करा दिया गया है। इसके अतिरिक्त शोध-प्रबंधों एवं लघु शोध प्रबंधों का एक Institutional Repository भी कंप्यूटर केन्द्र में बनाया गया है। विद्यापीठ पुस्तकालय का प्रथम तल सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ पाठकों के अध्ययन एवं संदर्भ हेतु उपलब्ध करा दिया गया है। विद्यापीठ प.स्तकालय में आधुनिक सेवाओं हेतु प्रोप्रिएटी

सॉफ्टवेर का उपयोग किया जाता है तथा पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों को इसके संचालन से सम्बंधित प्रशिक्षण भी दिया गया है। पुस्तकालय की गतिविधियों को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में पुस्तकालय समिति तथा पुस्तकालय कर्मचारियों की टोम, एक सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष, चार प्रोफेशनल सहायक, तीन सेमी-प्रोफेशनल सहायक, तीन पुस्तकालय सहायक तथा पांच पुस्तकालय परिचर लगातार कार्यशोल हैं। वर्ष 2019-20 में एक प्रोफेशनल सहायक तथा दो पुस्तकालय परिचरों की नियुक्ति हुई है।

संबंधित वर्ष में पुस्तकालय प्रबंध सॉफ्टवेयर का नया संस्करण "Libsys-10" को पुस्तकालय परिचालन हेतु स्थापित किया गया है।

2019-20 में सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष ने कई राष्ट्रोय एवं अंतर्राष्ट्रोय सम्मेलनों में न केवल सहभागिता की वरन विविध विषयों पर अपना आलेख भी प्रस्तुत किया।

(च) पाण्डुलिपि संग्रहालय

विद्यापीठ में पाण्डुलिपि संग्रहालय है, जिसमें विभिन्न विषयों से सम्बन्धित 1697 पाण्डुलिपियाँ हैं । ये पाण्डुलिपियाँ संस्कृत साहित्य की विभिन्न शाखाओं- वेद, उपनिषद्, पुराण, ज्योतिष, व्याकरण, वेदान्त, सांख्ययोग, न्याय, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, साहित्य, संगीत, एवं आयुर्वेद आदि से सम्बन्धित हैं। देवनागरी लिपि की पाण्डुलिपियों का सूचीसंग्रह 'विशदपाण्डुग्रन्थसूची भाग-1' प्रकाशित किया गया है ।

(छ) वराह मिहिर वेधशाला

विद्यापीठ में ज्योतिष विभाग के छात्रों को ज्योतिष प्रायोगिक ज्ञान क लिए विद्यापीठ परिसर में ज्योतिष वेधशाला है। इसका निर्माण जन्तर-मन्तर जयपुर की वेधशाला के पूर्व अध्यक्ष राष्ट्रपति सम्मानित म.म. स्वर्गीय पं. कल्याणदत्त शर्मा ने किया है। इस वेधशाला में निर्मित कर्कवलय, तुलावलय एवं मकरवलय से ग्रहों के भोगांशों का ज्ञान, भित्तियन्त्र तथा चक्रयन्त्र से क्रान्ति का ज्ञान, नाडीवलय यन्त्र से स्थानीय काल का ज्ञान, सम्राट यन्त्र से ग्रहों के याम्योत्तरलंघनकाल, स्थानीय काल एवं मानककाल तथा भारतीय तारामण्डल से नतांश, अक्षांश क्रान्त्यंश आदि विभिन्न मानकों का ज्ञान दिया जाता है।

(ज) यज्ञशाला

विद्यापीठ में एक यज्ञशाला है, जिसमें राजधानी के याजकों के लिए डिप्लोमा एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष यज्ञशाला में कई यज्ञानुष्ठानों का आयोजन किया गया। यह बृहस्पति भवन में स्थापित है।

(झ) सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (मलशोधन संयंत्र)

विद्यापीठ में एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लाण्ट (120 कि.ली. प्रतिदिन की क्षमता का) को 2006-07 में लगवाया गया। यह प्लांट थर्मेक्स के चैनल पार्टनर मेसर्स इकोथर्म इन्जीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लगवाया गया ताकि रसोईघर, स्नानगृह आदि के अपशिष्ट जल को पुनः प्रयोग में लाया जा सके और बागवानी मं प्रयोग किया जा सके। विद्यापीठ शत-प्रतिशत शुद्ध किए गए अपशिष्ट जल का प्रयोग पार्क एवं बागवानी के लिए

(वर्षाऋतु के कुछ दिनों को छोड़कर) तथा गैर-आवासीय भवनों के शौचालयों में फ्लश के लिए उपयोग करता है। वर्षा के दिनों में शुद्ध किया गया जल नजदीकी वर्षा जल संचयन गड्ढों में बोर्स के द्वारा भूमि के अन्दर भेज दिया जाता है। इस मलशोधन संयंत्र से निकले हुए ठोस अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग बागवानी में खाद के रूप में किया जाता है। इस प्रकार विद्यापीठ वर्ष भर शुद्ध किए गए जल का प्रयोग बागवानी आदि के लिए करता है। इस प्लाण्ट का रख-रखाव वर्ष भर उसी एजेंसी के द्वारा किया जाता है जिससे यह लगवाया गया है।

(ञ) विद्यापीठ में वर्षा-जल संचयन

विद्यापीठ ने वर्ष 2004-2005 में केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार के वरिष्ठ वैज्ञानिक के मार्गदर्शन में विद्यापीठ परिसर के वर्षा जल-संचयन की समुचित व्यवस्था हेतु कुल पाँच स्थानों पर 13 गडढें (बोर्स) तैयार कराए। विद्यापीठ के सभी आवासीय एवं गैर -आवासीय भवनों की छतों से बरसात के जल को पाइपों क माधयम से ज़मीन पर लाते हं तत्पश्चात इसे नजदीकी जल संचयन गडढों में पहुँचाने की व्यवस्था की गयो है। इस प्रकार 100% जल भूमि के नीचे चला जाता है, जो भूमिगत जलस्तर को ऊपर उठाने में मदद करता है।

विद्यापीठ में कुल 2951 वर्गमीटर में बना हुआ है, जिसमें शैक्षणिक, शोध, पुस्तकालय एवं प्राशासनिक भवन आदि समाविष्ट हैं। आवासीय भवन कुल 6036.55 वर्गमीटर में अवस्थित है, जिसमें चार मंजिला छात्रावास भवन 2068.43 वर्गमीटर में टाइप V के आवास 1167 वर्गमीटर में टाइप IV के आवास 996. 28 वर्गमीटर में, टाइप III के आवास 541.28 वर्गमीटर में तथा टाइप II एवं टाइप I के आवास क्रमशः 452 तथा 811.56 वर्गमीटर में बने हुए हैं। शैक्षणिक खण्ड (सारस्वतसाधनासदनम्) में कुलपति कार्यालय, शिक्षाशास्त्र विभाग, संगणक केन्द्र, महिला अध्ययन केन्द्र, सम्मेलन कक्ष, समिति कक्ष, संकाय कार्यालय, मुख्य सर्तकता अधिकारी आदि कार्यालय हैं। इसके अतिरिक्त स्वर्ण जयन्ती सदन 6283 वर्गमीटर में बनकर तैयार है, जिसका उद्घाटन कन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री पल्लम राजू जी के कर कमलों द्वारा दिनांक 22.02.2013 को किया गया। दो मंजिला बृहस्पति भवन भी 410.40 वर्गमीटर में है, जिसमें कुल 09 कक्ष हैं। इसमें पौरोहित्य एवं वेद विभाग अवस्थित हैं।

(ट) रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट

151.27 KWp के रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट को भारत सरकार के सौर ऊर्जा निगम के माध्यम से नवीन और नवीनीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की मैसर्स एज्योर पावर रूफ टॉप एक प्राईवेट लिमिटेड एजेंसी द्वारा RESCO मोड में विद्यापीठ की मौजूदा भवनों की छत के शीर्ष पर स्थापित किया गया है।

(ठ) आधार, संरचना एवं भवन

CPWD ने अपने पी.ए. अनुमानों को संशोधित किया है। HEFA मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा स्वीकृत अनुमोदित राशि के आधार पर है। विश्वविद्यालय ने फिर से अपना संशोधित प्रस्ताव CPWD द्वारा मंत्रालय को प्रस्तुत किया। तदनुसार विश्वविद्यालय ने सभी प्रस्तावित भवनों के लिए अपने अनुमानों को पुनः प्राप्त करने के लिए CPWD से संपर्क किया।

CPWD ने निम्नलिखित तीन निर्माण परियोजनाओं के लिए संशोधित अनुमान प्रस्तुत किए हैं जो वास्तुशिल्प के अनुमोदन के आधार पर हैं:-

1.	लड़कों के छात्रावास के निर्माण के लिए	-	56,88,12,600/- रू0
2.	लड़कियों के हॉस्टल के निर्माण के लिए	-	35,40,52,200/- रू0
3.	शिक्षा सदन के निर्माण के लिए	-	162,33,10,000/- रू0

इन अनुमानों को विश्वविद्यालय के BoM/EC द्वारा अनुमोदित किया गया है। प्रस्ताव को मानव संसाधन विकास मंत्रालय को विचारार्थ एवं अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

(ङ) परिसर की सुरक्षा

कुलानुशासक प्रो. बिहारी लाल शर्मा के निर्देशन में विश्वविद्यालय परिसर की सुरक्षा-व्यवस्था का सञ्चालन किया जाता है। इस व्यवस्था को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने के लिए दिल्ली स्थित पंजीकृत सुरक्षा-संस्थानों के सुरक्षा गार्डों का उपयोग किया जाता है । सुरक्षा कर्मियों की कार्य-शैली का आकस्मिक निरीक्षण एवं सन्तोषजनक कार्य का निर्धारण कुलानुशासक द्वारा किया जाता है ।

२८. परिषदें, समितियाँ तथा विद्यापीठीय कर्मचारी

१. शैक्षणिक परिषद क सदस्यों की सूची

क्रम संख्या	नाम एवं पता	पदनाम
1	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	अध्यक्ष
2	**सभी संकाय प्रमुख** प्रो. के. भारत भूषण संकाय प्रमुख, शिक्षाशास्त्र संकाय प्रो. प्रेम कुमार शर्मा संकाय प्रमुख, वेद-वेदांग संकाय प्रो. हरेराम त्रिपाठी संकाय प्रमुख, दर्शन संकाय प्रो. जय कुमार एन. उपाध्ये संकाय प्रमुख, सहित्य एवं संस्कृति संकाय प्रो. केदार प्रसाद परोहा संकाय प्रमुख, आधुनिक विद्यासंकाय	

3	**सभी विभागाध्यक्ष** **प्रो. के. भारत भूषण** शिक्षाशास्त्र विभाग **प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा** व्याकरण विभाग **प्रो. भागीरथि नंद** साहित्य विभाग **प्रो. हरेराम त्रिपाठी** अद्वैत वेदान्त एवं मीमांसा विभाग **जय कुमार एन. उपाध्ये** प्राकृत विभाग **प्रो. विनोद कुमार शर्मा** ज्योतिष विभाग **प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा** वेद विभाग **प्रो. रामराज उपाध्याय** पौरोहित्य विभाग **प्रो. के. अनन्ता** विशिष्टाद्वैत वेदांत विभाग **प्रो. यशवीर सिंह** धर्मशास्त्र विभाग	सदस्य
4	**सभी प्रोफेसर** प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय प्रो. नागेन्द्र झा प्रो. प्रेम कुमार शर्मा प्रो. हरिहर त्रिवेदी प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी प्रो. कमला भारद्वाज प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा प्रो. शुकदेव भोइ प्रो. सुदीप कुमार जैन प्रो. जय कुमार एन. उपाध्ये प्रो. वीर सागर जैन प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी प्रो. हरेराम त्रिपाठी प्रो. केदार प्रसाद परोहा प्रो. रमेश प्रसाद पाठक प्रो. भागीरथि नन्द प्रो. रामराज उपाध्याय	सदस्य

	प्रो. अनेकान्त जैन प्रो. के. अनन्ता प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा प्रो. यशवीर सिंह प्रो. नीलम ठगेला प्रो. संगीता खन्ना प्रो. शीतला प्रसाद शुक्ल प्रो. के. भारतभूषण प्रो. रचना वर्मा मोहन प्रो. रजनी जोशी चौधरी प्रो. वृन्दावन दाश प्रो. कुसुम यदुलाल प्रो. विमलश शर्मा प्रो. एम. जयकृष्णनन् प्रो. प्रभाकर प्रसाद प्रो. कल्पना जैन प्रो. जगदेव शर्मा प्रो. सुधान्शु भूषण पंडा प्रो. सदन सिंह प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा प्रो. बिष्णुपद महापात्र प्रो. सविता प्रो. महानंद झा प्रो. परमानन्द भारद्वाज प्रो. अमिता पाण्डेय भारद्वाज	
5	विभागाध्यक्षों के अतिरिक्त वरिष्ठता के आधार पर रोटेशन के द्वारा विभागों से लिए गए दो एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मीनू कश्यप एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुशील कुमार एसोसिएट प्रोफेसर	सदस्य
6	वरिष्ठता के आधार पर रोटेशन के द्वारा विभागों से लिए गए दो असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. ए.एस. अरावमुदन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. दयाल सिंह असिस्टेंट प्रोफेसर	सदस्य
7	कुलपति द्वारा मनोनित ऐसे तीन शिक्षाविद जो विद्यापीठ की सेवाओं के अतिरिक्त किसी अन्य क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त हों प्रो. रामाकान्त पाण्डेय प्रो. रामनाथ झा प्रो. शिव वरण शुक्ल	सदस्य

8	तीन अन्य व्यक्ति जो कि शैक्षणिक कर्मचारी नहीं हैं एवं शैक्षणिक परिषद् द्वारा अपने ज्ञान के लिए विशेषज्ञ हैं 1. डॉ. साहू अखिलेश जैन 2. डॉ. सुभाष चन्द्र 3. श्री अनिल कुमार गुप्ता	सदस्य
9	डॉ. अलका राय कुलसचिव (प्रभारी), श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सचिव

२. योजना एवं मॉनिटरिंग बोर्ड के सदस्यों की सूची

क्रम संख्या	नाम एवं पता	पदनाम
1	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	अध्यक्ष
2	प्रो. के. भारत भूषण संकाय प्रमुख, शिक्षाशास्त्र संकाय	सदस्य
3	प्रो. हरेराम त्रिपाठी संकाय प्रमुख, दर्शन संकाय	सदस्य
4	प्रो. जय कुमार एन. उपाध्ये संकाय प्रमुख, साहित्य एवं संस्कृति संकाय	सदस्य
5	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा संकाय प्रमुख, वेद-वेदांग संकाय	सदस्य
6	प्रो. कमला भारद्वाज संकाय प्रमुख (छात्रकल्याण)	सदस्य
7	प्रो. केदार प्रसाद परोहा संकाय प्रमुख, आधुनिक विद्या संकाय	सदस्य
8	डॉ. चाँद किरण सलूजा, निर्देशक संस्कृत प्रमोशन फाउडेशन विद्या भवनम्, डोरीवालान, दिल्ली	सदस्य
9	प्रो. वी.एन. झा, पूर्व निदेशक, सी.ए.एस.एस., पूना विश्वविद्यालय, पूना	सदस्य
10	प्रो. कृष्ण कांत शर्मा, पूर्व-प्रोफेसर, वैदिक दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005	सदस्य
11	डॉ. अलका राय वित्ताधिकारी एवं कुलसचिव (प्रभारी) श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016	सदस्य सचिव

३. समितियाँ

(क) वित्त समिति

क्रम संख्या	नाम एवं पता	पदनाम
1.	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली-110016	अध्यक्ष
2.	श्री संजय कुमार सिन्हा संयुक्त सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 230-सी, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001	सदस्य
3.	श्रीमती दर्शना एम. डबराल संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (आई.एफ.बी.), उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 120-सी, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001	सदस्य
4.	श्री नवीन सोइ पूर्व निदेशक (वित्त), उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, वाई-34, हौज खास, नई दिल्ली-16	सदस्य
5.	डॉ. डी.पी.एस. वर्मा पूर्व प्रोफेसर (कॉमर्स) दिल्ली स्कूल (इकोनोमिक्स), दिल्ली विश्वविद्यालय, 285-बी, चित्रकूट, QU-ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली-110034	सदस्य
6.	डॉ. अलका राय वित्ताधिकारी श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-16	सचिव

विद्यापीठ के अधिकारी

1.	कुलाधिपति	डॉ. हरि गौतम
2.	कुलपति	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
3.	शिक्षा शास्त्र संकाय प्रमुख	प्रो. के भारत भूषण
4.	वेद-वेदांग-संकाय प्रमुख	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा
5.	दर्शन संकाय प्रमुख	प्रो. हरेराम त्रिपाठी
6.	साहित्य एवं संस्कृति संकाय प्रमुख,	प्रो. जय कुमार एन.उपाध्ये
7.	छात्र कल्याण अधिष्ठाता	प्रो. कमला भारद्वाज
8.	आधुनिक विद्या संकाय प्रमुख	प्रो. केदार प्रसाद परोहा
9.	शैक्षणिक संकाय प्रमुख	प्रो. भागीरथि नंद
10.	कुलसचिव	डॉ. अलका राय (कार्यवाहक)
11.	वित्ताधिकारी	डॉ. अलका राय
12.	परीक्षा नियंत्रक	डॉ. एन.पी.सिंह
13.	कुलानुशासक	प्रो. बिहारी लाल शर्मा
14.	निदेशक, आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ	प्रो. बिहारी लाल शर्मा

कार्यालयीय अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग

कुलपति कार्यालय

1) श्री पी. मरीयप्पन	-	सहायक कुलसचिव (on Lien)
2) श्री प्रमोद चतुर्वेदी	-	निजी सचिव (कुलपति)
3) श्री अमरजीत सिंह	-	स्टाफ कार चालक
4) श्री नीतेश	-	कनिष्ठ लिपिक
5) श्री मथुरा प्रसाद	-	एम. टी. एस.
6) श्री राजकुमार	-	एम. टी. एस.
7) श्री विरेन्द्र कुमार	-	एम. टी. एस.
8) श्री नवल सिंह	-	एम. टी. एस.

कुलसचिव कार्यालय

1) श्री दिनेश	-	निजी सचिव
2) कु. नेहा गुसाई	-	आशुलिपिक
3) श्री श्रवण कुमार	-	स्टाफ कार चालक
4) श्री दिनेश चन्द्र	-	एम. टी. एस.

प्रशासनिक अनुभाग (स्थापना-शैक्षणिक)

1) श्रीमती भारती त्रिपाठी	-	सहायक कुलसचिव
2) श्रीमती वन्दना	-	अनुभाग अधिकारी
3) श्री अशोक कुमार	-	सहायक
4) श्रीमती ऋचा भसीन	-	कनिष्ठ लिपिक
5) श्री नितिन नागर	-	पाचक
6) श्री भीम कुमार	-	एम. टी. एस.

प्रशासनिक अनुभाग (स्थापना-गैर-शैक्षणिक)

1) श्री मंजीत सिंह - सहायक कुलसचिव
2) श्रीमती सावित्री कुमारी - अनुभाग अधिकारी
3) श्रीमती प्रीति यादव - सहायक
4) श्री रजनीश कुमार राय - वरिष्ठ लिपिक
5) श्री वैभव खन्ना - कनिष्ठ लिपिक
6) श्री लोकेश कुमार - कनिष्ठ लिपिक

प्रशासनिक अनुभाग (सामान्य)

1) श्री जे.पी.सिंह - सहायक कुलसचिव
2) श्री राजकुमार - अनुभाग अधिकारी
3) श्री मनीष लोहानी - सहायक
4) श्री श्रीनाथ के. नायर - कनिष्ठ लिपिक
5) श्री उपराप्पली कुमार स्वामी - चिकित्सा परिचर
6) श्री रोहित वशिष्ठ - एम. टी. एस.

शैक्षणिक अनुभाग

1) श्री सुच्चा सिंह - सहायक कुलसचिव
2) श्री धर्मेन्द्र - सहायक
3) श्री महेन्द्र सिंह - वरिष्ठ लिपिक
4) श्रीमती प्रतिभा यादव - वरिष्ठ लिपिक
5) श्री मनीष अरोड़ा - कनिष्ठ लिपिक
6) श्री शम्भु दत्त - पाचक
7) श्री रमेश गहलात - एम. टी. एस.
8) श्री सुन्दर पाल - एम. टी. एस.
9) श्री गंगाधर मुदली - एम. टी. एस.
10) श्री मुनीश चन्द बडोला - एम. टी. एस.
11) श्री गिरीश चन्द्र पन्त - एम. टी. एस.

वित्त विभाग एवं लेखा विभाग

1) डॉ. अलका राय - वित्ताधिकारी
2) श्री अजय कुमार टण्डन - उप-कुलसचिव
3) श्रीमती सुषमा - सहायक कुलसचिव
4) श्री राकेश कुमार काण्डपाल - अनुभाग अधिकारी
5) श्री ओम प्रकाश कौशिक - सहायक
6) श्री महेश - सहायक
7) श्री संजीव सिंह चौहान - वरिष्ठ लिपिक
8) श्री रमेश कुमार - कनिष्ठ लिपिक
9) श्रीमती दीपिका राणा - कनिष्ठ लिपिक
10) श्री अजय कुमार - कनिष्ठ लिपिक
11) श्री दयाचन्द - एम. टी. एस.

विकास-अनुभाग

1) श्री अजय कुमार टण्डन - उप-कुलसचिव
2) श्री राजेश कुमार - सहायक कुलसचिव
3) श्री राकेश काण्डपाल - अनुभाग अधिकारी
4) श्रीमती ललिता कुमारो - सहायक
5) श्री राम मिलन - एम. टी. एस.

परीक्षा-विभाग

1) डा. एन.पी. सिंह - परीक्षा नियंत्रक
2) डॉ. कान्ता - उप-कुलसचिव
3) श्रीमती रजनी संजोत्रा - अनुभाग अधिकारी
4) श्रीमती हिमानी शदानी - निजी सचिव
5) श्रीमती रानी पंवार - सहायक
6) श्रीमती प्रीति त्यागी - वरिष्ठ लिपिक
7) श्रीमतो रूचिका भटनागर - वरिष्ठ लिपिक
8) श्री रामकुमार - कनिष्ठ लिपिक
9) श्री मनीष जैरथ - कनिष्ठ लिपिक
10) श्री पिंटू बनर्जी - एम. टी. एस.
11) श्री पंकज - एम.टी.एस.
12) श्री करूणेश राव - एम.टी.एस.

पुस्तकालय

1) श्री राजेश कुमार पाण्डेय - सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
2) श्रीमती उमा नौटियाल - प्रोफेशनल सहायक
3) श्रीमती अनिता जोशी - प्रोफेशनल सहायक
4) डॉ. नवीन राजपूत - प्रोफेशनल सहायक
5) श्री जयकृष्ण कमिला - प्रोफेशनल सहायक
6) श्रीमती भावना - सेमी प्रोफेशनल सहायक
7) श्री सुनील कुमार मिश्र - सेमी प्रोफेशनल सहायक
8) श्री शशिभूषण शुक्ला - सेमी प्रोफेशनल सहायक
9) श्रो बलराम सिंह - पुस्तकालय सहायक
10) श्री पदम चन्द्र सैनी - पुस्तकालय सहायक
11) श्रीमती सौम्या राय - पुस्तकालय सहायक
12) श्री राजेन्द्र सिंह - पुस्तकालय परिचर
13) श्री सुनील कुमार - पुस्तकालय परिचर
14) श्री जंगापल्ली महेन्द्र - पुस्तकालय परिचर
15) श्री हिमांशु कुमार - पुस्तकालय परिचर
16) श्री सोनू - पुस्तकालय परिचर

अभियान्त्रिकी अनुभाग

1) श्री रमाकान्त उपाध्याय - कार्यपालक अभियन्ता
2) श्री अंजनी कुमार - सहायक अभियन्ता
3) श्री नरेन्द्र पाल - कनिष्ठ अभियन्ता (विद्युत)
4) श्रीमती संध्या सिंह - कनिष्ठ अभियन्ता (सिविल)
5) श्री बिजेन्द्र सिंह राणा - पम्प आपरेटर
6) श्री चन्द्रभूषण तिवारी - इलैक्ट्रिशियन
7) श्री अंशुमन घुर्नियाल - कनिष्ठ लिपिक
8) श्री राहुल राय - कनिष्ठ लिपिक
9) श्री ओमकेश्वर तिवारी - कनिष्ठ लिपिक
10) श्री दया शंकर तिवारी - एम. टी. एस.
11) श्री धीरज सिंह - एम. टी. एस.
12) श्री संतोष कुमार पाण्डेय - एम. टी. एस.
13) श्री दीपक - एम. टी. एस
14) श्री नरेश - सफाई कर्मचारी
15) श्री सतीश - सफाई कर्मचारी
16) श्री नवीन मच्छल - सफाई कर्मचारी

संगणक केन्द्र

1) श्री बनवारी लाल वर्मा - सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर
2) श्री ज्ञानचंद शर्मा - असिस्टेंट प्रोग्रामर
3) श्री ईश्वर सिंह विष्ट - तकनोकी सहायक
4) श्री सचिन कुमार राय - तकनीकी सहायक
5) श्री कुलदीप सिंह - लैब अटेंडेंट
6) श्री सौभाग्य किरणेन्द्र - प्रयोगशाला परिचर

शोध एवं प्रकाशन विभाग

1) डॉ. ज्ञानधर पाठक - शोध सहायक
2) डॉ. जीवन कुमार भटट्राई - प्रूफ रीडर
3) श्री रमेश चन्द्र मीणा - एम. टी. एस.

शिक्षा संकाय कार्यालय

1) श्रीमती भारती त्रिपाठी - सहायक कुलसचिव
2) श्री सुरेन्द्र नागर - तकनीकी सहायक
3) श्री सुदामा राम - सहायक
4) श्रीमती ललिता यादव - वरिष्ठ लिपिक
5) श्री विजय रंजन पाण्डेय - प्रयोगशाला परिचर (मनोविज्ञान प्रयोगशाला)
6) श्री राहुल - एम. टी. एस.

महिला अध्ययन केन्द्र

1. डॉ. रजनी जोशी चौधरी	-	निदेशक (प्रभारी) एवं प्रोफसर
2. कुमारी तरुणा अवस्थी	-	शोध सहायक
3. श्री नरेन्द्र महतो	-	एम. टी. एस.

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ

1) श्री राजेश कुमार	-	सहायक कुलसचिव
2) श्री बिपिन कुमार त्रिपाठी	-	शोध एवं सांख्यिकी अधिकारी
3) श्री मनीष अरोड़ा	-	कनिष्ठ लिपिक

छात्रावास

1) श्री तिलक राज	-	सहायक

अतिथिगृह

1) श्री धमेन्द्र	-	सहायक
2) श्री बिनोद कुमार नाथ	-	एम. टी. एस.
3) श्री कंगन नाथ	-	एम. टी. एस.
4) श्री अमित कुमार	-	एम. टी. एस.